04.

रीतिकाल

1. **निम्नलिखित पंक्ति किस रचनाकार की है?**
''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन''
(a) चिंतामणि (b) केशवदास
(c) पद्माकर (d) देव

UPPSC GDC 2021
UK PSC Lecturer 2020
RPSC Assit. Prof. 2020 (Paper-II)
UP PGT 2011, 2013

Ans. (d) : ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस-विरस, उलटी कहत नवीन।।''
उपर्युक्त पंक्ति के रचनाकार रीतिकालीन कवि देव हैं। देव रीतिकालीन रीतिबद्ध कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- भावविलास, भवानीविलास, कुशल विलास, देवचरित, प्रेमचन्द्रिका, जातिविलास, रस विलास आदि।

2. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल का आरम्भ किस कवि से माना है?**
(a) केशवदास (b) बिहारीलाल
(c) चिन्तामणि त्रिपाठी (d) मतिराम

UPPSC GDC 2021
UK PSC Lecturer 2020
UPPSC Degree Collage Exam 2013
DSSSB PGT 24.07.2018 (9 am-12 pm)
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014
GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2017
UP TGT 2005

Ans. (c) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल का आरम्भ 'चिन्तामणि त्रिपाठी' से माना है। चिन्तामणि त्रिपाठी सिद्धान्तः रसवादी आचार्य थे। ये चार भाई थे जिनमें भूषण, मतिराम तथा जटाशंकर त्रिपाठी थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- रसविलास, छन्द विचार पिंगल, शृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरु, कृष्णचरित, काव्य विवेक, काव्यप्रकाश आदि।

3. **किस कवि के आश्रयदाता महाराज शिवाजी तथा छत्रसाल बुन्देला थे।**
(a) देव (b) मतिराम
(c) कबीर (d) भूषण

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : रीतिबद्ध धारा के कवि 'भूषण' महाराज शिवाजी तथा छत्रसाल बुंदेला के राज्याश्रित कवि थे। महाराज छत्रसाल ने भूषण की पालकी को कन्धा लगाया था जिस पर भूषण ने कहा- 'शिवा को बखानौ कि बखानौ छत्रसाल को।' आचार्य शुक्ल ने भूषण के सन्दर्भ में लिखा है- 'वे हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।' 'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी' तथा 'छत्रसाल दशक' भूषण की रचनाएँ हैं।

4. **सनि कज्जल, चष झष लगन उपज्यो सुदिन सनेहु।**
क्यों न नृपति हवै भोगवै, लहि सुदेसु सबु देहु॥
-बिहारी के उपर्युक्त दोहे में उनकी बहुज्ञाता का कौन-सा पक्ष प्रकट हुआ है?
(a) वैद्यक ज्ञान (b) राजनीति
(c) देशाटन (d) ज्योतिष ज्ञान

UP TGT- 2021

Ans. (d) : सनि कज्जल, चष झष लगन उपज्यो सुदिन सनेहु।
क्यों न नृपति हवै भोगवै, लहि सुदेसु सबु देहु।।
अर्थात् सखी नायिका से कह रही है कि काजल रूपी शनिग्रह के नेत्र रूपी मीन राशि में स्थित होने से शुभ मुहुर्त में जो स्नेह रूपी शिशु उत्पन्न हुआ है, वह राजा होकर संपूर्ण शरीर रूपी सुंदर प्रदेश को क्यों नहीं भोगेगा। उपर्युक्त दोहे में बिहारी के ज्योतिष ज्ञान की बहुज्ञता का पक्ष प्रकट हुआ है।

5. **''बिहारी का 'गागर में सागर' भरने का जो गुण इतना प्रसिद्ध है, वह बहुत कुछ रूढ़ि की स्थापना से ही संभव हुआ है।'' यह कथन किस लेखक का है?**
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) गुलाब राय (d) श्याम सुंदर दास

UPPSC GDC 2021

Ans. (b) : ''बिहारी का 'गागर में सागर' भरने का जो गुण इतना प्रसिद्ध है, वह बहुत कुछ रूढ़ि की स्थापना से ही सम्भव हुआ है।'' यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। शुक्ल जी ने बिहारी को रसवादी माना है। बिहारी के सम्बन्ध में शुक्ल जी ने कहा है ''भावों का बहुत उत्कृष्ट और उदात्त स्वरूप बिहारी में नही मिलता। कविता उनकी शृंगारी है, पर प्रेम के उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती नीचे ही रह जाती है।''

6. **''रसवन्त कवित्तन को रस ज्यौं, अखरान के ऊपर है छलकै॥''**
उस पंक्ति किस कवि द्वारा रचित है?
(a) केशवदास (b) कुलपति मिश्र
(c) मतिराम (d) चिंतामणि

UPPSC GDC 2021

Ans. (d) : रसवन्त कवित्तन को रस ज्यौं, अखरान की ऊपर है छलकै। उक्ति पंक्ति चिंतामणि द्वारा रचित है। चिन्तामणि द्वारा रचित ग्रंथ है– काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, रस विलास, कवि कुल कल्पतरु आदि।

निम्नलिखित कवियों द्वारा रचित प्रसिद्ध पंक्तियाँ–

कवि		पंक्ति
चिन्तामणि	–	ऑखिन मुंदिबे के मिस आनि, अचानक पीठ उरोज लगावै।
कुलपति मिश्र	–	जगते अद्भुत लोकोत्तर चमत्कार, यह लक्षण मै करयौ।

केसवदास	–	केसव केसन अस करी बैरिहु जस न कराहिं। चन्द्र बदनि मृगलोचनी 'बाबा' कहि कहि जाहिं।।

7. 'विरहवारीश' रीतिकाव्यधारा के किस कवि की कृति है?

(a) ठाकुर (b) बोधा
(c) द्विजदेव (d) आलम

UPPSC GDC 2021

Ans. (b) : 'विरहवारीश' रीतिकाव्य धारा के रीतिमुक्त कवि बोधा की कृति है। बोधा द्वारा रचित अन्य कृति 'इश्कनामा' है। निम्न लिखित रीतिमुक्त धारा के कवि एवं उनकी रचनाएँ-

कवि		रचना
ठाकुर	-	ठाकुर शतक, ठाकुर ठसक
द्विजदेव	-	शृंगार लतिका, शृंगार बत्तीसी
आलम	-	आलम केलि, सुदामाचरित

8. रीतिकालीन कवि केशव की इनमें से कौन सी रचना प्रबंधकाव्य नहीं है?

(a) रतन बावनी (b) जहाँगीर जस चन्द्रिका
(c) रसिकप्रिया (d) रामचन्द्रिका

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : रीतिकालीन कवि केशवदास द्वारा रचित 'रसिक प्रिया' प्रबन्धकाव्य नही है। बल्कि यह एक रीतिग्रन्थ है जिसमें रस (शृंगार) का वर्णन कियाग गया है। शेष तीनों कृतियाँ रतन बावनी, जहांगीर जस चन्द्रिका, रामचन्द्रिका प्रबंधकाव्य है।

- केशवदास द्वारा रचित 'रसिक प्रिया' (1591 ई.) एक रीतिग्रंथ है जिसमें शृंगार रस का वर्णन किया गया है।
- केशवदास का उपनाम 'वेदान्ती मिश्र' था और ये निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे।
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेन्द्र और गणपतिचन्द्र गुप्त ने केशवदास को हिन्दी में रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है।
- डॉ. विजयपाल सिंह ने केशवदास को 'कोर्ट का कवि' कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने केशवदास द्वारा रचित 'रामचन्द्रिका' के आधार पर केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है।
- केशवदास की प्रमुख रचनाए निम्न हैं- रसिकप्रिया, कविप्रिया, रामचन्द्रिका, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, नखशिख, छंदमाल आदि।

9. 'तुलसी गंग दुवौ भए, सुकविन के सरदार' यह कथन इनमें से किसका है?

(a) नाभादास (b) गंग
(c) भिखारीदास (d) रहीमदास

UKPSC Lecturer 2020
UP TGT 2021

Ans. (c) : 'तुलसी गंग दुवौ भए, सुकविन के सरदार' यह भिखारीदास का कथन है।

- भिखारीदास ने इन काव्य पंक्तियों के माध्यम से कवि गंग (अकबर के दरबारी कवि) और तुलसीदास की प्रशंसा की है।
- भिखारीदास ट्योगा (प्रतापगढ़) के राजा हिन्दुपति सिंह के आश्रित कवि थे।
- भिखारीदास की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं- शब्दनामकोश, रससारांश, छदार्णव पिंगल, काव्य निर्णय, शृगार निर्णय, विष्णुपुराण भाषा, शतरंजशतिका, अमरकोश।

10. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ केशवदास द्वारा रचित है?

(a) 'विज्ञानगीता' (b) 'बरवै नायिकाभेद'
(c) 'कविकुल कल्पतरु' (d) 'काव्यालंकार'

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (a) : 'विज्ञान गीता' केशवदास द्वारा रचित ग्रंथ है।

- केशवदास का उपनाम वेदान्ती मिश्र था और ये निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित थे।
- केशवदास द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ निम्न है- रसिकप्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतनबावनी, वीरसिंहदेव चरित, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छंदमाल।
- बरवैनायिका भेद, मदनाष्टक, शृंगार सोरठा काव्य कृतियों के रचनाकार रहीमदास हैं।
- 'कविकुलकल्पतरु' काव्यकृति के रचनाकार चिंतामणि त्रिपाठी हैं।
- 'काव्यालंकार' ग्रन्थ के रचनाकार प्रमुख अलंकारवादी आचार्य भामह हैं। आचार्य भामह 'अलंकार सम्प्रदाय' के प्रवर्तक माने जाते हैं।

11. 'अतिसूधो सनेह को मारग है
जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं'
इन पंक्तियों के रचनाकार हैं-

(a) मतिराम (b) चिंतामणि त्रिपाठी
(c) घनानंद (d) बिहारीलाल

DSSSB PGT 18.07.2021 (Shift-II)
DSSSB TGT Female 04.09.2021 (Shift-II)
UKPSC Lecturer 2020
DSSSB PGT 25.07.2018 (9:00 AM to 12:00 PM)
GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2017

Ans. (c) : उपर्युक्त काव्यपंक्तियों के रचनाकार घनानंद हैं।

- घनानंद रीतिकाल के 'रीतिमुक्त काव्यधारा' के प्रमुख कवि हैं।
- घनानंद (1689-1739 ई.) निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे तथा मुहम्मदशाह रंगीले के आश्रय में रहकर कविताएँ करते थे।
- घनानंद ने सुजानसार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, रसकेलिवल्ली यमुनायश जैसी प्रसिद्ध काव्यकृतियों की रचना की।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानंद के विषय में लिखा है, 'ये साक्षात् रसमूर्ति और ब्रजभाषा काव्य के प्रधान स्तम्भों में हैं।'
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चिंतामणि त्रिपाठी को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है।
- बिहारीलाल की एक मात्र रचना 'बिहारी सतसई' दोहा छंद में रचित है। इसकी भाषा परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा है।
- मतिराम रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं। मतिराम का प्रथम ग्रन्थ 'फूलमंजरी' है। किन्तु डॉ. बच्चन सिंह ने 'रसराज' को ही प्रथम ग्रन्थ माना है।

12. **जदपि सुजात सुलच्छनी, सुबरन, सरस, सुवृत्त। भूषण बिनु न बिराजई, कविता, बनिता, मित्त। उपर्युक्त कथन किस रीतिकालीन कवि का है?**

(a) केशवदास (b) चिंतामणि

(c) भूषण (d) मतिराम

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (a) :

रचनाकार	पंक्तियाँ
केशवदास	जदपि सुजात सुलच्छनी...... कविता, बनिता, मित्त
चिन्तामणि	रीति सुभाषा कवित्त की बनरत बुध अनुसार।
भूषण	सुकविन हूं कि कछु कृपा, समुझि कविन को पंथ।
मतिराम	ते धनि ले ब्रजराज लखें गृहराज करें अरु लाज संभारै।

13. **'ब्रजभाषा के शृंगारी कवियों की परंपरा में इन्हें अंतिम प्रसिद्ध कवि समझना चाहिए।' रामचंद्र शुक्ल ने यह तथ्य किस कवि के बारे में लिखा है?**

(a) 'ठाकुर' (b) 'द्विजदेव'

(c) 'ग्वाल' (d) 'बोधा'

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (b) : आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह कथन द्विजदेव के बारे में लिखा है।

आचार्य शुक्ल- 'ब्रजभाषा के शृंगारी कवियों की परम्परा में इन्हें अन्तिम प्रसिद्ध कवि समझना चाहिए। जिस प्रकार लक्षण ग्रन्थ लिखने वाले कवियों में पद्माकर अन्तिम प्रसिद्ध कवि हैं उसी प्रकार समूची शृंगार परम्परा में ये इनकी सी सरस और भावमयी फुटकल शृंगारी कविता फिर दुर्लभ हो गयी।'

आचार्य शुक्ल- 'ऋतु वर्णनों में इनके हृदय का उल्लास उमड़ पड़ता है।'

- द्विजदेव (महाराजा मानसिंह) अयोध्या के महाराज थे।
- इन्हें रीतिबद्ध और रीतिमुक्त दोनों में स्थान दिया जाता है। रचनाएँ- (1) शृंगार लतिका, (2) शृंगार बतीसी
- 'शृंगार लतिका' और 'शृंगार बतीसी' पर महाराजा प्रताप नारायण सिंह ने 'शृंगार लतिका सौरभ' नाम से टीका लिखी।

14. **रीतिकालीन कवि 'भूषण' की कविता का मुख्य संवेदनात्मक स्वर है-**

(a) शृंगारिक (b) व्यंग्यमूलक

(c) प्रशस्तिपरक (d) कारुणिक

UKPSC Lecturer 2020

Ans. (c) : रीतिकालीन कवि 'भूषण' की कविता का मुख्य संवेदनात्मक स्वर 'प्रशस्तिपरक' है।

- भूषण वीर रस के कवि हैं। चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी।
- महाराज छत्रसाल ने एक बार भूषण की पालकी को कन्धा लगाया था, जिस पर भूषण ने कहा- 'सिवा को बखानौ कि बखानौ छत्रसाल को।'

15. **"हिंदी में रीति का प्रयोग साधारणतः लक्षण-ग्रंथों के लिए होता है। जिन ग्रंथों में काव्य के विभिन्न अंगों का लक्षण-उदाहरण सहित विवेचन होता है, उन्हें रीति-ग्रंथ कहते हैं।" उक्त कथन किसका है?**

(a) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(b) डॉ. नगेंद्र

(c) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

(d) विश्वनाथप्रसाद मिश्र

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : रीति के संदर्भ में उपर्युक्त कथन डॉ. नगेंद्र का है। आचार्य विश्वनाथ 'रीति' को काव्य का उपकारक मानते हैं। इन्होंने 'रीतिकाल' को 'शृंगार काल' नाम दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल और डॉ. नगेन्द्र ने 'रीतिकाल' नाम को मान्यता प्रदान की।

16. **'रीतिकाल' को 'शृंगारकाल' किसने कहा है?**

(a) विश्वनाथप्रसाद मिश्र (b) मिश्रबंधु

(c) हजारीप्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. नगेंद्र

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II
DSSSB PGT 25.07.2018 (9:00 AM-12:00 PM)
Uttara Khand Assi. Pro. 2017

Ans. (a) 'रीतिकाल' को 'शृंगारकाल' विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने कहा है-

रीतिकाल का नामकरण	प्रस्तोता
रीतिकाव्य	जॉर्ज ग्रियर्सन
अलंकृत काल	मिश्रबंधु
रीतिकाल	रामचंद्र शुक्ल, डॉ. नगेंद्र
कलाकाल	डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
अंधकार काल	त्रिलोचन

17. **कौन सा विकल्प सुसंगत नहीं है?**

(a) काव्य विवेक – चिन्तामणि

(b) शिवाबावनी – भूषण

(c) वृत्त कौमुदी – मतिराम

(d) प्रतापसिंह विरुदावली – सेनापति

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : रीतिकालीन कृति 'प्रतापसिंह विरुदावली' सेनापति की नहीं अपितु कवि पद्माकर की रचना है। सेनापति की प्रमुख रचना 'कवित्त रत्नाकर' है।

18. **केशवदास के कृतित्व विषयक कौन सा कथन सही नहीं है?**

(a) 'रामचंद्रिका' में कथा के क्रमबद्ध रूप और अवसर के अनुकूल विस्तार-संकोच का विशेष ध्यान रखा गया है।

(b) इनकी सबसे अधिक कल्पना अलंकार संबंधी है।

(c) चमत्कार प्रदर्शन के कारण इनकी रचनाओं में भावपक्ष की अपेक्षा कलापक्ष प्रधान हो गया है।

(d) कविप्रिया, रसिकप्रिया और छंदमाल लक्षणग्रंथ हैं।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : 'रामचंद्रिका' में कथा के क्रमबद्ध रूप और अवसर के अनुकूल विस्तार-संकोच का विशेष ध्यान रखा गया है।

यह कथन केशवदास के कृतित्व विषयक सही नहीं है।

केशवदास रचित महाकाव्य 'रामचंद्रिका' का रचनाकाल 1601 ई. है। इसमें कुल 1717 छंदों के द्वारा भगवान राम की कथा वर्णित है किंतु यह भक्ति प्रधान न होकर काव्य ग्रंथ ही है। इसकी पूर्वार्द्ध की

कथा वाल्मीकि रामायण से साम्य रखती है किन्तु उत्तरार्द्ध में कवि की निजी उद्भावना है।

केशव 'अलंकार संप्रदायवादी' आचार्य कवि थे इसलिए इनकी सबसे अधिक कल्पना अलंकार संबंधी है।

19. किस विकल्प में सभी रचनाएँ भिखारीदास की हैं?

(a) शृंगार निर्णय, रसराज, वृत्तविचार

(b) काव्यनिर्णय, शब्दरसायन, काव्यविकास

(c) रस रत्नाकर, रस सारांश, रसपीयूषनिधि

(d) काव्यनिर्णय, रस सारांश, छंदोर्णवपिंगल

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : काव्यनिर्णय, रस सारांश, छंदार्णव पिंगल

रीतिकालीन श्रेष्ठ कवि भिखारीदास का जन्म (टेंउगा) प्रतापगढ़ में हुआ। इनका रचनाकाल 1725-1760 ई. के बीच माना जाता है।

भिखारीदास की प्रमुख रचनाएं:- शब्दनाम कोश, रस सारांश, छंदार्णव पिंगल, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, विष्णु पुराण भाषा, शतरंजशतिका।

कवि	रचनाएं
दशरथ	वृत्त विचार
मतिराम	रसराज
देव	शब्द या काव्यरसायन, रागरत्नाकर
सोमनाथ	रस पीयूष निधि
सुरति मिश्र	रस रत्नाकर

20. मतिराम से संबंधित कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) 'रसराज' और 'ललितललाम' इनकी विशिष्ट ख्याति के मुख्य आधार हैं।

(b) 'रसराज' शृंगार रस और नायिका-भेद का ग्रंथ है।

(c) 'रसराज' के नायक-नायिका अत्यधिक चतुर और क्रियाविदग्ध हैं।

(d) 'ललितललाम' में अलंकारों के लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : "रसराज' के नायक-नायिका अत्यधिक चतुर और क्रियाविदग्ध हैं।' मतिराम से सम्बन्धित उक्त कथन सही नहीं है।

मतिराम का जन्म सन् 1617 में कानपुर (उ0प्र0) में हुआ। 'रसराज' और 'ललित ललाम' इनकी विशिष्ट ख्याति का मुख्य आधार हैं। रसराज में 'शृंगार रस और नायिका भेद' तथा ललित ललाम में अलंकारों के लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं।

रसराज की नायिका लज्जाशील एवं नायक निष्कपट है।

21. कौन सा कथन भूषण के व्यक्तित्व और कृतित्व के संदर्भ में सही नहीं है?

(a) इनकी कविता वीर रस प्रधान है।

(b) 'शिवराजभूषण' और 'छत्रसालदशक' इनके प्रबंधकाव्य हैं।

(c) रुद्र सोलंकी (सुलंकी) ने इन्हें 'भूषण' उपाधि से विभूषित किया।

(d) रीतिकार के रूप में इन्हें अधिक सफलता नहीं मिली।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : 'शिवराजभूषण' और 'छत्रसालदशक' इनके प्रबंधकाव्य हैं। उपर्युक्त कथन भूषण के व्यक्तित्व और कृतित्व के संदर्भ में सही नहीं हैं। कवि भूषण कृत 'शिवराजभूषण' एक अलंकार निरुपण है 99 अर्थालंकार, चार शब्दालंकार और शेष दो चित्र और शंकर नामक अलंकार (डॉ. नगेन्द्र स्रोत) कुल 105 अलंकारों का प्रयोग किया गया है। यह एक अलंकार निरूपक ग्रंथ है जिसमें शिवाजी का चरित्र चित्रण, तत्कालीन इतिहास एवं शिवाजी से संबद्ध प्रसंगों का प्रामाणिक वर्णन हुआ है।

छत्रसाल दशक 'महाकवि भूषण' द्वारा रचित 'प्रशस्तिपरक' काव्य है जिसमें 10 कवित्तों में बुन्देला वीर छत्रसाल के शौर्य का वर्णन किया गया है।

22. "देव कृत 'सुखसागरतरंग' को 'नायिका-भेद का एक विश्वकोश' समझना चाहिए।"

उक्त कथन किस विद्वान का है?

(a) डॉ. नगेंद्र (b) मिश्रबंधु

(c) विश्वनाथप्रसाद मिश्र (d) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : "देव कृत 'सुखसागर तरंग' को 'नायिका भेद का एक विश्वकोष' समझना चाहिये।" उक्त कथन डॉ. नगेंद्र का है।

⇒ कवि देव का 'सुख सागर तरंग' इनका अंतिम लक्षण ग्रंथ माना जाता है जो पिहानी के अकबर अली खाँ को समर्पित है। 'सुखसागर तरंग' प्रायः अनेक ग्रंथों से लिये हुये कवित्तों का संग्रह है।

⇒ 'सुख सागर तरंग' का सम्पादन सन् 1897ई. में मिश्र बंधुओं के पिता 'बालदत्त मिश्र' ने किया।

⇒ "रीतिकाल के कवियों में ये बड़े ही प्रगल्भ और प्रतिभा सम्पन्न कवि थे।"-'रामचंद्र शुक्ल'

23. "इसका एक-एक दोहा हिंदी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है।"

शुक्लजी का उक्त कथन किस रचना के संदर्भ में है?

(a) मतिराम सतसई (b) वृंद सतसई

(c) दोहावली (तुलसीदास) (d) बिहारी सतसई

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : "इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है।" रामचंद्र शुक्ल का उक्त कथन कवि बिहारी की रचना 'बिहारी सतसई' के विषय में है।

कवि बिहारी का जन्म 1595 ई. के लगभग ग्वालियर में हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इन्हें 'रसवादी' मानते है तो डॉ. नगेन्द्र ध्वनिवादी कवि। इनके आश्रयदाता जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह थे। 'बिहारी सतसई' 713 दोहों की मुक्तक रचना है, जिसमें ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है। इसके आधार ग्रंथ 'गाथा सप्तशती', 'आर्या सप्तशती' एवं 'अमरूक शतक' माने जाते हैं।

⇒ जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार– "संपूर्ण यूरोप में बिहारी सतसई के समकक्ष कोई रचना प्राप्त नहीं होती है।"

पद्मसिंह शर्मा के अनुसार– "बिहारी सतसई शक्कर की रोटी है।"

हजारीप्रसाद द्विवेदी– "बिहारी सतसई रसिकों के हृदय का हार है।"

24. **स्थापना (A): जिस कवि में कल्पना की समाहार-शक्ति के साथ भाषा की समास-शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा।**

तर्क (R): यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी।

(a) (A) और (R) दोनों गलत

(b) (A) और (R) दोनों सही

(c) (A) सही, (R) गलत

(d) (A) गलत, (R) सही

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : आचार्य शुक्ल ने मुक्तक के लिये भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति को आवश्यक बताया है। उनके अनुसार मुक्तक कविता में जो गुण होना चाहिये वह बिहारी के दोहों में अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा है इसमें कोई संदेह नहीं है।

⇒ इस आधार पर स्थापना (A) जिस कवि में कल्पना की समाहार-शक्ति के साथ भाषा की समास शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। तथा तर्क (R) यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी, दोनो कथन सही हैं।

25. **स्थापना (A): जिसकी रचना को जनता का हृदय स्वीकार करेगा उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी जब तक स्वीकृति बनी रहेगी।**

तर्क (R): क्या संस्कृत-साहित्य में, क्या हिंदी-साहित्य में सहस्त्रों कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में ग्रंथ रचे जिनका आज पता तक नहीं है।

(a) (A) सही (R) गलत

(b) (A) गलत (R) सही

(c) (A) और (R) दोनों सही

(d) (A) और (R) दोनों गलत

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : (A) और (R) दोनों सही

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकालीन कवि भूषण के लिये कहा कि– "जिसकी रचना को जनता का हृदय स्वीकार करेगा उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी जब तक स्वीकृति बनी रहेगी।" इस प्रकार उपर्युक्त कथन सही हैं।

26. **"प्रेम की पीर या 'इश्क का दर्द' इनके एक-एक वाक्य में भरा पाया जाता है।"**

आचार्य शुक्ल का उक्त कथन किसके संदर्भ में है?

(a) घनानंद (b) ठाकुर

(c) रसखान (d) आलम

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में– " 'प्रेम की पीर' या 'इश्क का दर्द' इनके एक-एक वाक्य में भरा पाया जाता है।" शुक्लजी का यह कथन आलम के संदर्भ में है।

रीतिकालीन कवि 'आलम' प्रेमोन्मत्त कवि थे और अपनी तरंग के अनुसार रचना करते थे। शृंगार रस की ऐसी उन्मादमयी उक्तियाँ इनकी रचना में मिलती है कि पढ़ने और सुनने वाले लीन हो जाते हैं।

आलम की प्रमुख रचनाएँ:- माधवानलकामकंदला (प्रेमाख्यानक काव्य), सुदामा चरित, स्यामसनेही, आलमकेलि।

घनानंद की प्रमुख रचनाएँ:- सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, कोकसार, कृपाकंद, यमुनायश

ठाकुर की प्रमुख रचनाएँ:- ठाकुर शतक, ठाकुर ठसक।

रसखान की प्रमुख रचनाएँ:- सुजान रसखान, प्रेमवाटिका, दानलीला।

27. **"नेही महा, ब्रजभाषा-प्रबीन औ सुंदरतानि के भेद को जानै।" विश्वनाथप्रसाद मिश्र के अनुसार घनानंद की यह काव्य-प्रशस्ति किसके द्वारा की गई है?**

(a) भारतेंदु हरिश्चंद्र (b) जगन्नाथदास रत्नाकर

(c) ब्रजनाथ (d) मिश्रबंधु

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II
DIET PGT 2014

Ans. (c) : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार घनानन्द की उपर्युक्त काव्य प्रशस्ति ब्रजनाथ द्वारा की गई है।

घनानंद रीतिमुक्त काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। घनानंद का जीवनकाल 1689 - 1739 ई. के बीच स्वीकार किया जाता है। घनानंद की कविताओं को ब्रजनाथ नामक व्यक्ति ने 'घनानंद कवित्त' के नाम से संगृहित किया है।

उपर्युक्त पंक्तियों में उन विशेषताओं की चर्चा की गई है जो घनानंद की रीतिमुक्त कविताओं के गर्भ (गूढ़ अर्थ) को समझने के लिये किसी व्यक्ति में होना अनिवार्य है।

28. **"इनका सा अर्थ-सौष्ठव और नवोन्मेष बिरले ही कवियों में मिलता है। रीतिकाल के कवियों में ये बड़े ही प्रगल्भ और प्रतिभासम्पन्न कवि थे।"**

शुक्लजी का उक्त मत किस कवि के विषय में है?

(a) बिहारी (b) मतिराम

(c) भूषण (d) देव

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : शुक्ल जी का उपर्युक्त मत रीतिकालीन कवि देव के विषय में है।

⇒ "कविता उनकी शृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे ही रह जाती है।" –रामचंद्र शुक्ल बिहारी के संदर्भ में।

⇒ "रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों में पद्माकर को छोड़ और किसी कवि में मतिराम की सी चलती भाषा और सरल व्यंजना नहीं मिलती।"–रामचंद्र शुक्ल मतिराम के संदर्भ में।

⇒ "वे हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि है।" –रामचंद्र शुक्ल भूषण के संदर्भ में।

29. **सेनापति के काव्य/कौशल के विषय में कौन सा विवरण सही नहीं है?**

(a) 'कवित्त रत्नाकर' इनकी प्रसिद्ध रचना है।

(b) 'कवित्त रत्नाकर' आद्यंत राम-चरित्र और रामभक्ति-भावना से ओत-प्रोत है।

(c) इनकी अप्रतिम सफलता उत्कृष्ट ऋतुवर्णन में है।

(d) श्लेष इनका प्रिय अलंकार है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : 'कवित्त 'रत्नाकर' आद्यंत राम चरित्र और रामभक्ति भावनाओं से ओत-प्रोत है।' सेनापति के संदर्भ में यह विवरण सही नहीं हैं।

⇒ रीतिकालीन कवि सेनापति की प्रसिद्ध कृति 'कवित्त रत्नाकर' है, इसके पहले तरंग के छंद संख्या 5 में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किया गया है।

⇒ यह 5 तरंगों में विभाजित है। पहले तरंग में कुल 96 कवित्त हैं जिसमें 'श्लेष वर्णन' है। दूसरे तरंग में कुल 74 कवित्त है जिसमें शृंगार वर्णन है। तीसरे तरंग में कुल 62 छंद है जिसमें 'ऋतु वर्णन' है। चौथे तरंग में 76 छंद है, जिसमें रामकथा का चित्रण (कुछ चुने हुये ओज गुण की प्रधानता वाले प्रसंगों) है। पाँचवे तरंग में कुल 86 छंद है जिसमें 'राम रसायन' का वर्णन किया गया है।

30. ''आगे के कवि रीझिहैं, तौ कबिताई, न तौ
राधिका कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ है।''
इस काव्यांश के रचनाकार हैं

(a) भिखारीदास (b) केशवदास
(c) पद्माकर (d) द्विजदेव

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II)2014

Ans. (a) ''आगे के कवि रीझिहैं, तौ कबिताई, न तौ
राधिका कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ है।''
उपर्युक्त काव्यांश के रचनाकार भिखारीदास हैं।

⇒ भिखारीदास का जन्म प्रतापगढ़ (उ०प्र०) में तथा रचनाकाल (1725-1760 ई.) तक माना जाता है।

भिखारीदास की प्रमुख रचनांएः-
1. रस सारांश, 2. छंदार्णव पिंगल, 3. काव्य निर्णय, 4. शृंगार निर्णय, 5. अमरकोश, 6. शतरंज शतिका आदि हैं।

⇒ उक्त काव्यांश में भिखारीदास जी ने कविता कर्म के संदर्भ में कहा है कि आगे के कवि रीझें तो कविता है अन्यथा राधाकृष्ण के स्मरण का बहाना ही सही।

31. निम्नलिखित में प्रबन्धात्मक रचना है:

(a) शिवाबावनी (b) हिम्मतबहादुर–विरुदावली
(c) भवानीविलास (d) जगद्विनोद

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : पद्माकर कृत 'हिम्मतबहादुर-विरुदावली' रीतिकालीन प्रबन्धात्मक रचना है। जिसमें 211 छंदों में हिम्मत बहादुर का शौर्य वर्णन है। अन्य विकल्पों में कवि देव कृत - 'भवानी विलास', भूषण कृत 'शिवा बावनी', एवं पद्माकर कृत 'जगद्विनोद' रीतिकालीन मुक्तक काव्य श्रेणी की रचनाएं हैं।

32. 'विज्ञानगीता' के रचनाकार हैं

(a) भिखारीदास (b) ग्वाल
(c) पद्माकर (d) केशवदास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : 'विज्ञानगीता' के रचनाकार केशवदास हैं।
आचार्य केशवदास का जन्म 1555ई. में 'ओरछा' में हुआ था। ये ओरछा नरेश के भाई इन्द्रजीत सिंह के दरबारी कवि, मंत्री और गुरू थे। इनका निधन 1617ई. में हुआ।
केशवदास अलंकार संप्रदायवादी आचार्य कवि थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनकी क्लिष्टता के कारण इन्हे 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा और छंदो का अधिक प्रयोग करने के कारण (कुल 1717 छंद) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने इनकी रचना 'रामचन्द्रिका' को 'छंदों का अजायबघर' कहा है।
इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ– रसिकप्रिया, कविप्रिया, नखशिख, रतनबावनी आदि हैं।

33. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ मात्र अलंकार निरूपक नहीं है?

(a) कविकुलकंठाभरण (b) शिवराजभूषण
(c) कविकुलकल्पतरू (d) ललितललाम

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c)

⇒ चिंतामणि कृत 'कविकुलकल्पतरू' मात्र अलंकार निरूपक ग्रंथ नहीं है। इसमें कुल 1133 पद्य हैं, जो 8 प्रकरणों में विभाजित है। इस ग्रंथ का समय संवत् 1707 माना जाता है।

प्रथम प्रकरण- काव्य भेद, काव्य लक्षण से सम्बन्धित
द्वितीय एवं तृतीय प्रकरणः- शब्द-अर्थ सहित अलंकार निरूपण
चतुर्थ प्रकरणः- काव्य दोष विवेचन से संबंधित
पंचम प्रकरणः- इसके 3 भाग है जिसमें शब्दार्थ निरूपण, ध्वनि भेदोपभेद विवेचन है।

⇒ रीतिकालीन कवि 'दूलह' कृत 'कविकुलकंठाभरण' अलंकार निरूपक ग्रंथ है इसमें लक्षण और उदाहरण एक ही पद में कहे गये हैं पर कवित्त और सवैया के समान बड़े छंद लेने से अलंकार-स्वरूप और उदाहरण दोनो प्राप्त होते हैं।

⇒ 'शिवराज भूषण' संवत् 1730 में रचित कवि भूषण का अलंकार निरूपक ग्रंथ है इसमें 385 छंद हैं जिसमें दोहों में अलंकारों की परिभाषा तथा कवित्त एवं सवैया छंदों में उदाहरण दिये गये हैं।

⇒ रीतिकालीन कवि मतिराम द्वारा रचित 'ललित ललाम' अलंकार निरूपक ग्रंथ हैं। इसका समय निश्चित नहीं, इसलिये सन् 1661-64 ई. के बीच इस ग्रंथ का रचनाकाल माना जाता है। इस ग्रंथ में 'चंद्रालोक' एवं 'कुवलयांनद' नामक संस्कृत ग्रंथों के आधार पर लक्षण प्रस्तुत किये गये हैं।

34. कौन सी रचना मात्र पिंगल/छंद निरूपक है?

(a) भाषाभूषण (b) वृत्तविचार
(c) काव्यरसायन (d) काव्यनिर्णय

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : 'वृत्तविचार' नाम से दो रीतिकालीन कवियों के छंद निरूपक ग्रंथ प्रकाश में आये है। जिनके नाम हैं सुखदेव मिश्र और दशरथ। शेष विकल्पों में जसवंत सिंह कृत 'भाषा भूषण' अलंकार निरूपक ग्रंथ है, 'देव' कृत 'काव्य रसायन' नायिका भेद निरूपक ग्रंथ है। जबकि 'भिखारीदास' कृत 'काव्य निर्णय' काव्याँग निरूपक ग्रंथ है।

35. कौन सी रचना रस/नायक-नायिका भेद निरूपक नहीं है?

(a) जगद्विनोद (b) सुधानिधि

(c) सुखसागरतंरग (d) पद्माभरण

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) 'पद्माभरण' रस/नायक-नायिका भेद निरुपक ग्रंथ नहीं है।

पद्माभरण (1810 ई.), रीतिकालीन कवि पद्माकर (1753-1833ई.) का अलंकार निरूपक ग्रंथ है।

शेष विकल्पों में कवि देव कृत 'सुख सागर तंरग', कवि तोष द्वारा 1734ई. में रचित 'सुधानिधि' तथा कवि पद्माकर द्वारा 1803ई. में रचित 'जगद विनोद' रस/नायक-नायिका भेद निरूपक ग्रंथ हैं।

36. सर्वांग/विविध काव्यांग विवेचक आचार्य नहीं है

(a) तोष (b) प्रतापसाहि

(c) सोमनाथ (d) भिखारीदास

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : 'तोष' सर्वांग/विविध काव्यांग विवेचक आचार्य नहीं है। रीतिकालीन कवि तोष ने सन् 1734 ई. में 'सुधा निधि' नामक ग्रंथ की रचना की जो रस निरूपक ग्रंथ है। कवि तोष शृंगवेरपुर (प्रयागराज) के रहने वाले चतुर्भुज शुक्ल के पुत्र थे। इन्हे रीतिकालीन रस निरूपक कवि माना जाता है। शेष विकल्पों में सोमनाथ, भिखारीदास एवं प्रतापसाहि सर्वांग विवेचक आचार्य की श्रेणी में आते हैं।

रीतिकालीन कवि	सर्वांग निरूपक ग्रंथ
सोमनाथ	रसपीयूष निधि
भिखारीदास	काव्य निर्णय
प्रतापसाहि	काव्य विलास
सुरति मिश्र	काव्य सिद्धान्त

37. रीतिकाल के विषय में कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) सजीव शृंगार की एक अदम्य लिप्सा इस युग के साहित्य में प्रतिबिंबित है।

(b) कुछ रचनाओं में मुख्यतः काव्यशास्त्र-सिद्धांतों को छंदोबद्ध किया गया है तो कुछ रचनाएँ लक्षणमुक्त हैं।

(c) इस काल के रीतिग्रंथ/लक्षणग्रंथ संस्कृत लक्षणग्रंथों की छाया से पूर्णतया मुक्त हैं।

(d) रीतिकाव्य के विकास में तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योग रहा है।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : इस काल के रीतिग्रंथ/लक्षणग्रंथ संस्कृत लक्षणग्रंथों की छाया से पूर्णतः मुक्त है। रीतिकाल के संबंध में उक्त कथन सही नहीं है।

रीतिकाल (सं. 1700 - 1900) हिन्दी साहित्य का 'उत्तर मध्यकाल' कहलाता है। रीतिकाल समृद्धि और विलासिता का काल है। वैराग्यपूर्ण साधना का इस युग में आदर नहीं था इस कारण यह भक्तियुग से भिन्न है।

सजीव शृंगार की एक अदम्य लिप्सा इस युग के साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। रीतिकाव्य के विकास में तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि हिन्दी के रीतिशास्त्र का आधार पूर्ण रूप से संस्कृत काव्यशास्त्र है परन्तु इसका यह तात्पर्य भी नहीं है कि रीतिकाल के प्रत्येक लेखक ने संस्कृत लक्षणग्रंथों का पूरा अध्ययन किया था और यह भी नहीं कहा जा सकता कि रीतिग्रंथ, संस्कृत लक्षणग्रंथों की छाया से पूर्णतः मुक्त हैं।

38. ''आचार्य लोग तो कविता करने की रीति सिखलाते हैं; मानो वह संसार से यह कहते हैं कि अमुकामुक विषयों के वर्णनों में अमुक प्रकार के कथन उपयोगी हैं और अमुक प्रकार के अनुपयोगी।'' उक्त कथन किसका है?

(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) मिश्रबंधु

(c) विश्वनाथप्रसाद मिश्र (d) डॉ. नगेंद्र

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (b) : उपर्युक्त कथन मिश्र बंधुओं ने 'रीतिकाल' का नामकरण करने के लिये अपनी कृति 'मिश्रबंधु विनोद' में स्पष्ट किया है। मिश्र बंधुओं ने रीतिकाल को 'अलंकृत काल' कहा। उन्होंने स्पष्ट किया कि -''आचार्य लोग स्वयं कविता करने की रीति सिखलाते थे। मानो वे संसार से यों कहते हैं कि अमुक-अमुक विषयों के वर्णन में अमुक प्रकार के कथन उपयोगी है और अमुक अनुपयोगी।''

⇒ पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को 'शृंगारकाल' नाम दिया है।

⇒ डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने रीतिकाल को 'कला काल' नाम दिया है।

⇒ डॉ. नगेन्द्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल के नामकरण 'रीतिकाल' को मान्यता प्रदान करते है जिसका समर्थन डॉ. हरीश चंद्र वर्मा भी करते हैं।

39. ''मतिराम जी 'रसराज' के समान पद्माकरजी का....भी काव्यरसिकों और अभ्यासियों दोनों का कंठहार रहा है। वास्तव में यह शृंगार रस का सार-ग्रंथ सा प्रतीत होता है।'' शुक्लजी का यह कथन पद्माकर की किस रचना के संदर्भ में हैं?

(a) पद्माभरण (b) हिम्मतबहादुर विरुदावली

(c) जगद्विनोद (d) गंगालहरी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (c) : शुक्ल जी का उपर्युक्त कथन पद्माकर की कृति 'जगद्विनोद' के संदर्भ में है। पद्माकर ने जयपुर नरेश जगत सिंह के आश्रय में 'जगद्विनोद' नामक 'नवरस-निरूपक' ग्रंथ की रचना की। 'गंगालहरी' में इन्होंने गंगा का अलंकारों से अद्वितीय अलंकरण किया है। पद्माकर जी को जीवन के अंतिम समय में कुष्ठ रोग हो गया था जिसके निदान हेतु इन्होंने 'गंगालहरी' की रचना की।

पद्माकर जी का अलंकार ग्रंथ 'पद्माभरण' लक्षणों की स्पष्टता और उदाहरणों की सरसता के कारण अधिक प्रसिद्ध हुआ।

40. ''हिंदी में रीतिग्रंथों की अविरल और अखंडित परंपरा का प्रवाह केशव की 'कविप्रिया' के प्रायः पचास वर्ष पीछे चला और वह भी एक भिन्न आदर्श को लेकर....।''

(a) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) डॉ. नगेंद्र

(c) विश्वनाथप्रसाद मिश्र (d) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (d) : उपर्युक्त कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है। अपनी रचना 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के उत्तर मध्यकाल के प्रकरण 1 में उन्होंने बताया कि "इसमें संदेह नहीं कि काव्य-रीति का सम्यक समावेश पहले-पहल आचार्य केशव ने ही किया। किंतु यह प्रवाह केशव के आदर्श को लेकर नहीं चला बल्कि उनसे 50 वर्ष पीछे एक भिन्न आदर्श के आधार पर।"

"साहित्य में उन सारी बातों का जीवन्त विवरण होता है- जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है।"– हजारी प्रसाद द्विवेदी 'रीतिकाव्य की भूमिका' तथा 'देव और उनकी कविता' में डॉ. नगेन्द्र की रसवादी आलोचना दृष्टि परिपक्व होती है।

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी का मानना है कि यदि रीतिकाल के समस्त ग्रंथों की छानबीन की जाय तो किसी न किसी रूप या परिमाण में शृंगार अवश्य मिल जाता है।

41. निम्नलिखित कथनों से संबंधित सही विकल्प चुनिए:

(अ) रीति कविता राजाओं और रईसों के आश्रय में पली है।

(ब) उसकी अंतःप्रेरणा और स्वरूप को कवियों और उनके आश्रयदाता दोनों के संबंध से ही समझा जा सकता है।

विकल्पः

(a) (अ) और (ब) दोनों सही

(b) (अ) सही (ब) गलत

(c) (अ) गलत (ब) सही

(d) (अ) और (ब) दोनों गलत

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

Ans. (a) : (अ) और (ब) दोनों सही।

प्रस्तुत दोनों कथन रीतिकाल से संबंधित सही कथन है।

⇒ रीतिकाल के कवि राजाओं और रईसों के आश्रय में रहते थे अर्थात् अधिकांश कवि दरबारी थे। इसलिये इस युग की कविता अधिकतर दरबारी रही जिसके फलस्वरूप इसमें चमत्कारपूर्ण व्यंजना की विशेष मात्रा तो मिलती है परन्तु कविता साधारण जनता से विमुख हो गई।

रीतिकालीन कविता की प्रमुख विशेषताएँ:–

1. शृंगार निरूपण
2. लक्षण ग्रंथों की प्रधानता
3. अलंकारिकता
4. आश्रयदाताओं की प्रशंसा
5. ब्रजभाषा की प्रधानता
6. नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण।

42. 'भाषाभूषण' के रचनाकार हैं

(a) भूषण (b) मतिराम

(c) जसवंत सिंह (d) पद्माकर

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा 2015

Ans. (c) : 'भाषाभूषण' के रचनाकार हैं – जसवंत सिंह।

जसवंत सिंह का जन्म 1626ई. में मारवाड़ तथा निधन 1688 ई. में हुआ। इनके रचित ग्रंथों में भाषाभूषण, प्रबोध चंद्रोदय, सिद्धांतसार आदि प्रसिद्ध है।

रचनाकार	रचना
भूषण	शिवराज भूषण
मतिराम	ललित ललाम, सतसई
पद्माकर	गंगालहरी, जगत् विनोद, हिम्मत बहादुर विरुदावली

43. 'केशव कठिन काव्य के प्रेत हैं' यह कथन किस आलोचक का है?

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचंद्र शुक्ल

(c) विद्यापति (d) राहुल सांकृत्यायन

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-III

Ans. (b) : 'केशव कठिन काव्य के प्रेत हैं' यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है।

केशवदास की रचनाएँ - रसिकप्रिया, नखशिख, कविप्रिया, रामचन्द्रिका, रतन बावनी, जहाँगीरजसचन्द्रिका, विज्ञानगीता, छन्दमाल, वीरसिंहदेवचरित।

- रामस्वरुप चतुर्वेदी ने 'रामचन्द्रिका' को छन्दो का अजायबघर कहा है।
- शुक्ल जी- 'रामचन्द्रिका' में केशव को सर्वाधिक सफलता मिली है, संवाद-योजना में केशव के पात्र बातों में से बात निकालकर संवाद करते हैं।'

44. रीतिकाल लगभग कितनी शताब्दियों तक चला?

(a) चार शताब्दियों तक (b) एक शताब्दी तक

(c) पाँच शताब्दियों तक (d) दो शताब्दियों तक

DSSSB TGT (Female) 04.09.2021 Shift-III

Ans. (d) : रीतिकाल लगभग दो शताब्दियों (संवत् 1700 से संवत् 1900 तक) चला।

आदिकाल (संवत् 1050 से 1375)

भक्तिकाल (संवत् 1375 से 1700)

रीतिकाल (संवत् 1700 से 1900)

आधुनिक काल (संवत् 1900 से आगे)

- रीतिकाल का नामकरण-

मिश्र बन्धु	-	अलंकृत काल
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	-	रीतिकाल
आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	-	शृंगार काल
डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल	-	कला काल

45. निम्नलिखित में से कौन-सा अलंकार ग्रंथ नहीं है?

(a) भाषाभूषण (b) शिवराज भूषण

(c) ललितललाम (d) अंगदर्पण

UP PGT 2021

Ans. (d) : रसलीन का 'अंगदर्पण' अलंकार ग्रन्थ नहीं है, बल्कि नायिका भेद ग्रन्थ है। जो 1737 ई. में लिखा गया।

रसलीन का दूसरा ग्रन्थ– रसप्रबोध (1741 ई०) है।

- रसलीन का मूल नाम – गुलामनबी था। ये मीर तफैल अहमद के शिष्य थे।
- 'अंगदर्पण' में रसलीन ने अंगों की उपमा, उत्प्रेक्षा से चमत्कार पूर्ण वर्णन किया है।

- 'रस प्रबोध' के 1155 दोहों में रसों का वर्णन है।
- 'भाषा भूषण' जसवंत सिंह की रचना है, जो कि अलंकार ग्रन्थ है, इसमें 212 दोहे में अलंकार का निरूपण है।
- ललित ललाम (अलंकार निरूपण) – मतिराम की रचना है
- भूषण की प्रसिद्ध रचना– शिवराज भूषण (अलंकार ग्रन्थ) है।

46. निम्नलिखित में से घनानन्द की रचना नहीं है–

(a) प्रिया प्रसाद (b) भावना प्रकाश
(c) प्रीति पावस (d) पक्षी विलास

UP PGT 2021

Ans. (d) : 'पक्षी विलास' घनानन्द की रचना नहीं है।
- घनानंद रीतिकाल के रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं– इश्कलता, विरहलीला, रसकेलिवल्ली, वियोग बेलि, सुजानहित, यमुना यश आदि।
- घनानंद के बारे में शुक्ल जी कहते हैं- "लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य की जो छटा इनमें दिखायी पड़ी, खेद है कि वह फिर पौने दो सौ वर्ष पीछे जाकर आधुनिक काल के उत्तरार्द्ध में, अर्थात् वर्तमान काल की नूतन काव्य धारा में ही, 'अभिव्यंजनावाद' के प्रभाव से कुछ विदेशी रंग लिए प्रकट हुई।"

47. 'बिहारी अकेले कवि हैं जिन्होने ग्रामीण संस्कृति के विरुद्ध घृणा की अभिव्यक्ति की है।' यह किसका कथन है?

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) बच्चन सिंह

UP PGT 2021

Ans. (d) : 'बिहारी अकेले कवि हैं जिन्होने ग्रामीण संस्कृति के विरुद्ध घृणा की अभिव्यक्ति की है।' यह कथन बच्चन सिंह का है।
- बच्चन सिंह ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' (1996 ई.) में लिखा है- "बिहारी अकेले कवि हैं, जिन्होंने ग्रामीण संस्कृति के विरुद्ध घृणा की अभिव्यक्ति की है।"
- शुक्ल जी बिहारी के बारे में लिखते है कि "बिहारी का गागर में सागर भरने का जो गुण इतना प्रसिद्ध है, वह बहुत कुछ रूढ़ि की स्थापना से ही संभव हुआ है।"
- डॉ. नगेन्द्र ने बिहारी को 'ध्वनिवादी' स्वीकार किया है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बिहारी सतसई को "रसिको के हृदय का घर कहा है"।

48. रीतिकालीन कवि 'मतिराम' द्वारा लिखित ग्रन्थ 'ललित ललाम' है –

(a) पिंगल–ग्रंथ (b) रस–निरूपण ग्रंथ
(c) अलंकार–ग्रंथ (d) इनमें से एक भी नहीं

UPPSC GIC 2021

Ans. (c) : रीतिकालीन कवि 'मतिराम' द्वारा लिखित ग्रंथ 'ललित ललाम' **अलंकार–ग्रंथ** है।
मतिराम के अन्य ग्रन्थ– फूल मंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज (रस निरूपक ग्रंथ), अलंकार पंचाशिका (अलंकार निरूपक ग्रंथ), सतसई, वृत्त कौमुदी।

49. "डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच, लोगन कवित्त कीन्हों खेल करि जान्यो है।" – ये काव्य–पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(a) ठाकुर (b) घनानन्द
(c) भिखारीदास (d) देव

UPPSC GIC 2021
RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-II
GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2017
UGC NET II[nd] Paper Dec. 2012

Ans. (a) : "डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच, लोगन कवित्त कीन्हों खेल करि जान्यो है।" ये काव्य पंक्तियाँ रीतिकालीन रीतिमुक्त कवि 'ठाकुर' की हैं।
रामचंद्र शुक्ल ने ठाकुर को 'सच्ची उमंग का कवि' कहा है तो घनानंद को वे 'प्रेम के पीर का कवि' मानते हैं।
देव के संदर्भ में रामचंद्र शुक्ल का कहना है कि–"वे आचार्य और कवि दोनों रूपों में हमारे सामने आते हैं।"
भिखारीदास के संदर्भ में कहते हैं कि "इनकी रचना कलापक्ष में संयत और भावपक्ष में रंजनकारिणी है।"

– अति सूधौ सनेह को मारगु है।
जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं।। **–(घनानंद)**
– अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन।। **–(देव)**
– आगे के कवि रीझिहैं, तो कविताई न तो।
राधा कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ है।। **–(भिखारीदास)**

50. 'अमिय, हलाहल मद भरे, सेत, स्याम, रतनार। जियत, मरत, झुकि – झुकि परत, जेहि चितवत इक बार॥' – कवि 'रसलीन' द्वारा रचित यह दोहा उनकी किस कृति में संगृहीत है?

(a) रस प्रबोध
(b) अंग दर्पण
(c) रस प्रबोध और अंग दर्पण – दोनों में
(d) इनमें से किसी में नहीं

UPPSC GIC 2021

Ans. (b) : 'अमिय, हलाहल मद भरे, सेत स्याम रतनार। जियत, मरत, झुकि झुकि प्रत, जेहि चितवत इक बार।।'
'रसलीन' द्वारा रचित यह पंक्ति उनकी 'अंग दर्पण' कृति में संगृहीत है। रसलीन का मूल नाम–सैयद गुलाम नबी था। ये मीर तफैल अहमद के शिष्य थे। रसलीन की प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं–

ग्रंथ	वर्ष	विषय निरूपण
अंग दर्पण–	1737 ई.	अंगो का उपमा, उत्प्रेक्षा से चमत्कारपूर्ण वर्णन
रस प्रबोध–	1740 ई.	1155 दोहे में रसों का वर्णन

51. 'यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।' यह काव्य पंक्ति है–

(a) घनानन्द की (b) आलम की
(c) ठाकुर की (d) बोधा की

UPPSC GIC 2021
DSSSB PGT 25.07.2018 (9:00 AM-12:00 PM)

Ans. (d) : "यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।" यह काव्य पंक्ति बोधा की है।
रीतिकालीन रीतिमुक्त कवियों की काव्य पंक्तियाँ निम्नवत् हैं–
– "यों घन आनन्द छावत भावत, जान सजीवन ओर ते आवत।
लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।।
–घनानन्द की
– "प्रेम रंग-पगे जगमगे जगे जामिनी के।
जोबन की जोति जगी जोर उमगत है।।"
–आलम की
– "सेवक सिपाही हम उन राजपूतन को।
दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरको।।"
–ठाकुर की

52. 'शोभा सरसाने न बखाने जात केहू भाँति आने हैं पहार मानो काजर के ढोय कै॥'
- यह काव्य पंक्ति किसकी है?
(a) देव (b) सेनापति
(c) मतिराम (d) चिन्तामणि
UP TGT- 2021

Ans. (b) : प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ सेनापति के ऋतु वर्णन से ली गयी हैं। सेनापति भक्तिकाल एवं रीतिकाल के संधियुग के कवि हैं। इनके पिता का नाम गंगाधर था। इनके द्वारा रचित दो ग्रंथों का उल्लेख प्राप्त होता है- (1) कवित्त रत्नाकर, (2) काव्य कल्पद्रुम।
'कवित्त रत्नाकर' 5 तरंगो में विभाजित है। इस ग्रंथ में कुल मिलाकर 394 छंद हैं।

53. 'शिवराज भूषण' में कितने अलंकारों का निरूपण हुआ है?
(a) 15 (b) 51
(c) 99 (d) 105
UP TGT- 2021

Ans. (d) : शिवराज भूषण में 105 अलंकारों का निरूपण हुआ है। 'शिवराज भूषण' कवि भूषण की प्रसिद्ध रचना है, जो एक अलंकार निरूपण ग्रंथ है। इसमें 99 अर्थालंकार, 4 शब्दालंकार और शेष दो चित्र और संकर नामक अलंकारों (कुल 105 अलंकार) के साथ-साथ कवित्त, सवैया, छप्पय आदि छंदों में शिवाजी का चरित्र चित्रण, तत्कालीन इतिहास एवं शिवाजी संबद्ध प्रसंगों का प्रामाणिक वर्णन हुआ है। चिन्तामणि और मतिराम भी महाकवि भूषण के भाई थे। महाकवि भूषण का जन्म 1613 ई. में तथा निधन 1715 ई. में माना जाता है। 'छत्रसालदशक' एवं 'शिवाबावनी' इनके अन्य उपलब्ध प्रमुख ग्रंथ हैं।

54. घनानंद की कविता में निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता नहीं पाई जाती है?
(a) भाषा की लाक्षणिकता (b) भाषा की व्यंजकता
(c) उक्ति वैचित्र्य (d) संध्या भाषा
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (d) : घनानन्द की कविता में संध्या भाषा की विशेषता नहीं पायी जाती है। घनानन्द की कविता में लौकिक प्रेम तथा विरह वर्णन की सर्वोपरि विशेषता पायी जाती है। इनकी कविता में भाषा की लाक्षणिकता, भाषा की व्यंजकता तथा उक्ति वैचित्य की विशेषता पायी जाती है। घनानन्द की कविता की एक विशेषता घनानन्द द्वारा प्रयुक्त मर्मोक्तियाँ भी हैं। घनानन्द रीतिकाल के रीतिमुक्त धारा के कवि है। इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं- सुजान सागर, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, यमुना यश, प्रीति पावस आदि।

55. रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में देव के कितने ग्रंथों का उल्लेख किया है?
(a) 22 (b) 23
(c) 24 (d) 25
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (b) : रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में देव के तेईस (23) ग्रंथों का उल्लेख किया है, जो निम्न हैं- भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, सुजान विनोद, प्रेमतरंग, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देव चरित, प्रेम चन्द्रिका, जाति विलास, रस विलास, काव्य रसायन या शब्द रसायन, सुखसागर तरंग, वृक्ष विलास, पावस विलास, ब्रह्मदर्शन पचीसी, तत्वदर्शन पचीसी, आत्मदर्शन पचीसी, जगदर्शन पचीसी, रसानंद लहरी, प्रेमदीपिका, नखशिख, प्रेमदर्शन।
सर्वप्रथम शिव सिंह सेंगर ने देव की रचनाओं की संख्या 72 बतायी। कुछ विद्वानों ने इनके 52 ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

56. घनानंद की कविता से संबंधित सही तथ्य हैं
1. घनानंद ने वियोग व्यथा की सैकड़ों अन्तर्दशाओं के मार्मिक चित्र खींचे हैं।
2. घनानंद ने सिर्फ कवित्त-सवैयों की रचना की है।
3. घनानंद के यहाँ प्रेम का विषय सांसारिक प्राणी भी हो सकता है और परमेश्वर भी।
4. घनानंद की कविता अभिधामूलक है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) 1 और 4 (b) 1 और 3
(c) 2 और 4 (d) 3 और 4
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-II

Ans. (b) : घनानंद की कविता के संदर्भ में सही तथ्य है– घनानंद ने वियोग व्यथा की सैकड़ों अन्तर्दशाओं के मार्मिक चित्र खींचे हैं तथा घनानंद के यहाँ प्रेम का विषय सांसारिक प्राणी भी हो सकता है और परमेश्वर भी।

57. तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरबसी-समान॥
इस दोहे में सखी राधा से क्या कह रही है?
(a) राधा के रूप की तारीफ कर नायक से प्रेम करने के लिए उत्कंठित करती है।
(b) नायक की बेवफाई के कारण उससे दूर रहने की सलाह देती है।
(c) नायक की धृष्टता के कारण मान करने को कहती है।
(d) राधा के रूप की तारीफ करके उसका मान छुड़ाती है।
UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (d) : तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरबसी-समान।।
इस दोहे में सखी राधा के रूप की तारीफ करके उसका मान छुड़ाती है। यह पंक्ति बिहारी द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से है।

58. निम्नलिखित में से क्या-क्या केशवदास के बारे में सही है?

1. **वे इंद्रजीत सिंह के दरबारी कवि थे।**
2. **इनकी कविता में अलंकारों का प्रयोग बहुत कम हुआ है।**
3. **इन्होंने केवल चौपाई छंद में लिखा है।**
4. **इनकी कृति 'बीरसिंहदेव चरित' है।**

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 3 और 4 (d) 1 और 4

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (d) : केशवदास इंद्रजीत सिंह के दरबारी कवि थे तथा इनकी कृति 'वीरसिंह देव चरित' है। केशवदास अलंकारवादी कवि हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- रसिकप्रिया, कविप्रिया, छंदमाला, वीरसिंह देव चरित, रामचन्द्रिका, रतनबावनी, विज्ञानगीता आदि।

59. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची –II
A. श्रृंगार मंजरी	1. मतिराम
B. साहित्यसार	2. चिंतामणि
C. रस सारांश	3. देव
D. प्रेमचंद्रिका	4. भिखारीदास

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

	A	B	C	D
(a)	3	2	1	4
(b)	2	1	4	3
(c)	4	3	2	1
(d)	1	4	3	2

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (b) : सूची-I तथा सूची-II का सही सुमेलन–

सूची-I		सूची –II
श्रृंगार मंजरी	–	चिंतामणि
साहित्यसार	–	मतिराम
रस सारांश	–	भिखारीदास
प्रेमचंद्रिका	–	देव

60. 'भाषाभूषण' का विवेच्य है–

(a) छंद (b) अलंकार
(c) रस (d) ध्वनि

UGC NET Dec. 2020/June 2021 Shift-I

Ans. (b) : 'भाषाभूषण' का विवेच्य अलंकार है। भाषाभूषण ग्रंथ के लेखक जसवंत सिंह है। इस ग्रंथ के 212 दोहो में अलंकारों का निरूपण है। जसवंत सिंह हिन्दी साहित्य के प्रधान आचार्य या शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ है- प्रबोध चन्द्रोदय, अपरोक्ष सिद्धान्त, अनुभव प्रकाश, सिद्धान्त सार आदि।

61. निम्नलिखित में से कौन वीर रस का कवि नहीं है?

(a) शिवमंगल सिंह 'सुमन' (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) भूषण (d) पद्माकर

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : 'पद्माकर' वीर रस के कवि नहीं हैं, ये रीतिकाल के रीतिबद्ध धारा के श्रृंगारी कवि हैं। पद्माकर भट्ट ने होली, फाग और त्यौहारों का वर्णन पूरी तल्लीनता के साथ किया है। इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है- 'फागु की भीर, अभीरन में गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।' शेष तीनों कवि वीर रस से सम्बद्ध कवि है।

62. निम्न में से कौन-सी रचना घनानंद की नहीं है?

(a) प्रीति पावस (b) वियोग बेलि
(c) सुजान हित प्रबंध (d) श्रृंगार विलास

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : 'श्रृंगार विलास' रचना घनानन्द की नहीं बल्कि रीतिबद्ध धारा के कवि सोमनाथ की है, इनकी अन्य रचनाएँ हैं- रस पीयूष निधि, कृष्ण लीलावती, सुजान विलास, माधव विनोद। घनानन्द रीतिमुक्त धारा के प्रमुख कवि हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द के विषय में लिखा है, 'इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व है।' सुजानसार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, यमुनायश तथा रस केलि बल्ली इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

63. निम्नलिखित में से कौन कवि और आचार्य दोनों रूप में प्रतिष्ठित थे?

(a) नाभादास (b) नंददास
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) केशवदास

DSSSB TGT (Female) 05.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : केशवदास आचार्य और कवि दोनों रुप में प्रतिष्ठित थे, इनका जन्म 1555 ई. में बुन्देलखण्ड के ओरछा नामक नगर में हुआ था। केशवदास निंबार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेन्द्र और गणपतिचन्द्र गुप्त, केशवदास को हिन्दी में रीतिकाव्य का प्रवर्तक मानते हैं जबकि आचार्य शुक्ल ने चिन्तामणि त्रिपाठी को रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना। आचार्य शुक्ल केशवदास को अलंकारवादी कवि मानते हैं।

64. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'साक्षात् रसमूर्ति' किस कवि को कहा है?

(a) घनानंद (b) पद्माकर
(c) मीरा (d) रहीम

DSSSB TGT (Male) 18.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : आचार्य शुक्ल ने घनानन्द के विषय में लिखा है- "ये साक्षात् रसमूर्ति और ब्रजभाषा काव्य के प्रधान स्तम्भों में हैं।" इनकी प्रमुख काव्य कृत्तियाँ हैं-

- सुजान सार
- इश्कलता
- विरहलीला
- वियोगबेलि
- कोकसार
- रस केलि वल्ली
- यमुनायश

65. निम्न में से किस रीतिकालीन कवि ने लक्षण ग्रन्थ की रचना नहीं की?

(a) पद्माकर (b) मतिराम
(c) भूषण (d) बिहारी लाल

DSSSB TGT (Male) 18.09.2021 Shift-II

Ans. (d) : बिहारी लाल ने लक्षण ग्रन्थ की रचना नहीं की। बिहारी की पहचान मुक्तक काव्य के कारण है। मुक्तक काव्य के सन्दर्भ में ग्रियर्सन का कथन है- "भारतीय काव्यानन्द का सम्यक रुप में यदि प्रस्फुटन हुआ है तो वह उसके मुक्तक काव्य के रूप में ही हुआ है।" बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है जिसमें कुल 719 (रत्नाकर के अनुसार 713) दोहे हैं।
शुक्ल जी ने लिखा है कि "इनके दोहे क्या हैं? रस के छोटे-छोटे छींटे है।"

66. हितोपदेश का भाषानुवाद किसने किया?
(a) पद्माकर (b) सेनापति
(c) श्रीपति (d) बोधा

DSSSB TGT (Male) 18.09.2021 Shift-II

Ans. (a) : 'हितोपदेश' का भाषा अनुवाद 'पद्माकर' ने किया। पद्माकर ने दौलत राव सिंधिया के सरदार 'ऊदाजी' के अनुरोध पर हितोपदेश का अनुवाद किया। पद्माकर की प्रमुख कृतियाँ हैं– हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगत् विनोद, प्रबोध पचासा, गंगा लहरी, प्रताप सिंह विरुदावली, कलिपच्चीसी आदि।

67. हिततरंगिणी' किसकी रचना है?
(a) ग्वाल (b) चिंतामणि
(c) कृपाराम (d) मुबारक

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'हिततरंगिणी' रचना कृपाराम की है, रचनाकाल की दृष्टि से कृपाराम रीति काव्य परम्परा के प्रथम कवि हैं। 'हिततरंगिणी' (1541 ई.) ब्रजभाषा में रचित हिन्दी सतसई परम्परा का प्रथम ग्रन्थ है। चिन्तामणि त्रिपाठी को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है। रस विलास, कविकुलकल्पतरु, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार चिन्तामणि की प्रमुख रचनाएं हैं। कवि ग्वाल ने यमुना लहरी, दूषण दर्पण, कुब्जाष्टक, रसरंग आदि काव्य कृतियों की रचना की। मुबारक द्वारा रचित प्रमुख काव्य कृतियाँ– तिलक शतक और अलक शतक है।

68. चिंतामणि की भाषा कौन-सी है?
(a) राजस्थानी (b) संस्कृत
(c) ब्रज (d) अवधी

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'चिंतामणि' रीतिकाल के रीतिबद्ध धारा के कवि हैं, इनकी काव्यभाषा विशुद्ध ब्रजभाषा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिंतामणि त्रिपाठी को रीतिकाव्य का प्रवर्तक मानते हैं। रस विलास, शृंगार मंजरी, काव्य प्रकाश इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

69. रामचंद्रिका की रचना किसने की?
(a) सेनापति (b) मोहनलाल मिश्र
(c) सुंदर (d) केशव

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I
KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (d) : 'रामचन्द्रिका' केशवदास की प्रबन्ध कृति है। केशवदास का जन्म 1555 ई. में हुआ था, ये निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, "रामचन्द्रिका छन्दों का अजायबघर है।" वहीं आचार्य शुक्ल केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहते हैं।

70. चिंतामणि किस काल के कवि थे?
(a) भक्ति काल (b) वीरगाथा काल
(c) रीति काल (d) आधुनिक काल

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : 'चिन्तामणि' रीतिकालीन कवि थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'चिन्तामणि त्रिपाठी' को रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है। चिन्तामणि सिद्धान्ततः रसवादी आचार्य थे- रस विलास, शृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरु, कृष्णचरित तथा काव्य प्रकाश इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। रीतिबद्ध धारा के कवि भूषण और मतिराम, चिन्तामणि के सहोदर भाई थे।

71. केशवदास कवि होने के साथ-साथ क्या थे?
(a) गायक (b) पाखंड-विरोधी
(c) आचार्य (d) संत

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : केशवदास अलंकारवादी आचार्य एवं कवि थे, ये निम्बार्क सम्प्रदाय' में दीक्षित थे। डॉ. नगेन्द्र केशवदास को रीतिकाल का प्रवर्तक मानते हैं। रसिकप्रिया (1591 ई.), रामचन्द्रिका (1601 ई.), कविप्रिया (1601 ई.) तथा विज्ञानगीता (1610 ई.) इनकी प्रमुख रचनाएँ है।

72. केशवदास ने एक आध्यात्मिक ग्रन्थ लिखा, उसका नाम क्या था?
(a) विज्ञान गीता (b) रसिकप्रिया
(c) रामचंद्रिका (d) कविप्रिया

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (a) : केशवदास की 'विज्ञानगीता' एक आध्यात्मिक ग्रन्थ है। यह 'कृष्ण मिश्र' के संस्कृत नाटक 'प्रबोधचन्द्रोदय' का छंदोबद्ध हिन्दी अनुवाद है। रसिकप्रिया (1591 ई.) में रसों का वर्णन है, रामचन्द्रिका (1601 ई.) राम के चरित्र पर आधारित प्रबन्ध ग्रन्थ है जबकि कविप्रिया (1601 ई.) में अलंकारों का वर्णन किया गया है।

73. 'भाव-विलास' किसकी रचना है?
(a) बिहारी (b) देव
(c) पद्माकर (d) घनानंद

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (b) : 'भाव विलास' (1689 ई.) देव की रचना है, इसमें रस एवं नायक-नायिका भेद का वर्णन किया गया है। देव रीतिबद्ध परम्परा के आचार्य एवं कवि हैं, इसका मूल नाम 'देवदत्त' था इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं- अष्टयाम, राग रत्नाकर, रस विलास, सुजान विनोद, प्रेम तरंग आदि। पद्माभरण, जगद् विनोद, प्रबोध पचासा पद्माकर भट्ट की प्रमुख रचनाएं हैं। घनानन्द की रचनाएँ हैं- सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि। बिहारी की रचना 'बिहारी सतसई' हैं।

74. यह पंक्ति किस कवि की प्रशस्ति में कही गयी है?
'चाह के रंग में भीज्यों हियो, बिछुरे मिले प्रीतम सांति न मानै।'
(a) देव (b) आलम
(c) घनानंद (d) पद्माकर

DSSSB PGT 4.7.2021 Shift-I

Ans. (c) : उपर्युक्त पंक्ति 'घनानंद' की प्रशस्ति में कही गई है-
चाह के रंग में भीज्यो हियो, बिछुरे मिले प्रीतम सांति न मानै।
भाषा प्रवीन सुछंद सदा रहै, सो घन जू के कवित्त बखानौ।।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द के विषय में कहा है, "इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ।"

75. रसराज ग्रन्थ का रचयिता कौन था?

(a) पद्माकर (b) मतिराम
(c) चिंतामणी (d) देव

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) 'रसराज' ग्रन्थ के रचयिता मतिराम हैं, इनके अन्य प्रमुख ग्रन्थ-साहित्यसार, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका तथा वृत्त कौमुदी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "मतिराम की सी रस स्निग्ध और प्रसाद पूर्ण भाव रीति का अनुसरण करने वालों में बहुत ही कम मिलती है।"

76. भूषण के काव्य की भाष क्या थी?

(a) भोजपुरी (b) राजस्थानी
(c) अवधी (d) ब्रज

GIC PGT 2015
DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) भूषण ब्रजभाषा में वीर रस के कविता करने वाले सर्वप्रथम कवि हैं। भूषण ने सारा काव्य ब्रजभाषा में रचा था। भूषण ने मुक्तक शैली में काव्य की रचना की। इनकी रचनाएं शिवराज भूषण, शिवाबावनी और छत्रसाल दशक वीर रस से ओत प्रोत है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है– "भूषण के वीर रस के उद्गार सारी जनता के हृदय की संपत्ति हुए।" "शिवाजी और छत्रशाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता।"

77. पद्माकर का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ किसे माना जाता है?

(a) प्रबोध पचासा (b) भूमिजा
(c) गीतावली (d) नल दमयंती

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) विकल्प में दी गई रचनाओं में केवल 'प्रबोध पचासा' के रचनाकार पद्माकर हैं। अन्य रचनाओं के रचनाकार इस प्रकार हैं-
भूमिजा - नागार्जुन
गीतावली – तुलसीदास
नल दमयंती – राजा रवि वर्मा

78. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'भक्तिकाल सगुण धारा फुटकल रचनाएँ' शीर्षक के अंतर्गत परिगणित किस कवि के लिए कहा है–
"............को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी जो एक कवि में होनी चाहिए। वे संस्कृत साहित्य से सामग्री लेकर अपने साहित्य और रचना कौशल की धाक जमाना चाहते थे"?

(a) गंग (b) भीखारीदास
(c) केशवदास (d) रहीम

GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (c) "केशवदास को कविहृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी जो एक कवि में होनी चाहिए। वे संस्कृत साहित्य से सामग्री लेकर अपने साहित्य और रचना कौशल की धाक जमाना चाहते थे" आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'भक्तिकाल सगुण धारा फुटकल रचनाएँ' शीर्षक के अन्तर्गत परिगणित केशवदास के लिए कहा है।

79. रचनाकाल के अनुसार निम्नलिखित काव्यकृतियों का सही क्रम है :

(a) ललित ललाम, भावविलास, शृंगार निर्णय, जगद् विनोद
(b) ललित ललाम, शृंगार निर्णय, भावविलास, जगद् विनोद
(c) ललित ललाम, जगद् विनोद, शृंगार निर्णय, भावविलास
(d) भावविलास, ललित ललाम, शृंगार निर्णय, जगद् विनोद

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2015

Ans. (a) दिए गए काव्य कृतियों का सही क्रम इस प्रकार है-

रचना	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
ललित ललाम	1664 ई.	मतिराम
भावविलास	1689 ई.	देव
शृंगार निर्णय	1750 ई.	भिखारी दास
जगत् विनोद	1803-1821 ई.	पद्माकर भट्ट

नोट- महाकवि देव का मूल नाम देवदत्त है। देव आचार्य और कवि दोनों रूपों में प्रसिद्ध हैं।

80. 'नाहीं-नाहीं करे थोरी मांगे, सब देन कहै" किस कवि की पंक्ति है?

(a) आलम (b) ठाकुर
(c) कुलपति (d) सेनापति

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (d) उपर्युक्त पंक्ति 'सेनापति' की है, जो इस प्रकार है-
'नाही नाही करे थोरी मांगे, सब देन कहै
मंगन को देखि पट देत बार बार है।
सेनापति द्वारा रचित दो ग्रंथ है- कवित्त रत्नाकर तथा काव्य कल्प-द्रुम।

81. 'सुजान विनोद' किसकी रचना है?

(a) देव (b) घनानंद
(c) चिंतामणी (d) पद्माकर

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (a) 'सुजान विनोद' देव की रचना है। इनका मूलनाम देवदत्त था। देव आचार्य और कवि दोनों रूपों में प्रसिद्ध है। देव कविता में अभिधा को महत्व देते हैं, 'काव्य रसायन' की प्रसिद्ध उक्ति है-
"अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन।।

82. 'काव्य निर्णय' का रचयिता कौन है?

(a) घनानंद (b) बिहारी
(c) मतिराम (d) भिखारीदास

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II
DSSSB PGT 24.07.2018 Shift-II

Ans : (d) 'काव्य निर्णय' के रचयिता भिखारीदास हैं, ये रीतिकाल के रीतिबद्ध धारा के कवि है। रीतिबद्ध कवियों की रचना लक्षणों और उदाहरणों से युक्त होती है। भिखारीदास की कुछ प्रमुख रचनाएँ निम्न है- रस सारांश (1742 ई.), काव्य निर्णय (1746 ई.), शृंगार निर्णय (1750 ई.) आदि।

83. केशवदास किस राजा के आश्रय में थे?

(a) बूंदी के राजा भावसिंह

(b) छत्रसाल

(c) ओरछा के राजा इन्द्रजीत सिंह

(d) शिवाजी

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (c) केशवदास ओरछा नरेश महाराज रामसिंह के भाई इन्द्रजीत सिंह के गुरु और राज्याश्रित कवि थे। केशवदास का जन्म 1555 ई० में हुआ था। ये 'निम्बार्क सम्प्रदाय' में दीक्षित थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं- रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, विज्ञान गीता, रतन बावनी आदि।

84. बिहारी ने अपने काव्य में किस छंद को अपनाया?

(a) कवित्त (b) दोहा

(c) छप्पय (d) सवैया

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) बिहारी ने अपने काव्य में दोहा छंद का प्रयोग किया है। ये रीतिसिद्ध कवि हैं। संस्कृत के आचार्य बलदेव उपाध्याय ने लिखा है, ''बिहारी दोहा के बादशाह हैं।'' बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' दोहा छंद में रचित है।

85. 'इश्कनामा' के रचयिता कौन है?

(a) देव (b) बोधा

(c) आलम (d) मतिराम

DSSSB PGT 18.7.2021 Shift-II

Ans : (b) 'इश्कनामा' के रचयिता बोधा हैं। इनका वास्तविक नाम 'बुद्धिसेन' था। बोधा रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचना-विरह वारीश है। रीतिमुक्त काव्यधारा के अन्य कवि– आलम, घनानंद, ठाकुर तथा द्विजदेव हैं।

86. 'रसलीन' का मूल नाम क्या है ?

(a) सैय्यद मुस्तफा (b) मुहम्मद सईद

(c) सईद अहमद (d) सैय्यद गुलाम नबी

UPHESC Assit. Prof. 2021

Ans. (d) : 'रसलीन' का मूलनाम 'सैय्यद गुलाम नबी' है ये रीतिकाल के 'रीतिबद्ध' शाखा के कवि हैं। प्रमुख रूप से इनकी दो रचनाएँ हैं– अंगदर्पण, रसप्रबोध। 'अंग दर्पण' में अंगो का, उपमा उत्प्रेक्षा से युक्त चमत्कारपूर्ण वर्णन है, और 'रसप्रबोध' दोहों में रसनिरूपण सम्बंधी ग्रंथ है।

87. निम्नलिखित में से रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्ति नहीं है:

(a) आचार्यत्व-प्रदर्शन

(b) आलंकारिकता के प्रति विशेष आग्रह

(c) नारी के आदर्श रूप का चित्रण

(d) नख-शिख वर्णन

Haryana TGT 2020

Ans. (c) : 'नारी के आदर्श रूप का चित्रण', रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्ति नहीं है। रीतिकालीन काव्य में नारी के वाह्य रूप, स्थूल एवं मांसल चित्रण में कवि अधिक रमें हुये थें क्योंकि इस काल में स्त्री को भोग-विलास' की वस्तु मात्र समझा जाता था।

रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृतियाँ:-

1. आचार्यत्व-प्रदर्शन 2. आश्रयदाताओं की प्रशंसा 3. आलंकारिकता के प्रति विशेष आग्रह 4. ब्रजभाषा की प्रधानता।

88. ''मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाई परैं, स्यामु हरित-दुति होइ।।''
में रेखांकित अंश से संकेतित नहीं है

(a) मन के कलुष का दूर होना

(b) गौरवर्णीय राधा का श्यामवर्णी होना

(c) श्याम रंग का हरित वर्ण होना

(d) कृष्ण की कान्ति कम होना

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (b) : रेखांकित अंश में 'गौरवर्णीय राधा का श्यामवर्णी होना' संकेतित नहीं है। प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी कहते हैं कि वह चतुर राधिका जी मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके पीली आभा वाले (गोरे) शरीर की झाँई यानि (प्रतिबिम्ब) पड़ने से श्याम वर्ण के कृष्ण हरित वर्ण की द्युति वाले अर्थात् हरे रंग के हो जाते हैं अर्थात् श्रीकृष्ण भी फीकी कान्ति वाले हो जाते हैं। कविवर बिहारी (1595-1663 ई.) निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हुए तथा इनके गुरू का नाम नरहरिदास था। बिहारी रीतिकाल की 'रीतिसिद्ध' काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं तथा ये जयपुर के महाराजा जयसिंह के आश्रित थे। श्री राधाचरण गोस्वामी ने बिहारी को 'पीयूषवर्षी मेघ' की उपमा दी। बिहारीलाल की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' दोहा छंद में रचित है। इसकी भाषा परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा है।

89. ''सनि कज्जल चख झख लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु।
क्यों न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सबु देहु।।''
इस दोहे में बिहारी के किस विशिष्ट ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है?

(a) भक्ति विषयक ज्ञान (b) चिकित्सा विषयक ज्ञान

(c) ज्योतिष विषयक ज्ञान (d) प्रकृति विषयक ज्ञान

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (c) : इस दोहें में बिहारी के 'ज्योतिष विषयक ज्ञान' का परिचय प्राप्त होता है। शेष विकल्प गलत है। प्रस्तुत दोहे में सखी नायिका से कह रही है कि शनि ग्रह के नेत्र रूपी मीन राशि में स्थित होने से शुभ मुहूर्त में जो स्नेह रूपी शिशु उत्पन्न हुआ है, वह राजा होकर संम्पूर्ण शरीर रूपी सुंदर प्रदेश को क्यो नहीं भोगेगा? इस दोहे में सखी अपनी वाक्-चातुरी द्वारा नायिका के ह्रदय में नायक के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का प्रयास करती है। कहा जाता है कि शनि ग्रह जब मीन राशि में हो उस समय जिस शिशु का जन्म होता है, वह शिशु ज्योतिष के अनुसार कीर्तिमान राजा होता है। बिहारी को रामचन्द्र शुक्ल ने रसवादी तथा डा. नगेन्द्र ने ध्वनिवादी कवि माना है। बिहारी के काव्य को पद्मसिंह शर्मा ने 'शक्कर की रोटी' कहा है।

90. ''तो पर वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उरबसी ह्वै उरबसी- समान।।''-
में रत्नाकरजी ने 'उरबसी' का क्रमशः अर्थ किया है

(a) अप्सरा विशेष, उर में बसी, भूषण विशेष

(b) उर में बसी, अप्सरा विशेष, भूषण विशेष

(c) भूषण विशेष, उर में बसी, अप्सरा विशेष

(d) अप्सरा विशेष, भूषण विशेष, उर में बसी

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : रत्नाकर जी ने उरबसी का क्रमशः अप्सरा विशेष, उर में बसी, भूषण विशेष अर्थ निर्धारण किया है। यह दोहा कविवर बिहारी द्वारा रचित है। इस दोहे में कृष्ण कहते है कि हे सुजान राधिके, तुम यह समझ लो की मैं तुम्हारे रुप-सौन्दर्य पर उर्वशी जैसी नारी को भी न्यौछावर कर सकता हूँ। कारण यह है कि तुम तो मेरे हृदय में उस प्रकार निवास करती हो, जिस प्रकार उर्वशी नामक आभूषण हृदय में निवास करता है। इस दोहे में कवि ने 'उरबसी' शब्द के द्वारा यमक अलंकार का चमत्कार दिखाया है। प्रस्तुतीकरण की शैली आलंकारिक तथा चमत्कारिक है। 'बिहारी सतसई पर जगन्नाथ दास रत्नाकर ने 'बिहारी रत्नाकर' (1921 ई.) नामक टीका लिखी जो हिन्दी खड़ी बोली की सर्वश्रेष्ठ टीका है। 'बिहारी सतसई' पर कवि 'हाल' कृत 'गाथा सप्तशती' अमरूक कृत 'अमरुक शतक' तथा गोवर्धनाचार्य कृत 'आर्या-सप्तशती' (संस्कृत) का प्रभाव पड़ा है। बिहारी के समस्त दोहों की संख्या 719 है। किन्तु जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने इनके दोहो की संख्या 713 माना है।

91. बिहारी के किस दोहे में भक्ति का सन्दर्भ नहीं है?

(a) जम-करि-मुँह-तरहरि, पर्यौ, इहिं धरहरि चित लाउ।
विषय-तुषा परिहरि अजौं, नरहरि के गुन गाउ।।

(b) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाईं परैं, स्यामु हरित-दुति होई।।

(c) अजौं तर्यौना ही रह्यौ श्रुति सेवत इक रंग।
नाक-बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतनु कैं संग।।

(d) फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु टुटी लाज की लाव।
अंग अंग छबि झौंर मैं भयौ भौंर की नाव।।

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : बिहारी के 'फिरि फिरि चितु उत............ भयौ भौंर की नाव' दोहे में भक्ति का सन्दर्भ नहीं है। इस दोहे में पूर्वानुरागिनी नायिका अतरंगिनी सखी से अपनी स्नेह-दशा का वर्णन करती है। शेष दोहे में बिहारी के भक्ति का सन्दर्भ विद्यमान है। बिहारी की ऊहात्मक उक्तियों पर फारसी कविता का प्रभाव माना जाता है। संस्कृत के आचार्य बलदेव उपाध्याय ने लिख़ा है, हाल 'गाथा' के, गोवर्धन 'आर्या' के तथा बिहारी 'दोहा' के बादशाह हैं।'' बिहारी सतसई पर 50 से अधिक टीकाओं का उल्लेख है। बिहारीलाल के पुत्र कृष्णलाल कवि ने बिहारी सतसई की टीका सर्वप्रथम सवैया छंद में ब्रजभाषा में लिखी। आचार्य शुक्ल ने बिहारी के मुक्तक के संदर्भ में लिखा है ''यदि प्रबन्धकाव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।'' आचार्य शुक्ल के अनुसार 'बिहारी सतसई' पर सबसे उत्तम और प्रामाणिक टीका जगन्नाथदास 'रत्नाकर' कृत 'बिहारी रत्नाकर' है। पं. परमानन्द ने 'श्रृंगार सप्तशती' शीर्षक से संस्कृत में तथा मुंशी देवीप्रसाद 'प्रीतम' ने 'गुलदस्त बिहारी' के कुछ दोहों पर 'कुंडलिया छंद' की रचनाएँ की हैं। 'बिहारी सतसई की भूमिका' के रचनाकार पद्म सिंह शर्मा हैं।

92. ''स्वच्छन्द प्रवाह के प्रमुख कर्त्ताओं में रसखान, आलम, ठाकुर, घनानन्द, बोधा और द्विजदेव का नाम लिखा जा सकता है। × × × × इन सबमें श्रेष्ठ घनानन्द ही प्रतीत होते हैं।'' कथन किसका है?

(a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) मनोहरलाल गौड़ (d) डॉ. नगेन्द्र

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (a) : ''स्वच्छन्द प्रवाह................ इन सबमें श्रेष्ठ घनानन्द ही प्रतीत होते है।'' कथन विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का है। घनानन्द (1689-1739ई.) दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले के मीर मुंशी थे। दिल्ली से निकाले जाने के पश्चात ये वृंदावन आकर निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हुए। घनानन्द को 'रीतिकाल का साक्षात् रसमूर्ति' तथा 'प्रेम की पीर' का कवि कहा जाता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने घनानंद की सम्पूर्ण रचनाओं का संग्रह 'घनानन्द ग्रंथावली' शीर्षक से किया। इसमें कुल 502 छन्द हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है ''प्रेम की पीर ही को लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ प्रेममार्गी का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नही हुआ।''

93. ''मीत सुजान अनीत करौ जिन, हा हा न हूजियै मोहि अमोही।

डीठि कौं और कहूं नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की दोही।

एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान बटोही।

हौं घनआनन्द जीवनमूल, दई कित प्यासनि मारत मोही।''

उक्त सवैये के सन्दर्भ में किस विकल्प में विरोधी भाव नहीं है?

(a) मीत- अनीत (b) मोही- अमोही
(c) जीवनमूल- प्यासनि (d) डीठि- ठौर

RPSC Assit. Prof. 2020 Paper-I

Ans. (d) : उक्त सवैये के संदर्भ में विकल्प (d) 'डीठि-ठौर' में विरोधी भाव नही है। शेष विकल्पों में विरोधीभाव व्यक्त है। कवि घनानंद के इस छंद में सुजान के भावनात्मक अत्याचारों का कड़ा विरोध किया गया है। घनानंद की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्नलिखित है- सुजानसार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, कृपाकंद, रस केलि वल्ली, यमुनायश। 'विरहलीला' और 'इश्कलता' फारसी के छंद में लिखा गया है। इनका प्रमुख अलंकार 'विरोधाभास' है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने घनानंद की रचनाओं का संग्रह 'सुंदरी तिलक' शीर्षक से प्रकाशित कराया था। ब्रजनाथ ने घनानन्द की रचनाओं का सर्वप्रथम संकलन किया। घनानन्द रीतिकाल की 'रीतिमुक्त काव्यधारा' के प्रतिनिधि कवि हैं। घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर, द्विजदेव, रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रसिद्ध कवि हैं।

94. निम्न में से कौन-सा ग्रन्थ केशव का नहीं है?

(a) रतन बावनी (b) विज्ञान गीता
(c) जहाँगीर जसचंद्रिका (d) भाषा भूषण

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (d) : 'भाषा भूषण' ग्रंथ केशव का नहीं है। 'सिद्धान्त-बोध', 'आनन्द विलास' तथा 'भाषा भूषण' ग्रथों की रचना महाराजा जसवंत सिंह ने की। केशवदास की कृतियाँ हैं– 'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया', 'रामचन्द्रिका', 'रतन बावनी', 'जहाँगीर जस चन्द्रिका', 'विज्ञान गीता', 'छंदमाला' आदि। आचार्य शुक्ल ने केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'रामचन्द्रिका' को ''छंदों का अजायबघर'' कहा है।

95. **रीतिकाल के कौन-से प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु के पिता थे?**

(a) गिरधर कविराय (b) गोपाल चंद्र गिरिधरदास
(c) केशव (d) बेनी प्रवीन

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (b) : रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि गोपाल चन्द्र गिरिधरदास भारतेन्दु के पिता थे।

भारतेन्दु ने इनके सम्बन्ध में लिखा है कि–

जिन श्री गिरिधरदास कवि रचे ग्रन्थ चालीस।

हिन्दी साहित्य का प्रथम नाटक 'नहुष' लिखने का श्रेय प्राप्त है। गोपालचंद्र गिरिधरदास ने दो काव्य कृतियों (1) भारती भूषण (2) छंदोवर्णन की रचना किया।

96. **'कवित्त रत्नाकर' में कितने अध्याय हैं?**

(a) नौ (b) पाँच
(c) सात (d) छः

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (b) : 'कवित्त रत्नाकर' सेनापति का ग्रंथ है। इसमें पाँच शीर्षक अथवा अध्याय है, जिन्हें तरंग की संज्ञा दी गयी है। इसमें 394 छंद में राम कथा का वर्णन है। इनकी एक अन्य रचना- काव्य कल्प द्रुम है।

97. **बिहारी सतसई में कितने दोहे हैं?**

(a) 700 (b) 713
(c) 719 (d) 750

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I
UP TGT 2009

Ans. (b) : 'बिहारी सतसई' में 713 दोहे हैं। बिहारी के समस्त दोहों की संख्या 719 है किन्तु जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने इनके दोहों की संख्या 713 माना है। 'बिहारी सतसई' की लोकप्रियता का आधार 'कल्पना की समाहार शक्ति' है।

आचार्य शुक्ल– "जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी, उतनी ही वह मुक्तक रचना में सफल होगा।"

बिहारी सतसई के सन्दर्भ में किसी ने ठीक ही कहा है–

"सतसैया के दौहरे, ज्यौं नावक के तीर।
देखन में छोटन लगैं, भेदे सकल शरीर।"।।

98. **रीतिकाल को अलंकृत काल की संज्ञा किसने दी?**

(a) मिश्रबंधु (b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) रामचंद्र शुक्ल (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (a) : रीतिकाल को 'अलंकृत काल' की संज्ञा 'मिश्र बन्धुओं' ने दी।

मिश्र बन्धुओं का काल विभाजन–

(1) प्रारम्भिक काल
- पूर्व प्रारम्भिक काल (700-1343 वि.)
- उत्तरारम्भिक काल (1344-1444 वि.)

(2) माध्यमिक काल
- पूर्व माध्यमिक काल (1445-1560 वि.)
- प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561-1680 वि.)

(3) अलंकृत काल
- पूर्वालंकृत काल (1681-1790 वि.)
- उत्तरालंकृत काल (1791-1889 वि.)

(4) परिवर्तन काल (1890-1924 वि.)

(5) वर्तमान काल (1926 वि. से अब तक)

99. **निम्न में से 'फूलमंजरी' कृति की रचना किसने की?**

(a) गजानंद (b) शिवानन्द
(c) हरिहर स्वामी (d) मतिराम

DSSSB PGT Hindi (Male) 18.07.2021 Shift-I

Ans. (d) : 'फूलमंजरी' की रचना मतिराम ने की थी। इसमें 60 दोहों में किसी एक फूल का वर्णन किया गया है। रस सिद्ध कवियों और आचार्यों में इनका प्रमुख स्थान है। ये चिंतामणि के सगे भाई हैं।

आचार्य शुक्ल– "रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों में पद्माकर को छोड़कर और किसी कवि में मतिराम की सी चलती भाषा और सरल व्यंजना नहीं मिलती है।"

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी– 'गृहस्थी का कवि' कहा है।

मतिराम ने जहाँगीर के आदेश पर 'गुल-ए-अफशा (फूल मंजरी) लिखा। इनकी रचनाएँ– फूलमंजरी, ललित ललाम (अलंकार ग्रंथ) रस राज, साहित्य सार, सतसई, लक्षण शृंगार, अलंकार पंचाशिका।

100. **केशवदास का अलंकार पर आधारित ग्रंथ है-**

(a) विज्ञान गीता (b) रतनबावनी
(c) रसिक प्रिया (d) कविप्रिया

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (d) : केशवदास का अलंकार पर आधारित ग्रंथ 'कविप्रिया' है। 'विज्ञानगीता' में प्रबोधचन्द्रोदय का अनुवाद है। 'रतनबावनी' डिंगल शैली का एक राजनीतिक ग्रंथ है। यह एक प्रबंध काव्य है। 'रसिक प्रिया' एक रीतिग्रंथ है जिसमें रस (शृंगार) का वर्णन है। ये चारों रचनाएँ केशवदास की हैं।

101. **निम्नलिखित रचनाओं को उनके रचनाकारों से साथ सुमेलित कीजिए:**

सूची-I (रचनाएँ)	सूची-II (रचनाकार)
(A) काव्य प्रकाश	(i) देव
(B) रसराज	(ii) भिखारीदास
(C) रसविलास	(iii) रसलीन
(D) रस सारांश	(iv) चिन्तामणि
	(v) मतिराम

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(a) (A)-(iv); (B)-(v); (C)-(i); (D)-(ii)
(b) (A)-(i); (B)-(ii); (C)-(iii); (D)-(iv)
(c) (A)-(ii); (B)-(iv); (C)-(v); (D)-(i)
(d) (A)-(iii); (B)-(iv); (C)-(v); (D)-(ii)

UGC NET June. 2019

Ans. (a) : रचनाओं एवं रचनाकारों का सही सुमेल इस प्रकार है-

रचनाएँ	रचनाकार
काव्य प्रकाश	चिन्तामणि
रसराज	मतिराम
रसविलास	देव
रस सारांश	भिखारी दास
रस प्रबोध	रसलीन

102. 'मेरी भव बाधा हरौ' दोहा निम्न में से किस कवि का है?
(a) बिहारी (b) रहीम
(c) कबीर (d) रसखान
MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : 'मेरी भव बाधा हरौ' नामक दोहा कविवर बिहारी का है। अतः पूर्ण दोहा इस प्रकार है-
मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाई परै, स्याम हरित दुति होइ।।

103. ''ये हिन्दी के प्रधान आचार्यो में माने जाते है और इनका 'भाषाभूषण' अलंकार ग्रंथ एक बहुत ही प्रचलित पाठयग्रंथ रहा है।''
रामचन्द्र शुक्ल ने उपर्युक्त बात किस रीतिकालीन कवि के विषय में कही है?
(a) मतिराम (b) देव
(c) महाराज जसवंत सिंह (d) पद्माकर
UGC NET June 2019

Ans. (c) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उपर्युक्त बात रीतिकालीन कवि महाराज जसवंत सिंह के विषय में कही है। जसवंत सिंह मारवाड़ नरेश गजराज सिंह के द्वितीय पुत्र थे। 'भाषा भूषण' ग्रंथ अलंकारों का पाठ्य ग्रंथ है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- सिद्धान्त बोध, अनुभव प्रकाश, सिद्धान्तसार, अपरोक्ष सिद्धान्त, आनन्द विलास, प्रबोध चन्द्रोदय आदि।
मतिराम की रचनाएँ- फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी आदि।

104. ''यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था, वैसा और किसी कवि का नहीं।'' रामचंद्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के संबंध में है–
(a) कबीरदास (b) तुलसीदास
(c) भारतेन्दु हरिश्चंद्र (d) घनानंद
LT Hindi 2018

Ans : (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में रीतिकालीन कवि घनानन्द के भाषा के सन्दर्भ में लिखते हैं कि–
''यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था, वैसा और किसी कवि का नहीं।''

105. भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का सर्वाधिक उपयोग निम्नलिखित में से किस कवि ने किया है–
(a) बिहारी (b) चिन्तामणि
(c) भूषण (d) घनानंद
LT Hindi 2018
GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans : (a) भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का सर्वाधिक उपयोग रीति-सिद्ध कवि बिहारी लाल ने किया है। बिहारी ने 719 दोहों का एक मात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' की रचना किया है। जबकि चिंतामणि तथा भूषण दोनों ही रीतिबद्ध कवि हैं और घनान्द रीतिमुक्त कवि हैं।

106. इनमें से कौन-सा जोड़ा सही है?
(a) चिंतामणि - काव्य प्रकाश (b) मतिराम - रस रहस्य
(c) भूषण - अंगदर्पण (d) रसलीन - शिवा बावनी
UP TGT 2016

Ans. (a) : सही सुमेल इस प्रकार है-

रचनाकार		रचना
चिन्तामणि	–	काव्य प्रकाश
मतिराम	–	रसराज
भूषण	–	शिवा बावनी
रसलीन	–	रस प्रबोध
कुलपति मिश्र	–	रस रहस्य
रसलीन	–	अंगदर्पण

107. रीतिकाल में किस रस की प्रधानता काव्य में रही है?
(a) शृंगार (b) भक्ति
(c) शान्त (d) रौद्र
UP TGT 2016

Ans. (a) : रीतिकाल में शृंगार रस की प्रधानता काव्य में रही है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने तो इसी विशेषता को ध्यान में रखते हुए इस काल का एक नाम 'शृंगार काल' रखा है। इस काल में रस एवं उसके विविध अवयवों का निरूपण, नायक-नायिका भेद एवं उनका वर्णन होता रहा है। लक्षण ग्रंथों की रचना होती रही है।

108. इनमें से कौन-सी कृति केशवदास की नहीं है?
(a) रामचंद्रिका (b) रसिकप्रिया
(c) अनेकार्थ मंजरी (d) विज्ञान गीता
UP TGT 2016

Ans. (c) : दी गई रचनाओं में 'अनेकार्थ मंजरी' केशवदास की रचना नहीं है बल्कि यह नन्ददास की रचना है। नन्ददास की अन्य रचनाएँ हैं- रसमंजरी, दशमस्कंध भाषा, श्यामसगाई, गोवर्धन लीला, सुदामा चरित, विरहमंजरी, रूपमंजरी, रुक्मिणी मंगल, रासपंचाध्यायी, भँवरगीत, सिद्धान्त पंचाध्यायी। केशवदास की कृतियाँ है- रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छन्दमाल।

109. केशवदास को किस वर्ग में रखना समीचीन है?
(a) रीतिबद्ध कवि (b) रीतिमुक्त कवि
(c) रीतिसिद्ध कवि (d) स्वच्छंदतावादी कवि
UP TGT 2016

Ans. (a) : दिये गये विकल्प के अनुसार केशवदास को रीतिबद्ध कवि वर्ग में रखना समीचीन है। डॉ. नगेन्द्र ने रचनाकार-व्यक्तित्व की समृद्धि की दृष्टि से केशवदास (1555-1617 ई.) को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'हिन्दी साहित्य का अतीत' में रीतिकाल को 'शृंगार काल' की संज्ञा से अभिहित किया है और केशवदास को रीतिबद्ध कवियों की श्रेणी में शीर्ष पर रखा है।

110. शिवा बावनी के रचयिता का नाम है-
(a) जसवंत सिंह (b) केशव
(c) भूषण (d) पद्माकर
UP TGT 2016

Ans. (c) : 'शिवा बावनी' के रचयिता रीतिकाल में वीर रस की कविता रचने वाले एकमात्र कवि भूषण है। चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि ''वे हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि है।'' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- शिवराज भूषण (1673 ई.), शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।

111. निम्नलिखित कवियों के जीवन काल का सही आरोही क्रम है–
(a) भूषण, मतिराम, बिहारी, देव
(b) मतिराम, भूषण, बिहारी, देव

(c) बिहारी, मतिराम, भूषण, देव
(d) बिहारी, भूषण, मतिराम, देव

UPHSC असिस्टेन्ट प्रोफेसर 2016

Ans : (d) दिये गये कवियों के जीवन काल का सही आरोही क्रम है–

कवि	**समय**
बिहारी	1595 ई.
भूषण	1613 ई.
मतिराम	1617 ई.
देव	1673 ई.

112. निम्नलिखित रचनाकारों में से 'ललित ललाम' के रचनाकार हैं

(a) केशवदास (b) भिखारीदास
(c) मतिराम (d) कृपाराम

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (c) मतिराम के काव्य ग्रंथ- फूलमंजरी, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी, लक्षण शृंगार तथा साहित्य सार।
केशवदास के काव्य ग्रंथ- रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छंदमाल
भिखारीदास के काव्य ग्रंथ- नाम कोश (शब्दनाम कोश), रस सारांश, छंदार्णव पिंगल, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, विष्णु पुराण भाषा, शतरंजशतिका, अमर कोश।
कृपाराम के काव्य ग्रंथ- हिततरंगिणी (एक मात्र काव्य ग्रंथ)

113. इनमें से कौन सी रचना देव की नहीं है?

(a) रसमंजरी (b) रसविलास
(c) अष्टयाम (d) भवानीविलास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (a) 'रसमंजरी' देव की रचना नहीं है बल्कि भक्तिकालीन अष्टछापी कवि नंददास की रचना है। शेष तीनों देव की रचनाएँ है।
देव के काव्य ग्रंथ- भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देवचरित, प्रेमचंद्रिका, जाति विलास, रस विलास, शब्द या काव्य रसायन, सुखसागर तरंग, देवमाया प्रपंच, देवशतक, सुजान विनोद तथा प्रेम तरंग।
नन्ददास के काव्य ग्रंथ- अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, सुदामा चरित, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, प्रेमबारह खड़ी, श्यामसगाई, रुक्मिणीमंगल, भँवरगीत, रासपंचाध्यायी, सिद्धांत पंचाध्यायी, दशमस्कंध भाषा।

114. इनमें से कवि घनानंद से सम्बन्धित कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) उनकी कविता तत्कालीन दरबारी कवियों से सर्वथा भिन्न थी
(b) वे 'प्रेम की पीर' के कवि थे
(c) भाषा की 'अभिधा' शक्ति का सुंदर प्रयोग उन्होंने अपने काव्य में किया है
(d) 'विरोधाभास' उनका अत्यंत प्रिय अलंकार

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (c) "भाषा की 'अभिधा' शक्ति का सुंदर प्रयोग उन्होंने अपने काव्य में किया है।" घनानंद के संबंध में यह कथन सही नहीं है। घनानंद तथा उनके काव्य सम्बन्ध में–
(i) उनकी कविता तत्कालीन दरबारी कवियों से सर्वथा भिन्न थी।
(ii) वे 'प्रेम की पीर' के कवि थे।
(iii) 'विरोधाभास' उनका अत्यंत प्रिय अलंकार है।
(iv) लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य की जो छटा इनमें दिखाई पड़ती है, वो किसी और कवि में नहीं।
(v) इनके काव्य में विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व है।
(vi) प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण एक धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।

115. 'रीतिकाल' के नामकरण के संदर्भ में 'रीति' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

(a) गुणों पर आधारित विशेष प्रकार की पद रचना।
(b) अलंकार, रस, गुण, ध्वनि, नायिका भेद आदि काव्यशास्त्रीय प्रणालियों पर आधारित रचनाएँ।
(c) सामाजिक रीति-रिवाजों से सम्बन्धित रचनाएँ।
(d) वैदर्भी, गौड़ी आदि रीतियों की व्याख्यापरक रचनाएँ।

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (b) रीतिकाल के नामकरण के संदर्भ में 'रीति' शब्द के अर्थ में अलंकार, रस, गुण, ध्वनि, नायिका भेद आदि काव्यशास्त्रीय प्रणालियों पर आधारित रचनाएँ' प्रयुक्त हुई है। लक्षण और उदाहरणों का प्रयोग, स्वतंत्र काल रचनाएँ तथा साहित्यिक रूढ़ियों से मुक्त रचनाएँ आदि रीतिकाल की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं।

116. इनमें से महाकवि बिहारी और उनकी 'सतसई' से सम्बन्धित कौन सा कथन सही नहीं है?

(a) प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण उनकी बहुत बड़ी विशेषता है।
(b) लोकज्ञान, काव्यज्ञान और शास्त्रज्ञान-तीनों का सुंदर समन्वय 'सतसई' में देखने को मिलता है।
(c) अनुभावों के चित्रण में बिहारी सिद्धहस्त थे।
(d) 'सतसई' में साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा-2015

Ans. (a) "प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण उनकी बहुत बड़ी विशेषता है।" कथन बिहारी के संबंध में सही नहीं है। महाकवि बिहारी तथा उनकी 'सतसई' से सम्बन्धित कथन-
(i) बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' दोहा छंद में रचित है। इसकी भाषा परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा है।
(ii) 'बिहारी सतसई' में लोकज्ञान, काव्यज्ञान और शास्त्रज्ञान तीनों का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है।
(iii) बिहारीलाल अनुभावों के चित्रण में सिद्धहस्त थे।
(iv) 'बिहारी सतसई' प्रबन्धकाव्य की एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।
(v) बिहारी की कविता शृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुंचती नीचे ही रह जाती है।

117. "लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।"
यह काव्य पंक्ति किस कवि द्वारा रचित है?

(a) केशवदास (b) मतिराम
(c) नंददास (d) घनानंद

UK PSC Lecturer 2020
NVS TGT 18.9.2019
DSSSB PGT 25.7.2018 (9.00 m - 12.00 pm)

GIC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2017
UPPCS GIC 2017
Chhattisgarh Asst. Prof. 2014
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा 2014 (Paper-I)
UP TGT 2005

Ans. (d) : ''लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।'' यह काव्य पंक्ति कवि घनानन्द द्वारा रचित है। शेष इस प्रकार हैं–

पंक्ति	लेखक
भाषा बोलि न जानहि जिनके कुल के दास। भाषा कवि भो मंदमति तेहि कुल केशवदास।।	–केशवदास
नृपति नैन कमलनि वृथा, चितवत बासर जाहि। हृदय कमल में हरि लै, कमलमुखी कमलाहि।।	–मतिराम
ताही छिन उडुराज उदित रस-रास सहायक। कुंकुम-मंडित-बदन प्रिया जनु नागरि-नायक।।	–नंददास

118. रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में इनमें से किस कवि को 'हिंदू जाति का प्रतिनिधि कवि' कहा है?

(a) भूषण (b) सूदन
(c) लाल कवि (d) रहीम

UPPCS GIC 2017

Ans. (a) : रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में कवि 'भूषण' को 'हिंदू जाति का प्रतिनिधि कवि' कहा है। भूषण की रचनाएँ हैं-शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।

119. निम्नलिखित लक्षण ग्रंथों को उनके रचनाकारों से सुमेलित कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर से चयन कीजिए:

लक्षण ग्रंथ	रचनाकार
अ. भाषा भूषण	1. भिखारीदास
ब. ललित ललाम	2. पद्माकर
स. काव्य निर्णय	3. मतिराम
द. जगद्विनोद	4. जसवंत सिंह

कूट:

	अ	ब	स	द
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	1	3
(c)	2	4	3	1
(d)	4	3	1	2

UPPCS GIC 2017

Ans. (d) : लक्षण ग्रंथों एवं उनके रचनाकारों से सुमेलित कूट इस प्रकार हैं–

लक्षण ग्रंथ	रचनाकार
भाषा भूषण	जसवंत सिंह
ललित ललाम	मतिराम
काव्य निर्णय	भिखारीदास
जगद्विनोद	पद्माकर

120. ''ये ब्रजभाषा के मतिराम जैसे कवियों के समकक्ष हैं और कहीं-कहीं तो भाषा और भाव के माधुर्य में पद्माकर तक से टक्कर लेते हैं।'' आचार्य शुक्ल ने यह किस कवि के लिए कहा है?

(a) बेनी प्रवीन (b) बोधा
(c) ग्वाल (d) भूषण

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (a) : ''ये ब्रजभाषा के मतिराम ऐसे कवियों के समकक्ष हैं और कहीं-कहीं तो भाषा और भाव के माधुर्य में पद्माकर तक से टक्कर लेते हैं।'' आचार्य शुक्ल ने यह 'बेनी प्रवीन' कवि के लिए कहा है। बेनी प्रवीन की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्न है– शृंगार भूषण, नवरस तथा नानाराव प्रकाश। इन्होंने 'नानाराव प्रकाश' नामक अलंकार ग्रंथ कविप्रिया तरंग के ढंग पर लिखा था।

121. ''इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ है। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व हुआ। .... ये वियोग शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं।'' आचार्य रामचंद्र शुक्ल का उक्त कथन किस कवि के विषय में है?

(a) देव (b) पद्माकर
(c) घनानंद (d) आलम

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017
UP TGT 2004

Ans. (c) : ''इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व हुआ। .... ये वियोग शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं।'' आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन 'घनानंद' के विषय में है।

122. देव माने जाते हैं–

(a) रसवादी आचार्य (b) अलंकारवादी आचार्य
(c) रीतिवादी आचार्य (d) वक्रोक्तिवादी आचार्य

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017
GIC PGT 2009
Ashram Paddhati PGT 2012

Ans. (a) : 'देव' रसवादी आचार्य माने जाते हैं। इनका वास्तविक नाम 'देवदत्त' हैं। इटावा के निवासी थे। इनके कुल 72 ग्रन्थ हैं। इनकें प्रमुख ग्रंथ है– भाव विलास, भवानी विलास, अष्टयाम, रस विलास, प्रेम चन्द्रिका, राग-रत्नाकर सुजान विनोद, शिवाष्टक, आत्मदर्शन पचीसी आदि। हस्तलिखित ग्रन्थ प्रेमतरंग, कुशल विलास, जाति विलास, देव चरित्र, देवमायाप्रपंच हैं।

123. बिहारी को किस श्रेणी के रीतिकवियों में माना जाता है?

(a) रीतिमुक्त कवि (b) रीतिबद्ध कवि
(c) रीतिसिद्ध कवि (d) रीत्यक्रमित कवि

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (c) : बिहारी को 'रीतिसिद्ध कवि' श्रेणी के रीतिकवियों में माना जाता है। बिहारीलाल का जन्म 1595 ई. में बसुआ 'गोविन्दपुर' ग्वालियर मध्य प्रदेश में हुआ। बिहारी के पिता राजदरबार में रहे। बिहारी की लोकप्रियता का कारण उनका मुक्तक काव्य है। जॉर्ज ग्रियर्सन ने मुक्तक काव्य की प्रशंसा में कहा- ''भारतीय काव्यानंद का सम्यक रूप में भी प्रस्फुटन हुआ है तो उसके मुक्तक काव्य में ही हुआ है।''

124. निम्नलिखित रचनाओं और रचनाकारों में से सही विकल्प है:

(a) कर्णाभरण– याकूब खाँ
(b) रतनहजारा– कुलपति
(c) भाषा-भूषण – जसवंत सिंह
(d) रस रहस्य –मतिराम

GDC प्रवक्ता भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (c) : रचना और रचनाकारों का सही विकल्प 'भाषा-भूषण – जसवंत सिंह हैं।' इनके अन्य विवरण–

रचना		रचनाकार
कर्णाभरण	–	करनेस कवि
रतनहजारा	–	रसनिधि (पृथ्वी सिंह)
रस रहस्य	–	कुलपति मिश्र
रस भूषण	–	याकूब खाँ
ललित ललाम	–	मतिराम

125. "इससे इस काल को रस के विचार से कोई शृंगारकाल कहे तो कह सकता है।" रीतिकाल के लिए यह कथन किसका है?

(a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) रामचंद्र शुक्ल
(c) कृष्णबिहारी मिश्र (d) मिश्रबंधु
(e) जार्ज ग्रियर्सन

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (b) : "इससे इस काल को रस के विचार से कोई शृंगारकाल कहे तो कह सकता है।" रीतिकाल के लिए यह कथन रामचंद्र शुक्ल का है। विकल्प में दिए हुए विद्वानों द्वारा रीतिकाल के नामकरण में दिए गए नाम-

प्रयोक्ता	नाम
रामचंद्र शुक्ल	रीतिकाल
मिश्रबंधु	अलंकृतकाल
जार्जग्रियर्सन	रीतिकाव्य
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	शृंगारकाल

126. पर कारज देह को धारे फिरौ, परजन्य! जथारथ ह्वै दारसौ।
निधि नीर सुध के समान करौ, सबही विधि सुंदरता सरसौ।
घनानंद जीवनदायक हो, कबौं मेरियौ पीर हिये परसौ।
उपर्युक्त पंक्तियों किसे संबोधित हैं?

(a) समुद्र को (b) बादल को
(c) गंगा को (d) सुजान को
(e) कृष्ण को

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (b) : "पर कारज देह को धारे फिरौ, परजन्य! .... पीर हिये परसौ"। उपर्युक्त पंक्तियाँ 'बादल को' संबोधित हैं। इन पंक्तियों के रचयिता घनानंद है। घनानंद रीतिकाल के रीतिमुक्त धारा के प्रमुख कवि है। घनानंद की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं- सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, कृपाकंद, रसकेलिवल्ली, यमुनायश। इनकी 'विरहलीला' ब्रजभाषा में है किन्तु उसमें फारसी छंद का प्रयोग है।

127. रीतिकाल में वीरकाव्य लिखने के लिए सर्वाधिक प्रसिद्धि किसे मिली?

(a) केवश (b) मतिराम
(c) भूषण (d) पद्माकर
(e) देव

DSSSB PGT 20.07.2018 (2 pm-5 pm)
NVS PGT 2014
Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (c) : रीतिकाल में वीरकाव्य लिखने के लिए सर्वाधिक प्रसिद्धि भूषण को मिली। ये शिवाजी और छत्रसाल के आश्रय में रहते थे। भूषण वीर रस के कवि हैं। चित्रकूट के सोलंकी राजा ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी। इनकी रचना शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक है। **मतिराम की प्रमुख कृति-** फूलमंजरी, रसराज, ललितललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका आदि है। पद्माकर ने हिम्मत बहादुर विरूदावली, पद्माभरण, जगत विनोद, प्रबोध पचासा आदि की रचना की। **देव की प्रमुख रचनाएँ हैं-** भाव विलास, अष्टयाम, सुजान विनोद, देवशतक, प्रेमचंद्रिका आदि।

128. कौन से रीतिकालीन कवि आपस में भाई माने जाते हैं?

(a) मतिराम, भूषण, सोमनाथ
(b) भूषण, मतिराम, पद्माकर
(c) चिंतामणि, मतिराम, सोमनाथ
(d) भूषण, चिंतामणि, पद्माकर
(e) चिंतामणि, भूषण, मतिराम

Chattisgarh Asst. Prof. 2014

Ans. (e) : चिंतामणि, भूषण, मतिराम कवि आपस में भाई माने जाते हैं। चिंतामणि त्रिपाठी के सहोदर भूषण, मतिराम और जटाशंकर त्रिपाठी थे। ये सभी रीतिकालीन कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं -
चिंतामणि–रस विलास, छन्द विचार पिंगल, शृंगार मंजरी, कविकुल कल्पतरू, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार आदि।
भूषण–शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।
मतिराम–फूल मंजरी, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार।

129. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प रचना और रचनाकार की दृष्टि से गलत है?

(a) कविकुल कंठाभरण – दूलह
(b) रस सारांश – भिखारीदास
(c) शृंगार सागर – आलम
(d) रस रहस्य – कुलपति मिश्र

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (c) : शृंगार सागर- आलम, रचना और रचनाकार की दृष्टि से गलत हैं। रचना रचनाकार का सही विवरण–

रचना		रचनाकार
शृंगार सागर	–	मोहनलाल मिश्र
कविकुल कंठाभरण	–	दूलह
रस सारांश	–	भिखारीदास
रस रहस्य	–	कुलपति मिश्र
माधवानलकामकंदला	–	आलम

130. निम्नलिखित में से कौन सा कवि रीतिमुक्त काव्यधारा का नहीं है?

(a) ठाकुर (b) बोधा
(c) आलम (d) भिखारीदास

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (d) : भिखारीदास रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि नहीं है बल्कि ये रीतिबद्ध काव्यधारा के अन्तर्गत आते हैं। इनकी रचनाएँ– नामकोश (1738 ई.) रस सारांश (1742 ई.), छंदार्णव पिंगल (1742 ई.), काव्य निर्णय (1746 ई.) आदि हैं। ठाकुर, बोधा, आलम, घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

131. निम्नलिखित रचनाओं को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए–

रचना	रचनाकार
(अ) कविकुल कल्पतरु	**(i) भूषण**
(ब) ललित ललाम	**(ii) भिखारीदास**
(स) शिवा बावनी	**(iii) चिन्तामणि**
(द) काव्य निर्णय	**(iv) मतिराम**

कूट:

	अ	ब	स	द
(a)	ii	iii	iv	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	iv	ii	i	iii
(d)	i	iii	iv	ii

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (b) : सही सुमेल निम्नवत् हैं–

रचना	रचनाकार
कविकुलकल्पतरु	चिन्तामणि
ललित ललाम	मतिराम
शिवा बावनी	भूषण
काव्य निर्णय	भिखारीदास

132. रीतिमुक्त कवियों के संदर्भ में इनमें से कौन सा कथन गलत है?

(a) रीतिमुक्त कवियों के प्रेम वर्णन में विरह व्यथा प्रधान है।
(b) रीतिमुक्त कवियों ने प्राचीन काव्य परम्परा को बड़ी गहराई से ग्रहण किया है।
(c) रीतिमुक्त कवियों में रीतिबद्ध कवियों जैसी ऐन्द्रिय वासना नहीं है।
(d) रीतिमुक्त काव्य में कवियों की प्रेमानुभूति को आत्माभिव्यक्ति की शैली में स्थान प्राप्त हुआ है।

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (b) : रीतिमुक्त कवियों के संदर्भ में रीतिमुक्त कवियों ने प्राचीन काव्य परम्परा को बड़ी गहराई से ग्रहण किया है।' यह कथन गलत है। रीतिमुक्त कवियों के प्रेम वर्णन में विरह व्यथा प्रधान है। रीतिमुक्त कवियों में रीतिबद्ध कवियों जैसी ऐन्द्रिय वासना नहीं है। रीतिमुक्त काव्य में कवियों की प्रेमानुभूति को आत्माभिव्यक्ति की शैली में स्थान प्राप्त हुआ है। रीतिमुक्त कवियों के सन्दर्भ में ये सभी कथन सही है।

133. रीतिकाल के कवि रसलीन का लिखा ग्रंथ इनमें से कौन सा है।

(a) अंग दर्पण (b) यमुना लहरी
(c) रस रत्नाकर (d) ब्रजविलास

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (a) : रीतिकाल के कवि रसलीन का लिखा ग्रंथ 'अंग दर्पण' है। यह 1737 ई. में रचित है। इनकी एक रचना 'रस प्रबोध' (1741 ई.) है। इसमें 1155 दोहों में रसों का वर्णन है। 'यमुना लहरी' ग्वाल कवि की रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ– रसिकानन्द, रसरंग, कृष्ण जू को नखशिख, षड्ऋतु वर्णन आदि। 'रसरत्नाकार' सुखदेव मिश्र की रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ– रसार्णव, शृंगार लता, फाजिल अली प्रकाश, वृत्त विचार, छंद विचार आदि। 'ब्रजविलास' के रचनाकार ब्रजवासीदास है।

134. इनमें से कवि देव का लिखा ग्रंथ कौन सा नहीं है?

(a) भाव विलास (b) भवानी विलास
(c) रस विलास (d) विष्णु विलास

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (d) : 'विष्णु विलास' देव की रचना नहीं है बल्कि इसके रचनाकार लाल कवि (गोरेलाल) है। यह एक रस निरुपक ग्रंथ है। लाल कवि की एक अन्य रचना 'छत्रप्रकाश' है जो महाराजा छत्रशाल के जीवन चरित सम्बन्धी प्रबन्धात्मक वीरकाव्य है। शेष तीनों रचनाएँ कवि देव की है।

135. निम्नलिखित कवियों में से ओरछा-नरेश के दरबारी कवि, मंत्र गुरु और मंत्री कौन थे।?

(a) देव (b) केशवदास
(c) चिन्तामणि (d) भूषण

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018

Ans. (b) : ओरछा-नरेश के दरबारी कवि, मंत्र गुरु और मंत्री केशवदास थे। केशव का उपनाम वेदान्ती मिश्र था। ये ओरछा नरेश महाराज रामसिंह के भाई इन्द्रजीत सिंह के गुरू और राज्याश्रित कवि थे। केशव निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनकी प्रमुख रचनाएं हैं- रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीर सिंह देव चरित, नखशिख, छंदमाल आदि। देव आचार्य और कवि दोनों रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाएँ हैं– भाव विलास, अष्टयाम, भवानीविलास, सुजान विनोद आदि। चिंतामणि त्रिपाठी को शुक्ल जी ने रीतिकाल का प्रवर्तक माना है। इनकी रचनाएँ हैं– शृंगार मंजरी, रस विलास, छंद विचार पिंगल, कविकुल कल्पतरू, कवित्त विचार आदि। भूषण शिवाजी और छत्रसाल के राज्याश्रित कवि थे। इनकी रचनाएं हैं- शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।

136. निम्नलिखित ग्रंथों में से कौन सा ग्रंथ केशव रचित नहीं है?

(a) विज्ञान गीता (b) जहाँगीर जसचंद्रिका
(c) छन्दमाल (d) भाषा भूषण

राजस्थान स्कूल शिक्षा प्राध्यापक परीक्षा–2018
UP TGT 2009

Ans. (d) : 'भाषा भूषण' ग्रंथ केशव रचित नहीं है बल्कि भाषा भूषण ग्रंथ की रचना जसवंत सिंह ने की है। विज्ञानगीता, जहाँगीर जसचन्द्रिका, छन्दमाल केशवदास द्वारा रचित ग्रंथ है।

137. निम्न में से कौन-सा ग्रंथ चिन्तामणि का नहीं है?

(a) काव्यविवेक (b) कविकुलकल्पतरू
(c) काव्यप्रकाश (d) कविप्रिया

हरियाणा असिस्टेन्ट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (d) : 'कविप्रिया' ग्रंथ आचार्य चिन्तामणि का नहीं है। 'कवि प्रिया' रीतिकालीन कवि केशवदास की कृति है। इनकी अन्य कृतियाँ हैं रसिकप्रिया, नखशिख, छन्दमाल, रामचन्द्रिका, वीरसिंह देव चरित, रतनबावनी, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका आदि। चिन्तामणि द्वारा रचित कृति हैं– कविकुल कल्पतरू, रस विलास, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, शृंगार मंजरी, छंद विचार आदि।

138. ''नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इहिं काल।
अली कली ही सौं बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।।''
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियाँ किस भाषा में हैं?

(a) अवधी (b) ब्रजभाषा
(c) खड़ी बोली (d) मैथिली

हरियाणा असिस्टेन्ट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा-2017

Ans. (b) : ''नहीं पराग नहीं मधुर मधु, ... आगे कौन हवाल। उक्त पंक्ति ब्रजभाषा में लिखा गया है। यह रीतिकाल के रीति सिद्ध कवि 'बिहारी' की पंक्ति है। बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। जिसमें 719 दोहे हैं।

139. 'प्रबोध पचासा' के रचनाकार कौन हैं?

(a) भूषण (b) देव
(c) पद्माकर भट्ट (d) रसखान

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : 'प्रबोध पचासा' भक्ति निरूपण विषय ग्रंथ है, इसके रचनाकार पद्माकर भट्ट है। इनकी अन्य रचनाएं व विषय निरूपण हैं-

ग्रंथ	विषय निरूपण
हिम्मतबहादुर विरूदावली	211 छंदों में हिम्मत बहादुर का शौर्य वर्णन (प्रबंध काव्य)
प्रताप सिंह विरूदावली	117 छंदों में प्रताप सिंह का शौर्य वर्णन (प्रबंध काव्य)
राम रसायन	वाल्मीकि के 'रामायण' का छायानुवाद
जगद विनोद	छह प्रकाश एवं 731 छंदों में नव रसों का विवेचन

140. निम्नलिखित में से क्या रीतिमुक्त कविता की विशेषता नहीं है?
(a) रीतिमुक्त कवियों का प्रेम-वर्णन व्यथा प्रधान है
(b) प्राचीन काव्य-परम्परा का अनुसरण इनकी उल्लेखनीय विशेषता है
(c) इनके प्रेम में उदात्तता है, रीतिबद्ध कवियों जैसी ऐंद्रिय वासना नहीं
(d) इस धारा के काव्य में कवियों की प्रेमानुभूति को आत्माभिव्यक्ति की शैली में स्थान प्राप्त हुआ है

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (b) : 'प्राचीन काव्य-परम्परा का अनुसरण इनकी उल्लेखनीय विशेषता है।' उक्त कथन रीति मुक्त कविता की विशेषता नहीं है। रीतिमुक्त कवियों का प्रेम-वर्णन व्यथा प्रधान है। इनके प्रेम में उदात्तता है, रीतिबद्ध कवियों जैसी ऐंद्रिय वासना नहीं है। इस धारा के काव्य में कवियों की प्रेमानुभूति को आत्माभिव्यक्ति की शैली में स्थान प्राप्त हुआ। उक्त तीनों कथन रीतिमुक्त कविता की विशेषता है।

141. रीतिकालीन काव्य की मुख्य प्रवृत्ति क्या रही है?
(a) नीति (b) राजप्रशस्ति
(c) भक्ति (d) शृंगारिकता

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : रीतिकालीन काव्य की मुख्य प्रवृत्ति शृंगारिकता रही है। इसी आधार पर रीतिकाल का नाम आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'शृंगार काल' रखा है। रीति काल को तीन भागों में बांटा जाता है - (1) रीति बद्ध, (2) रीति सिद्ध तथा (3) रीति मुक्त।

142. रीतिकाल के संदर्भ में रीतिकाव्य, किसे कहते है?
(a) जिसकी रचना विशिष्ट पद्धति अथवा नियमों को दृष्टि में रखकर की गई हो
(b) जिसकी आत्मा अलंकार हो
(c) जो गुण-विशिष्ट रचना हो
(d) जो भारतीय परंपराओं का वर्णन करें

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (a) : रीतिकाल के संदर्भ में रीतिकाव्य, उसे कहते हैं जिसकी रचना विशिष्ट पद्धति अथवा नियमों को दृष्टि में रखकर की गई हो।

143. 'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।' किसके दोहों के लिए कहा गया है?
(a) रहीम (b) कबीर
(c) तुलसी (d) बिहारी

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : 'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।' बिहारी के दोहों के लिए कहा गया है। ध्यातव्य है कि बिहारी लाल 'रीति सिद्ध' कवि है, जिन्होंने 719 दोहे का 'सतसई' नामक एक ग्रंथ लिखा है। इसकी भाषा 'परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा' है। डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार, 'यूरोप में बिहारी सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।'

144. निम्नलिखित में से कौन आचार्य और कवि दोनों रूपों में जाने जाते हैं?
(a) घनानंद (b) केशव
(c) बिहारी (d) देव

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (d) : दिये गये रीतिकालीन रचनाकारों में 'देव' आचार्य एवं कवि दोनों रूपों में जाने जाते हैं। देव हित हरिवंश के अनन्य सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है - भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देवचरित, प्रेमचंद्रिका, जाति विलास, शब्दरसायन या काव्य रसायन, सुखसागर तरंग, देवमाया प्रपंच, देवशतक, सुजान विनोद, प्रेम तरंग।

145. 'बरवै नायिकाभेद' किसकी रचना है?
(a) कृपाराम (b) रहीम
(c) तुलसी (d) केशव

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (b) : 'बरवै नायिकाभेद' रहीमदास की रचना है। यह अवधी भाषा में लिखा प्रथम रीति निरुपक ग्रंथ है। इसकी रचना संस्कृत के भानुदत्त की 'रसमंजरी' के आधार पर हुई है। संस्कृत, फारसी एवं हिन्दी मिश्रित भाषा में रहीमदास ने 'खेटकौतुक जातकम्' नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की है। इनकी अन्य रचनाएँ है - दोहावली, नगर शोभा, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक।

146. 'काव्यनिर्णय' की रचना किसने की?
(a) भिखारीदास (b) चिंतामणि त्रिपाठी
(c) केशवदास (d) जसवंत सिंह

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (a) : 'काव्यनिर्णय' की रचना भिखारीदास ने की है। इनकी अन्य कृतियाँ - रस सारांश, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, छंदार्णव पिंगल, अमर कोश या शब्दनाम कोश, विष्णु पुराण भाषा और शतरंज शतिका है।

147. 'रसिक प्रिया' के रचनाकार कौन हैं?
(a) परमानंददास (b) नंददास
(c) केशवदास (d) सुंदर कविराय

DSSSB PGT-24.07.2018 (2:00 pm-5:00 pm)

Ans. (c) : 'रसिक प्रिया' के रचनाकार केशवदास हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है - रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छंदमाल। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'रामचन्द्रिका' को छन्दों का अजायबघर कहा है।

148. घनानन्द की काव्य भाषा थी:
(a) खड़ी बोली (b) अवधी
(c) भोजपुरी (d) ब्रजभाषा

DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (d) : घनानन्द की काव्य भाषा 'ब्रजभाषा' थी। घनानन्द रीति काल के 'रीतिमुक्त कवि' हैं। रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "ये साक्षात् रसमूर्ति और ब्रजभाषा काव्य के प्रधान स्तम्भों में हैं।" घनानन्द की प्रमुख कृतियाँ हैं- (1) सुजान सार (2) इश्कलता (3) विरहलीला (4) वियोगबेलि (5) कोकसार (6) कृपाकंद (7) रस केलि वल्ली (8) यमुनायश।

149. **निम्नलिखित में से कौन रीतिमुक्त कवि नहीं हैं?**
(a) घनानन्द (b) बोधा
(c) आलम (d) बिहारी
DSSSB PGT-23.07.2018
UP TGT 2009

Ans. (d) : 'बिहारी' रीतिमुक्त कवि नहीं हैं बल्कि यह रीतिसिद्ध कवि हैं। 'बिहारी सतसई' (719 दोहे) इनकी प्रसिद्ध कृति है, जिसमें नीति एवं शृंगार के दोहे संग्रहीत हैं। घनानन्द, बोधा, ठाकुर एवं आलम ये चार मुख्य रुप से रीतिमुक्त कवि कहलाते हैं।

150. **घनानन्द की रचना नहीं है:**
(a) सुजान सार (b) विरहलीला
(c) साहित्य सार (d) कोकसार
DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (c) : 'साहित्य सार' घनानन्द की रचना नहीं है बल्कि यह मतिराम की रचना है। मतिराम व घनानन्द की रचनाएं इस प्रकार है-
मतिराम - फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी।
घनानन्द - सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, कृपाकंद, रस केलि वल्ली, यमुनायश।

151. **निम्नलिखित में से कौन-सी रचना सेनापति की है?**
(a) रसराज (b) कवित्त रत्नाकर
(c) राम रसायन (d) भाव विलास
DSSSB PGT-23.07.2018
UP TGT 2016
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा 2015
UP TGT 2005

. (b) : सेनापति द्वारा रचित मुख्यतः दो ग्रंथ माने जाते हैं-
कवित्त रत्नाकर - इसमें पाँच तरंग और 394 छन्द में राम कथा का वर्णन है।
काव्य कल्पद्रुम - इसे रीति ग्रंथ माना जाता है।
इनके विषय में रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- " ये बड़े ही सहृदय कवि थे। ऋतु वर्णन तो इनके जैसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया।"
सेनापति 'ब्रजभाषा' के कवि है और इनका सर्वाधिक प्रिय अलंकार 'श्लेष' है।

52. **'काव्य रसायन' के रचयिता कौन हैं?**
(a) देव (b) बिहारी
(c) केशवदास (d) मतिराम
DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (a) : 'काव्य रसायन' के रचयिता रीतिकाल के प्रमुख कवि देव हैं। देव 'हित हरिवंश' के अनन्य सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देवचरित, प्रेमचन्द्रिका, जाति विलास, रस विलास, शब्द या काव्य रसायन, सुखसागर तरंग, देवमाया प्रपंच, देवशतक, सुजान विनोद, प्रेम तरंग।

153. **निम्नलिखित में से कौन-सा भूषण की रचना नहीं है?**
(a) शिवा बावनी (b) रतन बावनी
(c) शिवराज भूषण (d) छत्रसाल दशक
DSSSB PGT-23.07.2018

Ans. (b) : 'रतन बावनी' भूषण की रचना नहीं है बल्कि यह रीति कालीन कवि केशवदास की रचना है। केशवदास की अन्य रचनाएँ हैं- रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख, छन्दमाल। 'शिवा बावनी', 'शिवराज भूषण' तथा 'छत्रशाल दशक' भूषण की रचना हैं। भूषण मूलतः वीर रस के कवि थे।

154. **'जग की कविताई के धोखे रहे ह्यां प्रबीननि की मति जात जकी।' किसकी पंक्तियाँ हैं?**
(a) सोमनाथ (b) घनानंद
(c) रसखान (d) ब्रजनाथ
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : 'जग की कविताई के धोखें रहै हयाँ प्रबीननि की मति जात जकी।' घनानंद की पंक्ति है। 'दिसि बिदिसन ते उमडि मढि लीनोनभ'– सोमनाथ। "अति सुधौं सनेह के मारगु है, जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं"–घनानंद। "मानुष हो तो वही रसखान बसौं सँग गोकुल गाँव के ग्वालन"– रसखान

155. **रीतिकालीन कवि बिहारी की कविता को "शक्कर की रोटी" किसने कहा?**
(a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) पद्मसिंह शर्मा
(c) नगेन्द्र (d) महेंन्द्र कुमार
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : रीतिकालीन कवि बिहारीलाल की कविता को 'शक्कर की रोटी' पद्मसिंह शर्मा ने कहा।

156. **प्रबंधकाव्य को वनस्थली और मुक्तक को गुलदस्ता किसने कहा?**
(a) नगेन्द्र (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) नंददुलारे वाजपेयी
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (c) : 'प्रबन्धकाव्य' को वनस्थली और मुक्तक को गुलदस्ता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी के सन्दर्भ में कहा है। रीतिकाल के संदर्भ में डॉ. नगेन्द्र ने कहा है "रीतिकाल के अन्तर्गत राज्याश्रित कवियों में से अधिकांश तथा जनकवियों में से कतिपय ऐसे थे, जिन्होंने आत्मदर्शन की भावना अथवा काव्य-रसिक-समुदाय को काव्यांगों का सामान्य ज्ञान प्राप्त कराने के उद्देश्य से ब्रजभाषा में रीतिग्रंथों का प्रणयन किया। अतएव, इन कवियों की सबसे प्रमुख प्रवृत्ति रीति निरूपण ही थी।

157. **'अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत, स्याम, रतनार' किसकी पंक्ति है?**
(a) सोमनाथ (b) रसलीन
(c) पद्माकर (d) बिहारी
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (b) : 'अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत, स्याम, रतनार' रसलीन की पंक्ति है। अन्य पंक्तियों का विवरण इस प्रकार हैं-
- छंद रीति समुझे नहीं बिन पिंगल के ज्ञान–सोमनाथ
- ताही को रति कहत हैं, रस ग्रंथन की रीति–पद्माकर
- या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहि कोय–बिहारी

158. **'रस पीयूष निधि' के रचनाकार हैं:**
(a) आचार्य सोमनाथ (b) चिंतामणि
(c) मतिराम (d) देव
DSSSB PGT-25.07.2018 (9:00 am-12:00 pm)

Ans. (a) : 'रस पीयूष निधि' के रचनाकार आचार्य सोमनाथ हैं इनकी अन्य रचनाएँ– शृंगार विलास, पंचाध्यायी, सुजान विलास, कृष्ण लीलावती, माधव विनोद हैं। चिन्तामणि की रचनाएँ– रस विलास, छंद विचार पिंगल, शृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरू, काव्य

प्रकाश आदि। मतिराम की रचनाएँ– फूल मंजरी, साहित्य सार, लक्षण शृंगार, ललित ललाम, रसराज, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी आदि। देव की रचनाएँ– भाव विलास, भवानी विलास, जाति विलास, काव्य रसायन आदि।

159. ''प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ'' आचार्य शुक्ल का उक्त कथन किस रीतिकालीन कवि के विषय में है?

(a) बिहारी (b) देव
(c) घनानंद (d) रसलीन

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : ''प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ'' आचार्य शुक्ल का उक्त कथन रीतिकालीन रीतिमुक्त धारा के कवि घनानंद के विषय में है। घनानन्द की प्रमुख रचनाएँ हैं– सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगि बेलि, कोकसार, कृपाकंद, रस केलि वल्ली, यमुनायश।

160. ''जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समासशक्ति जितनी अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप में वर्तमान थी'' यह कथन मूलतः किस विद्वान का है?

(a) आचार्य शुक्ल का
(b) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का
(c) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का
(d) डॉ0 रामकुमार वर्मा का

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : ''जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समासशक्ति जितनी अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप में वर्तमान थी'' यह कथन मूलतः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। इनके सतसई के सम्बन्ध में रामचन्द्र शुक्ल ने अन्यत्र कहा है– ''यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक चुना हुआ गुलदस्ता है।''

161. रीतिकाल में नीतिविषयक काव्यों की रचना इनमें से किसने नहीं की है।

(a) वृन्द (b) गिरिधर कविराय
(c) नागरीदास (d) दीनदयाल

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : रीतिकाल में नीतिविषयक काव्यों की रचना दिये गये कवियों में नागरीदास ने नहीं की है। नागरीदास (सावंत सिंह) रीतिकालीन मुक्तक शैली के कृष्ण काव्य के रचयिता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं– मनोरथ मंजरी (1723 ई.), इश्क चमन, फाग बिहार, जुगल रस माधुरी, रास रसलता, रसिक रत्नावली आदि। शेष रीतिकालीन रचनाकारों ने नीतिविषयक काव्यों की रचना की है।

162. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता रीतिमुक्त काव्य (स्वच्छंदतावादी काव्य) की मुख्य विशेषता नहीं है?

(a) भावावेग का उच्छल प्रवाह
(b) व्यक्तिपरकता
(c) सब प्रकार की रूढ़ियों से मुक्ति
(d) शैल्पिक चमत्कार प्रदर्शन

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : दी गयी विशेषताओं में से 'शैल्पिक चमत्कार प्रदर्शन' विशेषता रीतिमुक्त काव्य (स्वच्छंदतावादी काव्य) की मुख्य विशेषता नहीं है। रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख विशेषता है–
1. भावावेग का उच्छल प्रवाह
2. व्यक्तिपरकता
3. सब प्रकार की रूढ़ियों से मुक्ति
4. शृंगारिकता का प्राधान्य

163. हिन्दी काव्यशास्त्र की निम्नांकित कृतियों का सही कालानुक्रम है–

(a) रसिकप्रिया, कविकुलकल्पतरू, काव्यनिर्णय, रसरहस्य
(b) रसिकप्रिया, कविकुलकल्पतरू, रसरहस्य, काव्यनिर्णय
(c) रसरहस्य, काव्यनिर्णय, कविकुलकल्पतरू, रसिकप्रिया
(d) कविकुलकल्पतरू, रसिकप्रिया, काव्यनिर्णय, रसरहस्य

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : दी गई हिन्दी काव्यशास्त्र कृतियों का सही कालानुक्रम निम्न प्रकार है–

रचना	वर्ष	रचनाकार
रसिकप्रिया	1591 ई.	केशवदास
कविकुलकल्पतरू	1650 ई.	चिन्तामणि
रस रहस्य	1670 ई.	कुलपति मिश्र
काव्य निर्णय	1746 ई.	भिखारीदास

164. निम्नलिखित लक्षणग्रंथों को उनके आचार्यों के साथ सुमेलित कीजिए–

सूची–I	सूची–II
(1) कविकुलकल्पतरु	(i) मतिराम
(2) ललितललाम	(ii) भिखारीदास
(3) भावविलास	(iii) महाराज जसवंत सिंह
(4) काव्यनिर्णय	(iv) चिंतामणि
	(v) देव

(a) 1-iv, 2- i 3-v, 4-ii (b) 1-iv, 2-iii, 3-iv, 4-i
(c) 1-v, 2-ii, 3-i, 4-iv (d) 1-iii, 2-iv, 3-ii, 4-i

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : लक्षणग्रंथों को उनके आचार्यों का सही सुमेलन इस प्रकार है–

लक्षण ग्रंथ	आचार्य
कविकुलकल्पतरु	चिंतामणि
ललित ललाम	मतिराम
भाव विलास	देव
काव्य निर्णय	भिखारीदास
भाषा भूषण	महाराज जसवंत सिंह

165. निम्नलिखित काव्यग्रंथों को उनके कवियों के साथ सुमेलित कीजिये–

सूची–I	सूची–II
(1) गंगालहरी	(i) भूषण
(2) इश्कनामा	(ii) पद्माकर
(3) विरहलीला	(iii) बोधा
(4) शिवा बावनी	(iv) घनानंद
	(v) सूदन

(a) 1-ii, 2- i 3-iii, 4-iv (b) 1-v, 2-iv, 3-iii, 4-i
(c) 1-ii, 2-iii, 3-iv, 4-i (d) 1-i, 2-iv, 3-iv, 4-ii

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : काव्यग्रंथों एवं उनके कवियों का सही सुमेल है–

काव्यग्रंथ	कवि
गंगालहरी	पद्माकर
इश्कनामा	बोधा
विरहलीला	घनानंद
शिवा बावनी	भूषण
सुजान चरित	सूदन

166. इनमें से किस विकल्प के सभी ग्रंथ लक्षण ग्रंथ हैं?
(a) कवित्त रत्नाकर, काव्यरसायन, रतनहजारा, ललितललाम
(b) भाषा भूषण, ललित ललाम, कविकुलकल्पतरू, काव्यरसायन
(c) ललितललाम, कविकुलकल्पतरु, ठाकुर ठसक, रतनहजारा
(d) विरहवारीश, भषाभूषण, काव्यरसायन, कवित्त रत्नाकर
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : 'भाषा भूषण, ललित ललाम, कविकुलकल्पतरु, काव्य रसायन' समूह में भी ग्रंथ लक्षण ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त 'ठाकुर ठसक' तथा 'रतनहजारा' सभी रीतिकालीन ग्रंथ हैं। जिनके रचयिता क्रमशः ठाकुर तथा रसनिधि हैं। विरह वारीश के रचनाकार बोधा हैं।

167. नीचे दी गई रचनाओं के आधार पर उत्तर दीजिए- (i) अष्टयाम (ii) अलंकारमाला (iii) रागरत्नाकर (iv) अंगदर्पण किस विकल्प की सभी रचनाएँ देव की नहीं हैं?
(a) (i) और (ii) (b) (ii) और (iii)
(c) (iii) और (iv) (d) (ii) और (iv)
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : दी गई रचनाओं में 'अलंकार माला' तथा 'अंग दर्पण' देव की रचनाएँ नहीं है। 'अलंकार माला' सूरति मिश्र तथा 'अंग दर्पण' रसलीन की रचना है। 'अष्टयाम' एवं 'रागरत्नाकर' देव की रचनाएँ हैं।

168. ''किसी कवि का यश उसकी रचनाओं के परिमाण के हिसाब से नहीं होता है बल्कि गुण के हिसाब से होता है।'' शुक्ल जी का यह कथन किस रीतिकालीन कवि के सम्बन्ध में है?
(a) सेनापति (b) पद्माकर
(c) बिहारी (d) भूषण
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : ''किसी कवि का यश उसकी रचनाओं के परिमाण के हिसाब से नहीं होता है बल्कि गुण के हिसाब से होता है।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का यह कथन रीतिकालीन रीतिसिद्ध कवि बिहारी के सम्बन्ध में है।

169. जन्मकाल के अनुसार इन कवियों का सही कालानुक्रम है–
(a) देव, केशव, चिंतामणि, देव, पद्माकर
(b) केशव, चिंतामणि, देव, पद्माकर
(c) चिंतामणि, केशव, पद्माकर, देव
(d) केशव, पद्माकर, चिंतामणि, देव
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : जन्मकाल के अनुसार इन कवियों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है–

कवि	जन्म वर्ष
केशव	1555 ई.
चिंतामणि	1609 ई.
देव	1673 ई.
पद्माकर	1753 ई.

170. स्थापना (A)- इस काल को रीतिकाल कहने में किसी प्रकार का अव्यप्ति दोष न होगा। तर्क (R) क्योंकि प्रत्येक कवि द्वारा इसमें शृंगार को न्यूनाधिक रूप से ग्रहण किया जाना भी तो एक विशेष प्रकार की रीति ही है।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं
(b) (A) और (R) दोनों गलत हैं
(c) (A) सही (R) गलत
(d) (A) गलत (R) सही
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : स्थापना (A) तथा तर्क (R) दोनों सही हैं। कथन रीतिकाल के सम्बन्ध में है- इस काल को रीतिकाल कहने में किसी प्रकार का अव्यप्ति दोष न होगा। क्योंकि प्रत्येक कवि द्वारा न्यूनाधिक रूप से शृंगार को ग्रहण किया जाना भी तो एक विशेष प्रकार की रीति है।

171. निम्नांकित में से किस ग्रन्थ में सही काव्यांगों का विवेचन (सर्वांग विवेचन) किया गया है?
(a) रसविलास (b) ललितललाम
(c) शिवराजभूषण (d) कविकुलकल्पतरू
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : चिन्तामणि त्रिपाठी कृत 'कविकुलकल्पतरु' में सभी काव्यांगों का विवेचन (सर्वांग विवेचन) किया गया है। शेष का विवरण इस प्रकार है–

ग्रंथ	रचनाकार	निरूपण
रस विलास	देव	रस
शिवराज भूषण	भूषण	अलंकार
ललितललाम	मतिराम	अलंकार

172. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रंथ मतिराम द्वारा नहीं रचा गया है।
(a) रसराज (b) लक्षण शृंगार
(c) रसरहस्य (d) साहित्यसार
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : दी गयी रचनाओं में 'रसरहस्य' मतिराम की रचना नहीं है बल्कि यह कुलपति मिश्र की रचना है। कुलपति मिश्र की अन्य रचनाएँ हैं- संग्राम सार, युक्तितरंगिणी, नखशिख, द्रोण पर्व। **मतिराम की रचनाएँ हैं–** फूल मंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज, ललितललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी।

173. ''उनकी विरहताप की अत्युक्तियों में दूर की सूझ और नाजुकख्याली बहुत कुछ फारसी की शैली है।'' शुक्ल जी का यह कथन किस कवि के विषय में है।
(a) जायसी (b) बिहारी
(c) सूरदास (d) घनानन्द
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (b) : ''उनकी विरह ताप की अत्युक्तियों में दूर की सूझ और नाजुकख्याली बहुत कुछ फारसी की शैली है।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का यह कथन रीतिकालीन रीतिसिद्ध कवि बिहारी लाल के विषय में है। **डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार,** ''यूरोप में बिहारी सतसई के समकक्ष कोई रचना नहीं है।''

174. ''हिन्दी रीतिग्रंथों की परम्परा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं में से मानना चाहिए।'' इस कथन के लेखक हैं–

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन
(d) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

LT Hindi 2018
राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014
UPPSC Degree College Exam 2013

Ans. (a) : "हिन्दी रीतिग्रंथों की परम्परा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं में से मानना चाहिए।" इस कथन के लेखक 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' हैं। रचनाकार-व्यक्तित्व की दृष्टि से डॉ. नगेन्द्र ने केशवदास को माना है और कालक्रम की दृष्टि से 'कृपाराम' रीतिकाल के प्रवर्तक हैं।

175. 'भूषण बिनु न विराजई, कविता वनिता मित्त' उक्ति में कवि केशव ने अपनी कैसी अभिरूची प्रकट की है?
(a) अलंकारप्रियता (b) रसिकता
(c) प्रभुताप्रियता (d) भक्ति की आकुलता

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : 'भूषण बिनु न विराजई, कविता वनिता मित्त' उक्ति में कवि केशव ने अपनी अलंकारप्रियता की अभिरूची प्रकट की है। केशवदास का उपनाम वेदान्ती मिश्र था और ये निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। केशवदास को रीति काव्य का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इन्हें 'अलंकारवादी' मानते हैं। केशव भामह, दण्डी और उद्भट के अनुयायी थे। डॉ. विजयपाल सिंह ने केशव को 'कोर्ट का कवि' कहा है।

176. महाराज जसवंत सिंह के द्वारा रचित लक्षण गंन्थ का नाम है–
(a) भाषा भूषण (b) अलंकार रत्नाकर
(c) भूषण चन्द्रिका (d) आनन्द विलास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : महाराज जसवंत सिंह के द्वारा रचित लक्षण गंन्थ का नाम 'भाषा भूषण' है। जसवंत सिंह हिन्दी साहित्य के प्रधान आचार्य या शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने 'भाषा भूषण' के 212 दोहे में अलंकारों का परिचय देते हुए निरूपण किया है। **इनकी अन्य रचनाएँ हैं–** प्रबोध चन्द्रोदय, अपरोक्ष सिद्धान्त, अनुभव प्रकाश, आनन्द विलास, सिद्धान्त बोध एवं सिद्धान्त सार।

177. 'अली कली ही सो बँध्यों, आगे कौन हवाल, उक्ति में कवि बिहारी का कौन सा रूप प्रकट हुआ है।'
(a) दार्शनिक रूप (b) प्रवचनकार्ता रूप
(c) उद्बोधक रूप (d) नीतिकार रूप

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (c) : 'अली कली ही सो बँध्यों, आगे कौन हवाल, उक्ति में कवि बिहारी का उद्बोधक रूप प्रकट हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी लाल को 'रसवादी' माना है जबकि डॉ. नगेन्द्र ने 'ध्वनिवादी' स्वीकार किया है। श्री राधाचरण गोस्वामी ने बिहारी को 'पीयूषवर्षी मेघ' की उपमा दी है।

178. जयपुर नरेश जगत सिंह के आश्रय में रहते हुए पद्माकर ने कौन सा लक्षण-ग्रंथ लिखा था।
(a) जगद् विनोद (b) रामरसायन
(c) हिम्मत बहादुर (d) प्रबोध पचासा

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (a) : जयपुर नरेश जगत सिंह के आश्रय में रहते हुए पद्माकर ने 'जगद् विनोद' नामक लक्षण-ग्रंथ लिखा था। इनकी अन्य रचनाएँ हैं– हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, प्रबोध पचासा, गंगा लहरी, प्रताप सिंह विरुदावली, कलि पच्चीसी।

179. रामचन्द्र शुक्ल ने पद्माकर की भावमूर्ति विधायिनी कल्पना की प्रशंसा क्यों की है?
(a) भाषा की ललित पदावली के कारण
(b) लाक्षणिक शब्दों की छटा के कारण
(c) सुंदर कोमल भाव तरंग के कारण
(d) इन तीनों गुणों से युक्त शैली के कारण

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-II) 2014

Ans. (d) : रामचन्द्र शुक्ल ने पद्माकर की भावमूर्ति विधायिनी कल्पना की प्रशंसा 'इन तीनों गुणों से युक्त शैली के कारण' की है। पद्माकर रीतिबद्ध कवि हैं। **इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-** 1. हिम्मत बहादुर विरुदावली 2. पद्माभरण 3. जगद् विनोद 4. प्रबोध पचासा 5. गंगालहरी 6. प्रताप सिंह विरुदावली 7. कलिपच्चीसी 8. राम रसायन 9. अलीजाह प्रकाश।

180. निम्नलिखित में से कौन–सी रचना घनानन्द की नहीं है?
(a) इश्कलता (b) सुजान हित
(c) वियोग– बेलि (d) रस विलास

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (d) : 'रस विलास' रचना घनानन्द की नहीं है, बल्कि देव की रचना है। यह राजा मोतीलाल को समर्पित रचना है। **देव की अन्य रचनाएँ हैं–** भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देव चरित, जाति विलास, शब्द या काव्य रसायन, देवमाया प्रपंच, देवशतक, सुजान विनोद, प्रेम तरंग। अन्य विकल्प इश्कलता, सुजान हित, वियोग बेलि घनानंद की रचना है।

181. "नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि। तज्यौ मनौ तारन– बिरदु, बारक बारनु तारि॥" बिहारी के इस दोहे में व्यक्त भाव है–
(a) शृंगार (b) नीति
(c) भक्ति (d) प्रकृति–चित्रण

राजस्थान कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा (पेपर-I) 2014

Ans. (c) : "नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि। तज्यौ मनौ तारन– बिरदु, बारक बारनु तारि।।" बिहारी के इस दोहे में भक्ति भाव है। बिहारी रीतिसिद्ध कवि हैं। इन्होंने एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' के नाम से किया है।

182. "कुंदन को रंग फीकौ लगै, झलकै अति अंगन चारु गुराई" यह पंक्ति है:
(a) मतिराम की (b) बिहारी की
(c) भूषण की (d) देव की

DSSSB TGT-15.09.2018
UGC NET IInd Paper June 2006

Ans. (a) : पंक्तियों का विवरण इस प्रकार है–
- कुंदन को रंग फीकौ लगै, झलकै अति अंगन चारू गुराई – मतिराम
- चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पटझीन – बिहारीलाल
- दारा की दौर यह रार नहीं खुजबे की – भूषण
- अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि रीति – देव

183. उत्तर मध्य काल को 'रीतिकाल' नाम दिया है:
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने
(b) रामकुमार वर्मा ने
(c) मिश्र बन्धुओं ने
(d) आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने

DSSSB TGT-15.09.2018

Ans. (d) : उत्तर मध्यकाल को 'रीतिकाल' नाम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने दिया है। मिश्रबंधु ने रीतिकाल को अलंकृत काल नाम दिया है।

184. 'इंद्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर, रावण सदंभ पर रघुकुल राज है'—ये पंक्ति हैं:
(a) भूषण की (b) बिहारी की
(c) कवि देव की (d) आलम की

DSSSB TGT (MALE)-28.08.2018
DSSSB PGT 24.7.2018 (2.00 pm - 5.00 pm)

Ans. (a) : प्रमुख रीतिकालीन कवि एवं उनकी पंक्तियाँ हैं–
- इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,
  रावण सदंभ पर रघुकुल राज है– भूषण
- इति आवत चलि जातउत, चली छ सातक हाथ।
  चढ़ी हिंडोरे सी रहै, लगी उसासन हाथ – बिहारी लाल
- अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि रीति – देव
- कनक छुरी सी कामनी, काहे को कटि छीन– आलम

185. 'जगद् विनोद' किस कवि की रचना है?
(a) घनानंद (b) बिहारी लाल
(c) पद्माकर (d) मतिराम

DSSSB TGT (MALE)-28.08.2018

Ans. (c) : जगद्विनोद, हिम्मत बहादुर विरूदावली, पद्माभरण, प्रबोध पचासा, गंगालहरी आदि रीतिकालीन रीतिबद्ध कवि पद्माकर की रचनाएँ हैं। सुजानसार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, कृपाकंद आदि घनानन्द की रचनाएँ हैं। 'बिहारी सतसई' बिहारीलाल की तथा फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी मतिराम की रचनाएँ है।

186. रीतिमुक्तधारा में प्रमुख रहा है:
(a) नीति कथन (b) भक्ति भावना
(c) शृंगार चित्रण (d) आश्रयदाता का गुणगान

DSSSB TGT (MALE)-28.08.2018

Ans. (c) रीतिमुक्तधारा में 'शृंगार चित्रण' प्रमुख रहा है। रीतिमुक्तधारा की विशेषता इस प्रकार है– नायिका भेद, लक्षण ग्रंथों का निर्माण, अलंकारिकता, ब्रजभाषा, वीर रस का प्रवाह। रीतिकाल को तीन भागों में बाँटा गया है। (1) रीतिबद्ध (2) रीति सिद्ध (3) रीतिमुक्त।

187. 'देव' कृत 'देवचरित्र' किसके जीवन से संबधित प्रबंधकाव्य है?
(a) राम (b) कृष्ण
(c) इन्द्र (d) शिव

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (b) : दिए गए विकल्पों में 'देव' कृत 'देवचरित्र' कृष्ण जीवन से संबंधित प्रबंधकाव्य है। इनका मूलनाम 'देवदत्त' था। ये कवि और आचार्य दोनों रूप में प्रसिद्ध हैं।

188. 'कोकसार' किसकी रचना है?
(a) आलम (b) बोधा
(c) घनानन्द (d) ठाकुर

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (c) : 'कोकसार' घनानन्द की रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं। सुजानसार, इश्कलता, वियोगबेलि, कृपाकंद, रसकेलिवल्ली, यमुनायश, विरहलीला। विरहलीला 'ब्रजभाषा', 'फारसी छंद' में है। घनानंद का जन्म स्थान बुलंदशहर, मृत्यु वृंदावन, सम्प्रदाय - 'निम्बार्क' था। ये 'सुजान' नामक प्रेयसी से प्रेम करते थे। ये मुहम्मदशाह रंगीला के राजदरबार में मीर मुंशी थे।

189. बिहारी सतसई की टीका 'लाल चंद्रिका' नाम से किसने की है?
(a) लल्लू लाल (b) जगन्नाथदास रत्नाकर
(c) सूरति मिश्र (d) अम्बिका दत्त व्यास

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (a) : बिहारी सतसई की टीका 'लाल चंद्रिका' नाम से लल्लू लाल ने की है। इसकी रचना 1818 ई0 में हुई। यह ब्रजभाषा गद्य मे हैं। लल्लू लाल ने 'लतायफ-इ-हिन्दी को बजुवान-ई-रेख्ता' कहा है। जगन्नाथ दास रत्नाकर ने 'बिहारी रत्नाकर' (1921 ई.) नाम से बिहारी सतसई की टीका लिखी जो खड़ी बोली हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ टीका है। सूरति मिश्र ने 'अमर चन्द्रिका' नाम से बिहारी सतसई की टीका लिखी। अम्बिकादत्त व्यास ने 'बिहारी-बिहार' शीर्षक से बिहारी सतसई की टीका सर्वप्रथम सवैया छंद में ब्रजभाषा में लिखी।

190. बोधा का असली नाम क्या था?
(a) बुद्धिराम (b) सुबोध चन्द्र
(c) बुद्धि सेन (d) प्रबोध चन्द्र

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (c) : बोधा का असली नाम 'बुद्धिसेन' था। पन्ना नरेश खेत सिंह ने बुद्धिसेन का उपनाम 'बोधा' दिया था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– विरह वारीश, इश्कनामा।

191. 'रस कविता को अंग, भूषन है भूषण सकल।' काव्य के संदर्भ में यह पंक्ति किसकी है?
(a) देव (b) भूषण
(c) भिखारीदास (d) केशवदास

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (c) : 'रस कविता को अंग, भूषन है भूषण सकल' काव्य के संदर्भ में यह पंक्ति रीतिकालीन कवि 'भिखारीदास' की है। इनके प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं– नामकोश, रस सारांश, छंदार्णव पिंगल, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, शतरंजशतिका आदि।

192. निम्न में से कौन सा सुमेलित नहीं है?
(a) कवित्त रत्नाकर–सेनापति (b) छंदसार – भूषण
(c) साहित्यसार – मतिराम (d) गंगालहरी – पद्माकर

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (b) : 'छंदसार – भूषण' सुमेलित नहीं है। 'छंदसार' या वृत्तकौमुदी मतिराम की रचना है जो छंद निरूपक ग्रंथ है।
मतिराम के ग्रंथ हैं– फूल-मंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्यसार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी। अन्य विकल्प सुमेलित हैं।

193. 'बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है।' यह कथन किसका है?
(a) डॉ. नगेन्द्र (b) बच्चन सिंह
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) रामचन्द्र शुक्ल

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (d) : 'बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है।' यह कथन रामचन्द्र शुक्ल का है। बिहारीलाल की एक मात्र रचना 'बिहारी सतसई' दोहा छंद में रचित है। इनकी भाषा परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा है। बिहारीलाल के समस्त दोहों की संख्या 719 है किन्तु जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' ने इनके दोहों की संख्या 713 माना है।

194. 'श्रृंगारलतिका' के रचियता कौन हैं?

(a) द्विजदेव (b) चिंतामणि
(c) देव (d) रत्नाकर

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (a) : 'श्रृंगारलतिका' के रचियता द्विजदेव हैं। द्विजदेव (महाराज मानसिंह) अयोध्या के महाराज थे। द्विजदेव की एक अन्य रचना 'श्रृंगार बत्तीसी' है।
चिन्तामणि की रचनाएँ हैं– रस विलास, छन्द विचार पिंगल, श्रृंगार मंजरी, कवि कुल कल्पतरू, कृष्णचरित, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार, रामायण।

195. 'रामचंद्रिका' का रचना समय है।

(a) 1501 ई. (b) 1601 ई.
(c) 1801 ई. (d) 1701 ई.

NVS PGT 17.09.2019

Ans. (b) : 'रामचंद्रिका' का रचना समय 1601 ई. है।रामचंद्रिका के रचनाकार केशवदास जी हैं। ऐसा माना जाता है कि केशवदास ने 'रामचन्द्रिका' की रचना तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की प्रतिस्पर्धा में एक रात में की। आ0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेन्द्र और गणपतिचन्द्र गुप्त आदि विद्वानों ने केशवदास को हिन्दी में रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है।

196. महाराज जसवंत सिंह ने 'भाषा-भूषण' की रचना किस ग्रंथ के आधार पर की?

(a) चन्द्रालोक (b) साहित्य दर्पण
(c) ध्वन्यालोक (d) शिवराज भूषण

NVS PGT 17.09.2019
UP PGT 2013

Ans. (a) : महाराज जसवंत सिंह ने 'भाषा भूषण' की रचना चन्द्रालोक ग्रंथ के आधार पर की है। महाराजा जसवंत सिंह मारवाड़ के शासक थे। वे राठौर राजपूत थे। वे एक अच्छे लेखक भी थे जिन्होंने 'सिद्धान्त बोध', 'आनन्द विलास' तथा 'भाषा भूषण' नामक ग्रंथों की रचना की।

197. निम्न में कौन सा सही सुमेलित नहीं है?

(a) रसविलास - देव
(b) कविप्रिया - केशवदास
(c) गंगालहरी - रत्नाकर
(d) ललित ललाम - मतिराम

NVS TGT 18.09.2019

Ans. (c) : 'गंगालहरी - रत्नाकर' का सुमेलित नहीं है। इसका सही सुमेलन 'गंगालहरी - पद्माकर' है। यह संस्कृत कवि जगन्नाथ कृत गंगालहरी का पद्यानुवाद है। शेष सही सुमेलित है।

198. 'नैन नचाय कही मुसकाय लला फिर आइयो खेलन होरी' पंक्ति किस कवि द्वारा रचित है?

(a) रसलीन (b) रत्नाकर
(c) पद्माकर (d) बिहारी

NVS TGT 18.09.2019 / KVS PGT 2018
UP PGT 2009 / UP TGT 2004

Ans. (c) : कवि के पंक्तियों का विवरण-

नैन नचाय कही मुसकाय लला फिर आइयो खेलन होरी	-पद्माकर
फूले कुंजर अलि भ्रमत, सीतल चलत समीर	-रसलीन
थोरी-थोरी बैसे की अहीन का छोटी सम	-रत्नाकर
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होय	-बिहारी

199. निम्न में से कौन सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?

(a) बोधा (b) आलम
(c) ठाकुर (d) सेनापति

NVS TGT 18.09.2019

Ans. (d) : सेनापति रीतिमुक्त कवि नहीं है। ये रीतिबद्ध के अंतर्गत आते हैं। सेनापति राम के उत्कृष्ट भक्त थे, परंतु भगवान शिव तथा कृष्ण का गुणगान किया है। सेनापति 'ब्रजभाषा' लिखने में सिद्धहस्त थे। इनकी रचनाएँ - कवित्त रत्नाकर, काव्यकल्पद्रुम हैं। बोधा, आलम, ठाकुर, रीतिमुक्त कवि हैं।

200. बिहारी ने करीब कितने दोहे लिखे हैं–

(a) 2000 (b) 5000
(c) 8500 (d) 700

UP PGT 2016

Ans : (d) बिहारी ने करीब 700 दोहे लिखे हैं। जिसका संकलन 'बिहारी सतसई' नाम से हुआ है।
नोट–बिहारी कृत 'बिहारी सतसई' में कुल 719 दोहे हैं।

201. रीतिकाल के मुख्य कवियों में हैं–

(a) खुसरो (b) रहीम
(c) पल्टूदास (d) मतिराम

UP PGT 2016

Ans : (d) रीतिकाल के मुख्य कवियों में मतिराम हैं।

कवि		काल
खुसरो	–	आदिकाल
रहीम	–	भक्तिकाल
पल्टूदास	–	भक्तिकाल

202. 'रामचंद्रिका' के कवि कौन हैं–

(a) केशवदास (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) बिहारी

UP PGT 2016

Ans : (a) 'रामचन्द्रिका' ग्रंथ के कवि केशवदास हैं।

कवि	प्रमुख रचनाएं
केशवदास-	1. रसिक प्रिया 2. कविप्रिया 3. विज्ञान गीता
सूरदास-	1. सूरसागर 2. सूरसरावली 3. साहित्य लहरी
तुलसीदास-	1. रामचरितमानस 2. गीतावली 3. कवितावली 4. विनय पत्रिका
बिहारी-	बिहारी सतसई।

203. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भिखारीदास की नहीं है–

(a) रससारांश (b) काव्यनिर्णय
(c) श्रृंगार निर्णय (d) भाषाभूषण

LT Hindi 2018

Ans : (d) 'भाषा भूषण' रचना भिखारीदास की नहीं है बल्कि 'जसवन्त सिंह' की है। रस सारांश, काव्य निर्णय, श्रृंगार निर्णय भिखारीदास की रचनाएं हैं।

204. रीतिकाल को 'अलंकृत काल' किस इतिहासकार ने कहा है–

(a) मिश्रबंधु (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) रामचंद्र शुक्ल (d) रामकुमार वर्मा

LT Hindi 2018

Ans : (a) रीतिकाल को 'अलंकृत काल' मिश्रबन्धु ने कहा है। अन्य विवरण इस प्रकार है–

इतिहासकार	रीतिकाल का नाम
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	श्रृंगारकाल
रामचन्द्र शुक्ल	रीतिकाल
रामकुमार वर्मा	रीतिकाल
रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	कलाकाल

205. 'युक्ति तरंगिणी' के रचनाकार हैं:

(a) केशवदास (b) चिंतामणि
(c) कुलपति मिश्र (d) सुखदेव मिश्र

Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (c) : 'युक्ति तरंगिणी' के रचनाकार कुलपति मिश्र हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं– रस रहस्य, संग्राम सार, नखशिख, द्रोण पर्व आदि। केशवदास की रचना– वीर सिंह देव चरित, विज्ञानगीता आदि है। चिंतामणि की रचनाएँ– कृष्ण चरित, कवित्त विचार, रामायण आदि है। सुखदेव मिश्र की रचनाएँ हैं– वृत्त विचार, छंद विचार, फाजिल अली प्रकाश, अध्यात्म प्रकाश, रसार्णव, रस रत्नाकर आदि।

206. 'सघन कुन्ज, छाया सुखद, सीतल मंद समीर'– किसकी काव्य पंक्ति है?

(a) पद्माकर (b) बिहारी
(c) घनानंद (d) रसखान

Himanchal Pradesh PGT-2016

Ans. (b) : 'सघन कुन्ज, छाया सुखद, सीतल मंद समीर' यह पंक्ति रीतिसिद्ध कवि बिहारीलाल द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' की है। राधाचरण गोस्वामी ने बिहारी को 'पीयूषवर्षी मेघ' की उपमा दी है। बिहारी 'निम्बार्क सम्प्रदाय' से थे। पद्माकर की प्रमुख रचनाएँ– हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण आदि हैं, घनानंद की रचनाएँ–सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला आदि रचनाएँ हैं, रसखान कृष्ण भक्त मुस्लिम कवि थे। इनका मूल नाम सैयद इब्राहीम था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं –सुजान रसखान, प्रेमवाटिका, दानलीला और अष्टयाम।

207. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कवि देव की नहीं है–

(a) भावविलास (b) अष्टयाम
(c) अलंकार गंगा (d) सुजान विनोद

KVS PGT 2018

Ans : (c) 'अलंकार गंगा' कवि देव की रचना नहीं है। अन्य विकल्प भाव विलास, अष्टयाम, सुजान विनोद, कवि देव की रचना है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–भवानी विलास, काव्य रसायन, जाति विलास, देवमाया प्रपंच, रस विलास, राग रत्नाकर, सुख सागर तरंग। 'अलंकार गंगा' कृति के रचनाकार श्रीपति हैं। श्रीपति की अन्य रचनायें– काव्य सरोज, रससागर, अनुप्रास विनोद आदि है।

208. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना केशवदास की नहीं है–

(a) विज्ञानगीता (b) भू-परिक्रमा
(c) रतन बावनी (d) जहाँगीर जस चंद्रिका

KVS PGT 2018

Ans : (b) 'भू-परिक्रमा' केशवदास की रचना नहीं है बल्कि विद्यापति की है। विद्यापति की अन्य रचनाएँ–शैव सर्वस्व सार, गंगा-वाक्यावली, दुर्गाभक्त तरंगिणी, दान-वाक्यावली, पुरुष परीक्षा, विभाग सार, लिखनावली, गया पत्तलक-वर्ण कृत्य। कीर्तिलता, कीर्ति पताका इनकी अवहट्ठ भाषा की रचना हैं। केशवदास की रचनाएँ हैं-रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका, नखशिख।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने केशवदास को ''कठिन काव्य का प्रेत'' कहा है।

209. 'कीनैं हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु।
भो मन मोहन-रूपु मिलि पानी मैं को लौनु॥'
इस दोहे के सम्बन्ध में क्या सही है?

(A) इसमें नायिका का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम व्यंजित है।
(B) नायिका के मन रूपी सरोवर में कृष्ण का लावण्य पानी में नमक की तरह घुल गया है।
(C) कृष्ण की रूपासक्ति से नायिका अपने मन को अलग करना चाहती है।
(D) 'कोरिक' का अर्थ है 'कचोटना'

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(a) (B) और (C) (b) (A) और (D)
(c) (A) और (C) (d) (A) और (B)

UGC NET Dec. 2019

Ans. (d) कीनैं हूँ कोरिक जतन............मैं कौ लौनु।। इस दोहे में नायिका का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम व्यंजित है तथा नायिका के मन रूपी सरोवर में कृष्ण का लावण्य पानी में नमक की तरह घुल गया है। यह दोहा बिहारी जी द्वारा रचित है।
दोहे का पूर्ण अर्थ- जिस प्रकार पानी में नमक मिल जाता है, उसी प्रकार मेरे हृदय में कृष्ण का रूप समा गया है। अब कोई कितना भी यत्न कर ले, पर जैसे पानी से नमक को अलग करना असंभव है। वैसे ही मेरे हृदय से कृष्ण का प्रेम मिटाना असम्भव है।

210. निम्नलिखित काव्यपंक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची-I (काव्यपंक्तियाँ)	सूची-II (रचनाकार)
(A) कौन परी यह बानि अरी नित नीरभरी गगरी ढरकावै।	(i) देव
(B) गुलगुली गिल में गलीचा हैं गुनी जन हैं चाँदनी है चिक है चिरागन की माला हैं	(ii) पद्माकर
(C) सेवक सिपाही हम उन राजपूतन को, दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरको।	(iii) ठाकुर
(D) अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन। अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।	(iv) प्रताप साहि
	(v) भिखारीदास

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(a) (A)-(i), (B)-(ii), (C)-(iii), (D)-(iv)
(b) (A)-(iv), (B)-(ii), (C)-(iii), (D)-(i)
(c) (A)-(v), (B)-(i), (C)-(iv), (D)-(iii)
(d) (A)-(iii), (B)-(iv), (C)-(i), (D)-(v)

UGC NET Dec. 2019

Ans. (b) : निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का उनके रचनाकारों के साथ सही सुमेलन-

काव्य पक्तियाँ	रचनाकार
कौन परी............ढरकावै।	प्रतापसाहि
गुलगुली............ की माला हैं।	पद्माकर
सेवक सिपाही........ जे न मुरके	ठाकुर
अभिधा उत्तम.........कहत नवीन	देव

211. रचनाकाल की दृष्टि से निम्नलिखित कवियों का सही अनुक्रम है:

(a) केशवदास, बिहारी, भूषण, सेनापति
(b) सेनापति, केशवदास, बिहारी, भूषण
(c) भूषण, केशवदास, सेनापति, बिहारी
(d) केशवदास, सेनापति, भूषण, बिहारी

UGC NET Dec. 2019

Ans. (a) : रचना काल की दृष्टि के दिए गए कवियों का सही अनुक्रम इस प्रकार है–

कवि	रचनाकाल (जन्म के अनुसार)
केशवदास	1555 ई.
बिहारी	1595 ई.
भूषण	1613 ई.
सेनापति	1589 ई.

नोट-आयोग ने इसका क्रम इस प्रकार माना है- केशवदास, बिहारी, भूषण, सेनापति जबकि इसका सही क्रम जन्म के अनुसार इस प्रकार होगा- केशव, सेनापति, बिहारी, भूषण

212. निम्नलिखित ग्रंथों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए। नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर को चुनिए:

सूची-I	सूची-II
(A) भाषा भूषण	(i) मतिराम
(B) अलंकार पंचाशिका	(ii) पद्माकर
(C) विष्णुपद कीर्तन	(iii) जसवन्त सिंह
(D) रस विलास	(iv) चिन्तामणि
	(v) रसनिधि

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iv)	(v)	(i)
(b)	(iv)	(ii)	(iii)	(v)
(c)	(iii)	(i)	(v)	(iv)
(d)	(i)	(v)	(ii)	(iii)

UGC NET Dec. 2018

Ans : (c) – निम्नलिखित ग्रंथों को उनके रचनाकारों के साथ निम्न प्रकार सुमेलित है।

ग्रन्थ		ग्रन्थकार
1. भाषा भूषण	-	जसवन्त सिंह
2. अलंकार पंचाशिका	-	मतिराम
3. विष्णुपद कीर्तन	-	रसनिधि
4. रसविलास	-	चिन्तामणि

213. निम्नलिखित काव्य-कृतियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए। नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर को चुनिए :

सूची-I	सूची-II
(A) अलंकार प्रकाश	(i) रसलीन
(B) अंगदर्पण	(ii) आलम
(C) आलम केलि	(iii) याकूब खाँ
(D) रतनहजारा	(iv) रसनिधि
	(v) भूषण

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(v)	(i)	(ii)	(iv)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)
(d)	(iii)	(iv)	(v)	(ii)

UGC NET Dec. 2018

Ans : (b) – निम्नलिखित काव्यकृतियों को उनके कृतियों के साथ सही क्रम इस प्रकार होगा।

कवि		कृति
भूषण	-	अलंकार प्रकाश
रसलीन	-	अंगदर्पण
आलम	-	आलम केलि
रसनिधि	-	रतनहजारा

214. कालक्रम की दृष्टि से निम्नलिखित ग्रंथों का सही अनुक्रम है :

(a) भावविलास, काव्यनिर्णय, रसरहस्य, जगद्विनोद
(b) रसरहस्य, भावविलास, काव्यनिर्णय, जगद्विनोद
(c) काव्यनिर्णय, रसरहस्य, जगद्विनोद, भावविलास,
(d) भावविलास, काव्यनिर्णय, जगद्विनोद,रसरहस्य

UGC NET Dec. 2018

Ans : (b) – निम्नलिखित ग्रंथों का सही क्रम इस प्रकार है।

कवि		ग्रंथ
कुलपति मिश्र	-	रस रहस्य (1670 ई.)
देव	-	भाव विलास (1689 ई.)
भिखारीदास	-	काव्य निर्णय (1746 ई.)
पद्माकर	-	जगद् विनोद (1803-1821 ई. के बीच)

215. रीतिकालीन वीरकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं :

(i) रासो काव्य की अपेक्षा में अधिक प्रामाणिक हैं।
(ii) इनमें तत्कालीन इतिहास सुरक्षित है।
(iii) इनमें चमत्कारिक वर्णन और भाषाई खिलवाड़ बहुत अधिक है।
(iv) किसी वीर काव्य में फिरंगियों का भी वर्णन किया गया है।

नीचे दिये गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए

कूट :

(a) (i) और (iii) सही
(b) (ii) और (iv) सही
(c) (i), (iii) और (iv) सही
(d) (i), (ii) और (iv) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (d) – दी गयी विशेषताओं में रीतिकालीन वीरकाव्य की निम्नलिखित विशेषताएं है-

(1) रीतिकालीन वीरकाव्य रासो काव्य की अपेक्षा में अधिक प्रामाणिक है।
(2) इसमें तत्कालीन इतिहास सुरक्षित है।

(3) किसी वीरकाव्य में फिरंगियों का भी वर्णन किया गया है।
अतः दिये गये कूटों में कूट (i) (ii) और (iv) सही है।

216. रीतिकालीन आचार्यों की तीन श्रेणियाँ हैं-

(i) उद्भावक आचार्य (ii) व्याख्याता आचार्य
(iii) उद्गाता आचार्य (iv) कवि-शिक्षक

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :

कूट:

(a) (i), (ii) और (iii) सही
(b) (i), (iii) और (iv) सही
(c) (i), (ii) और (iv) सही
(d) (ii), (iii) और (iv) सही

UGC NET Dec. 2018

Ans : (c) – रीतिकालीन आचार्यों की तीन श्रेणियाँ हैं-उद्भावक आचार्य, व्याख्याता आचार्य तथा कवि-शिक्षक। जबकि उद्गाता आचार्य की श्रेणी रीतिकालीन आचार्य कवियों में नहीं है। रीतिकालीन उन कवियों को आचार्य, उद्भावक, व्याख्याता या कवि शिक्षक कहा गया जिन्होंने लक्षण ग्रंथ लिखे और उन लक्षण ग्रंथों की प्रतिपुष्टि हेतु सिद्धांत तथा उदाहरण प्रस्तुत किये इस श्रेणी के प्रमुख कवियों में केशव, मतिराम, देव तथा भिखारीदास आते हैं। अतः दिये कूट में कूट (i) (ii) और (iv) सही है।

217. निम्नलिखित में से किस कवि ने सतसई की रचना नहीं की?

(a) चिंतामणि (b) मतिराम
(c) रामसहाय (d) अमीरदास

UGC NET Dec. 2018

Ans : (a) – निम्नलिखित में से चिंतामणि ने सतसई की रचना नहीं किये। जबकि-मतिराम, रामसहाय और अमीरदास ने सतसई की रचना किये है

चिंतामणि की प्रमुख कृतियां- रसविलास, शृंगार मंजरी कृष्णचरित, काव्यविवेक, काव्यप्रकाश, रामायण आदि।

मतिराम की प्रमुख कृतियां-फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्यसार, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी।

रामसहाय की प्रमुख कृतियां-वृत्त तरंगिणी, अलंकारप्रकाश, वाणी भूषण, रामसतसई, ककहरा आदि।

अमीरदास की कृतियां-सभा मंडन, वृत्त चन्द्रोदय, व्रजविलास सतसई, अमीर प्रकाश आदि।

218. भारत में अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए पद्माकर ने किस राजा के दरबार में यह कवित्त पढ़ा था?

मीनागढ़ बंबई सुमंद मंदराज बंग,
बंदर को बंद करि बंदर बसावैगो।
कहै पदमाकर कसकि कासमीर हू को,
पिंजर सें घेरि के कलिंजर छुड़ावैगो।
बाँका नृप (---) अलीजा महाराजा कबौं,
साजि दल पकरि फिरंगिन दबावैगो।
दिल्ली दहपट्टि, पटना हू को झपट्ट करि,
कबहूँक लत्ता कलकत्ता को उड़ावैगो।

(a) जगत सिंह (b) अनूप गिरि
(c) दौलत राव सिंधिया (d) रघुनाथ राव

UGC NET Dec. 2018

Ans : (c) – दी गयी काव्यपंक्ति-"मीना गढ़ बंबई सुमंद मंदराज बंग।----------------कबहूँक लत्ता कलकत्ता को उड़ावैगो।।" यह पंक्ति भारत में अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए पद्माकर ने राजा दौलत राव सिंधिया के दरबार में सुनाया था।

पद्माकर की कृतियाँ- हिम्मतबहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद् विनोद, प्रबोध पचासा, कलिपच्चीसी, राम रसायन, अलीजाह प्रकाश आदि।

219. 'बालि का सपूत कपिकुल पुरहूत,
रघुवीर जू को दूत भरि रूप विकराल को।'
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियाँ किस रचनाकार की है?

(a) केशवदास (b) तुलसीदास
(c) सेनापति (d) मतिराम

UGC NET June. 2019

Ans. (c) : प्रश्नोक्त पंक्तियाँ रीतिकालीन रामकथा के कवि सेनापति की हैं। शेष का विवरण इस प्रकार है-

कवि	**पंक्तियां**
केशवदास	"जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुवरन सरस सुवृत्त। भूषन बिनु न विराजई, कविता वनिता मित्त।।
तुलसीदास	"गोरख जागायो जोगु, भगति भगायो लोगु। निगम नियोगते, सो केलि ही छरो सो है।।
सेनापति	'बालि का सपूत कपिकुल पुरहुत, रघुवीर जू को दूत भरि रूप विकराल को।।
मतिराम	कोऊ कितेक उपाय करो, कहुँ होत है आपुने पीव पराये।।

220. जन्म-काल के अनुसार निम्नलिखित रचनाकारों का सही अनुक्रम क्या है?

(a) केशवदास, बिहारी, मतिराम, घनानंद
(b) बिहारी, केशवदास, घनानंद, मतिराम
(c) केशवदास, मतिराम, घनानंद, बिहारी
(d) घनानंद, बिहारी, केशवदास, मतिराम

UGC NET June. 2019

Ans. (a) :

रचनाकार		**जन्म-काल**
केशवदास	-	1555 ई.
बिहारी	-	1595 ई.
मतिराम	-	1617 ई.
घनानंद	-	1689 ई.

221. निम्नलिखित में से कौन-सी रचनाएँ केशवदास की हैं

(A) रसिक प्रिया (B) अनुप्रास विनोद
(C) विज्ञान गीता (D) रस सागर

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए :

(a) (A) और (C) (b) (A), (B) और (C)
(c) (B), (C) और (D) (d) (C) और (D)

UGC NET June. 2019

Ans. (a) : रसिक प्रिया, विज्ञान गीता केशवदास की रचनाएँ है।
केशवदास जी की अन्य रचनाएँ हैं- (1) रसिक प्रिया, (2) कवि प्रिया, (3) रामचन्द्रिका, (4) रतनबावनी, (5) विज्ञान गीता, (6) जहाँगीर जस चन्द्रिका, (7) वीरसिंह देव चरित।
अलंकारवादी रामभक्त कवि केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है। शुक्ल जी ने केशव जी के विषय में कहा की "प्रबन्ध रचना के योग्य न तो केशव में शक्ति थी और न अनुभूति" "केशव केवल उक्ति वैचित्र्य एवं शब्द क्रीड़ा के कवि थे।"

222. "यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।"
बिहारी के संबंध में उपर्युक्त कथन किस आलोचक का है?

(a) रामचंद्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुंदर दास (d) नंददुलारे वाजपेयी

UGC NET June. 2019

Ans. (a) : "यदि प्रबंध काव्य............. तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।" बिहारी के सम्बन्ध में यह कथन **'रामचन्द्र शुक्ल'** का है। शुक्ल जी के आलोचना ग्रंथ- सूरदास, जायसी ग्रन्थावली, हिन्दी साहित्य का इतिहास। जबकि **'हजारी प्रसाद द्विवेदी'** के आलोचनात्मक ग्रन्थ- सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य की भूमिका, मध्यकालीन बोध का स्वरूप, सहज साधना, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, कबीर, कालिदास की लालित्य योजना। **'श्यामसुन्दर दास'** की प्रमुख आलोचनात्मक रचनाएं- साहित्यालोचन, भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा और साहित्य, रुपक रहस्य, भाषा रहस्य। **'नन्द दुलारे वाजपेयी'** की आलोचनात्मक रचनाएँ- जयशंकर प्रसाद, हिन्दी साहित्यः बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य, प्रेमचन्द, महाकवि सूरदास, रस सिद्धांत, नयी कविता, नया साहित्य नये प्रश्न।

223. सुजान की उपेक्षा से विराग उत्पन्न होने के बाद रीतिकालीन कवि घनानन्द वृदावन जाकर किस सम्प्रदाय के वैष्णव हो गए थे?

(a) वल्लभ संप्रदाय के (b) निम्बार्क संप्रदाय के
(c) सखी संप्रदाय के (d) राधावल्लभ संप्रदाय के

UGC NET June. 2019

Ans. (b) : घनानंद रीतिमुक्त धारा के शृंगारी कवि हैं, ये दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले के मीर मुंशी थे। दिल्ली से निकाले जाने के पश्चात् ये वृंदावन आकर **निम्बार्क सम्प्रदाय** में दीक्षित हो गए।
आचार्य शुक्ल ने घनानन्द को 'साक्षात् रसमूर्ति' कहा है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- सुजान सागर, विरह लीला, कोकसार, रस केलि वल्ली, कृपाकंद, इश्कलता आदि।

224. 'शिवा बावनी' के रचनाकार कौन हैं–

(a) घनानंद (b) नरपति नाल्ह
(c) सेनापति (d) भूषण

म.प्र. उच्च माध्यमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा 2018
UP TGT 2005

Ans : (d) 'शिवा बावनी' के रचनाकार वीर रस के एकमात्र रीतिकालीन कवि भूषण हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक, भूषण उल्लास, भूषण हजारा।
घनानन्द की रचनाएँ हैं–सुजानहित, कृपाकंद, वियोगबेलि, इश्कलता, यमुनायश, प्रीतिपावस, ब्रजविलास, रसवसंत इत्यादि।
सेनापति की रचनाएँ हैं–काव्य कल्पद्रुम तथा कवित्त रत्नाकर।
नरपति नाल्ह की रचना है–बीसलदेव रासो।

225. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किस कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा था –

(a) भूषण (b) केशव (c) देव (d) पद्माकर

UP TGT 2001, UP PGT 2005
NVS. PGT. 2014

Ans. (b) हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक एवं निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकालीन कवि केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। आचार्य शुक्ल के अनुसार केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिक प्रिया, विज्ञान गीता, रतन बावनी, वीर सिंह देव चरित, छंदमाल तथा जहाँगीर जस चन्द्रिका केशवदास की प्रमुख रचनाएँ हैं।

226. भूषण रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं :

(a) रीतिबद्ध काव्यधारा (b) रीतिमुक्त काव्यधारा
(c) रीतिसिद्ध काव्यधारा (d) आश्रयवादी काव्यधारा

UP TGT 2001

Ans. (a) रीतिकालीन साहित्य को प्रवृत्ति के आधार पर तीन भागों (वर्गों) में विभाजित किया जाता है – (a) रीतिबद्ध काव्यधारा, (b) रीतिसिद्ध काव्यधारा, (c) रीतिमुक्त काव्यधारा। रीतिबद्ध काव्यधारा के अंतर्गत काव्य सिद्धान्तों के निरूपण के लिए रचित लक्षण ग्रंथ आते हैं। इनके रचयिता आचार्य कवि कहलाते हैं। रीतिबद्ध काव्य विशुद्ध रूप से काव्य शास्त्रीय है। भूषण, देव, मतिराम, केशव, पद्माकर, श्रीपति आदि रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। भूषण ने शिवाजी के आश्रय में रहकर 'शिवराज भूषण', 'शिवा बाबनी' तथा 'छत्रसाल दशक' नामक ग्रंथों की रचना की। 'शिवराज भूषण' में 105 अलंकारों का निरूपण हुआ है। घनानन्द, आलम, बोधा एवं ठाकुर रीतिमुक्त काव्यधारा के तथा कविवर बिहारी रीतिसिद्ध काव्यधारा के कवि हैं।

227. 'कालिदास हजारा' की रचना की –

(a) भारतेन्दु ने (b) घनानन्द ने
(c) चिन्तामणि (d) कालिदास ने

UP TGT 2002

Ans. (d) 'कालिदास हजारा' कालिदास त्रिवेदी (कालिदास) की रचना है। **इनकी अन्य रचनाएँ हैं-** वरवधूविनोद, जंजीराबन्द, राधामाधव-बुधमिलन-विनोद हैं। कविकुलकल्पतरु, रसविलास, काव्य विवेक, शृंगारमंजरी, काव्य प्रकाश आदि चिंतामणि की रचनाएँ हैं। सुजान हित, वियोगबेलि, इश्कलता, यमुनायश, प्रीतिपावस आदि घनानंद की रचनाएं हैं।

228. 'सुजान सागर' के लेखक हैं –

(a) घनानन्द (b) बोधा
(c) ठाकुर (d) आलम

UP TGT 2002

Ans. (a) 'सुजान सागर' रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के सर्वप्रमुख कवि तथा रस की साक्षात् मूर्ति घनानन्द की रचना है। 'विरहलीला', 'कोकसार', 'रस केलि वल्ली' तथा 'कृपाकंद' घनानन्द की अन्य रचनाएं हैं। रीतिमुक्त धारा के अन्य कवि आलम ने 'माधवानलकामकंदला' तथा 'आलम केलि' नामक ग्रंथों की रचना की। 'विरह वारीश' तथा 'इश्कनामा' बोधा की रचनाएँ हैं।

229. बिहारी सतसई पर 'फिरंगे सतसई' नाम से फारसी भाषा में एक टीका लिखी गयी, जिसके टीकाकार हैं –

(a) फिराक गोरखपुरी (b) आनन्दीलाल शर्मा
(c) अमीर खुसरो (d) मिर्जा गालिब

UP TGT 2002

Ans. (b) रीतिकालीन कवि बिहारी लाल की अमर कृति 'सतसई' पर फारसी भाषा में 'फिरंगे सतसई' नामक टीका आनन्दीलाल शर्मा द्वारा लिखी गई।

230. 'अष्टयाम' किसकी रचना है –

(a) सेनापति (b) देव
(c) भूषण (d) पद्माकर

UP TGT 2003

Ans. (b) अष्टयाम, भाव विलास, प्रेमतरंग, कुशल विलास, जाति विलास, रस विलास, प्रेमचन्द्रिका, सुजान विनोद, काव्य रसायन (शब्द रसायन), देवशतक एवं देवमायाप्रपंच रीतिकालीन

कवि देव की रचनाएं हैं। जगद् विनोद, पद्माभरण, हिम्मत बहादुर विरुदावली, गंगालहरी, प्रताप सिंह विरुदावली आदि पद्माकर की रचनाएँ हैं। शिवा बावनी, शिवराज भूषण एवं छत्रशाल दशक भूषण की रचनाएं हैं। 'कवित्त रत्नाकर' एवं 'काव्य कल्पद्रुम' सेनापति द्वारा रचित ग्रंथ है।

231. भूषण को 'कवि भूषण' की उपाधि किसने प्रदान की थी–

(a) शिवाजी (b) छत्रसाल
(c) सोलंकी राजा रुद्र शाह (d) इनमें से को नहीं

UP TGT 2003

Ans. (c) रीतिकालीन कवि भूषण को 'कवि भूषण' की उपाधि चित्रकूट के राजा रुद्रशाह सोलंकी ने प्रदान की थी। कानपुर के समीप तिकवांपुर नामक स्थान में जन्में रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र भूषण रीतिकाल के दो प्रसिद्ध कवियों - मतिराम एवं चिन्तामणि के सगे भाई थे। वीर रस के कवि भूषण ने शिवाजी के आश्रय में रहकर 'शिवराज भूषण' एवं 'शिवा बावनी' की रचना की। छत्रसाल की प्रशस्ति में भूषण ने 'छत्रसाल दशक' की रचना की।

232. गंगा लहरी' किसकी रचना है–

(a) मतिराम (b) पद्माकर
(c) ठाकुर (d) बोधा

UP TGT 2003

Ans. (b) 'गंगालहरी' पद्माकर की रचना है।

रचनाकार	रचना
पद्माकर	पद्माभरण, हिम्मत बहादुर विरुदावली, जगद् विनोद, प्रबोध पचासा, प्रताप सिंह विरुदावली, कलिपच्चीसी, राम रसायन, अलीजाह प्रकाश।
मतिराम	फूल मंजरी, रसराज, ललितललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी, लक्षण श्रृंगार, साहित्यसार।
ठाकुर	ठाकुर ठसक, ठाकुर शतक
बोधा	विरह वारीश, इश्कनामा।

233. विरह वारीश किसकी रचना है–

(a) बोधा (b) ठाकुर
(c) आलम (d) घनानन्द

UP TGT 2003

Ans. (a) 'विरह वारीश' रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि बोधा की रचना हैं। रीतिमुक्त काव्यधारा के अन्य कवि आलम ने स्याम सनेही, आलमकेलि, माधवानलकामकन्दला एवं सुदामा चरित की रचना की।

234. 'भाषा भूषण' के रचनाकार हैं–

(a) जसवन्त सिंह (b) भूषण
(c) मतिराम (d) चिन्तामणि

UP TGT 2003

Ans. (a) 'भाषा भूषण' के रचनाकार जसवन्त सिंह हैं। 'भाषा भूषण' अलंकार निरुपण ग्रंथ है-

रचनाकार	रचना
जसवन्त सिंह	आनन्द विलास, सिद्धान्त बोध, सिद्धान्त सार, अनुभव प्रकाश, अपरोक्ष सिद्धान्त, स्फुट छंद, प्रबोध चन्द्रोदय (नाटक)।
भूषण	शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक
मतिराम	फूल मंजरी, लक्षण श्रृंगार, साहित्य सार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी।
चिन्तामणि	रस विलास, छन्द विचार पिंगल, श्रृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरु, कृष्ण चरित, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार, रामायण।

235. 'जाति विलास' के रचयिता हैं –

(a) भिखारीदास (b) देव
(c) मतिराम (d) भूषण

UP TGT 2004

Ans. (b) 'जाति विलास' के रचयिता देव हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं- भाव विलास, भवानी विलास, कुशल विलास, रस विलास, काव्य रसायन, प्रेम तरंग, प्रेमचन्द्रिका, प्रेम दीपिका आदि।

236. किस रचना को 'छंदों का अजायबघर' कहा जा सकता है?

(a) रामचरितमानस (b) चंद छंद बरनन की महिमा
(c) रामचंद्रिका (d) पृथ्वीराज रासो

UP TGT 2004

Ans. (c) डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'रामचन्द्रिका' को 'छन्दों का अजायबघर' कहा है। रीतिकालीन कवि आचार्य केशवदास द्वारा रामकथा पर लिखे गए महाकाव्य 'रामचन्द्रिका' को 'छन्दों का अजायबघर' कहा जाता है। रसिक प्रिया, कविप्रियां, छन्दमाल, विज्ञानगीता एवं जहाँगीर जस चन्द्रिका आचार्य केशव की अन्य रचनाएँ हैं। 'पृथ्वीराज रासो' चन्द्रबरदाई की तथा 'रामचरितमानस' तुलसीदास की रचना हैं।

237. "सीखि लीनों मीन मृग खंजन कमल-नैन,
सीखि लीनो जस औ प्रताप को कहानी है।"
– ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

(a) ठाकुर (b) घनानंद
(c) द्विजदेव (d) मतिराम

UP TGT 2004

Ans. (a)

कवि	पंक्ति
ठाकुर	सीखि लीनों मीन मृग खंजन कमल नैन, सीखि लीनों जस और प्रताप को कहानी है।
घनानंद	अति सुधौं सनेह को मारगु हैं, जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं।
मतिराम	कोऊ कितेक उपाय करो, कहुँ होत हैं आपुने पीव पराये।
द्विजदेव	डोलि रहे विकसे तरु एकै, सु ऐसे रहे हैं नवाइके सीसहिं।

238. रीतिकाल की 'रीतिसिद्ध काव्यधारा' के कवि हैं –

(a) केशव (b) देव
(c) भूषण (d) बिहारी

UP PGT 2002, 2009, 2011
UGC NET IInd Paper June. 2011, 2007
MP Assist. Prof. 2017
UGC NET IInd Paper Dec. 2012

Ans. (d) काव्य रीति के आधार पर हिन्दी साहित्य के रीतिकाल को तीन भागों रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त में वर्गीकृत किया जाता है। कविवर, बिहारी रीतिकाल के 'रीतिसिद्ध काव्यधारा' के

प्रतिनिधि कवि हैं। बिहारी ने अपनी एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' में रीति का पूरा-पूरा उपयोग किया है। केशव, भिखारीदास, चिन्तामणि, मतिराम, देव, रसलीन, ग्वाल आदि रीतिबद्ध काव्यधारा के तथा घनानंद, बोधा, आलम एवं ठाकुर, द्विजदेव रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

239. भिखारीदास की रचना है –

(a) काव्य निर्णय (b) काव्य सिन्धु
(c) चिंतामणि (d) रस विवेक

UP TGT 2004

Ans. (a) रीतिकाल के सर्वांग विवेचक कवियों में आचार्य भिखारीदास का नाम अग्रणी है। भिखारीदास द्वारा रचित सात ग्रंथ हैं - काव्य निर्णय, रस सारांश, शृंगार निर्णय, छन्दार्णव पिंगल, शब्दनाम कोश, विष्णु पुराण भाषा एवं शतरंजशतिका, 'चिन्तामणि' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबंध संग्रह है।

240. वह रस उदाहरण जो रीतिकाल में लिखे गए हैं जितने कि सम्पूर्ण साहित्य में नहीं लिखे गए हैं।

(a) वीर रस (b) रौद्र रस
(c) करुणा रस (d) शृंगार रस

Jharkhand TGT 2017

Ans. (d) शृंगार रस के उदाहरण जितनी अधिक मात्रा में रीतिकाल (1700-1900) में लिखे गए हैं उतने सम्पूर्ण साहित्य में नहीं लिखे गए है। इस काल के कवि राजाओं और रईसों के आश्रय में रहते थे। मनोरंजन और कला विलास का वातावरण स्वाभाविक था। ऐसे वातावरण में लिखा गया साहित्य अधिकतर शृंगारमूलक और कला वैचित्र्य से युक्त था। इस काल में केशव, चिंतामणि, देव, बिहारी, मतिराम, भूषण, घनानंद, पद्माकर आदि प्रतिष्ठित कवि हुए।

241. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) रीतिबद्ध धारा के कवियों ने लक्षण ग्रन्थों की रचना की है
(b) रीतिबद्ध धारा के कवियों को आचार्य कवि कहा जाता है
(c) बिहारी रीतिसिद्ध धारा के प्रतिनिधि कवि हैं
(d) केशव रीतिमुक्त धारा के कवि हैं

UP TGT 2005

Ans. (d) आचार्य केशवादास रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि नहीं है। आचार्य केशव रीतिनिरूपक अलंकारवादी आचार्य है इन्होंने रसिक प्रिया, कविप्रिया, एवं छन्दमाल जैसे लक्षण ग्रंथों की रचना की। रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि घनानन्द, बोधा, ठाकुर एवं आलम है। रीतिबद्ध काव्यधारा के कवियों को 'आचार्य' कहा जाता है। बिहारी रीतिसिद्ध धारा के प्रमुख कवि हैं। इन्होंने 'बिहारी सतसई' नामक कृति की रचना की।

242. 'रीतिकाल' की विशेषताओं के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से एक विशेषता गलत है। उस विशेषता का चयन कीजिए

(a) रीतिकाल में अलंकरण की प्रधानता है
(b) रीतिकाल का प्रमुख भाषा ब्रजभाषा है
(c) रीतिकाल में प्रकृति का आलम्बन-रूप में वर्णन हुआ है
(d) रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थों की प्रमुखता है

UP TGT 2005

Ans. (c) रीतिकाल में आलम्बन रूप में प्रकृति का चित्रण प्रायः नहीं हुआ है। रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति का चित्रण उद्दीपन तथा अलंकारिक रूपों में किया है। कविता में अलंकरण की प्रधानता, मुख्यतः ब्रजभाषा का प्रयोग, लक्षण ग्रंथों की रचना, आश्रयदाताओं की प्रशंसा, अलंकारों की प्रधानता, चमत्कार प्रदर्शन एवं शृंगारिकता रीतिकालीन काव्य की प्रमुख विशेषताएँ है।

243. आचार्य भिखारीदास कृत प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है

(a) काव्यप्रकाश (b) काव्यनिर्णय
(c) काव्यांगप्रकाश (d) रस-सारांश

UP TGT 2005

Ans. (b)काव्य के सभी अंगों का निरूपण करने वाले रीतिकालीन कवि आचार्य भिखारीदास का प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रंथ - काव्य निर्णय है। शृंगार निर्णय, रस सारांश, तथा छन्दार्णव पिंगल भिखारीदास की अन्य रचनाएँ हैं।

244. 'देव' कवि किस जिले के थे?

(a) मैनपुरी (b) बनारस
(c) गोरखपुर (d) इटावा

UP TGT 2009

Ans. (d) महाकवि देव रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में है। ये उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के रहने वाले थे। इनका पूरा नाम 'देवदत्त' था। इनकी प्रमुख रचनाएं भाव विलास, भवानी विलास, रसविलास, जाति विलास, सुखसागर तरंग, अष्टयाम इत्यादि हैं।

245. 'कविप्रिया' के रचनाकार का नाम बताइये।

(a) देव (b) केशव
(c) पद्माकर (d) घनानन्द

UP TGT 2011

Ans. (b)'कविप्रिया' के रचनाकार 'केशवदास' हैं। केशवदास द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ-रामचन्द्रिका, रसिक प्रिया, वीर सिंह देव चरित, विज्ञान गीता, रतनबावनी, जहाँगीर जस चंद्रिका आदि हैं।

246. 'शिवराज भूषण' के रचयिता का कवि कौन है?

(a) घनानन्द (b) बिहारी
(c) पद्माकर (d) भूषण

UP TGT 2011

Ans. (d)'शिवराज भूषण' के रचयिता हिन्दी के रीतिकालीन कवि 'भूषण' (1613-1715) हैं। ये वीर रस के प्रमुख रचनाकार हैं। इनकी अन्य रचनाएँ-छत्रसाल दशक एवं शिवा बावनी हैं। घनानन्द रीतिमुक्त काव्य धारा के अग्रणी कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ-सुजान सार, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, कृपाकंद, रस केलिवल्ली, यमुनायश, इश्कलता हैं। बिहारी हिन्दी के रीतिकाल के रीतिसिद्ध काव्यधारा के एकमात्र कवि हैं। बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। यह एक 'मुक्तक काव्य' है। इसमें 719 दोहे संकलित हैं। पद्माकर भी रीतिकालीन कवि हैं, इनकी रचनाओं में हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, राम-रसायन, गंगालहरी, प्रबोध पचासा आदि महत्तवपूर्ण हैं।

247. महाकवि भूषण की रचना है?

(a) रेणुका (b) चिदम्बरा
(c) दीपशिखा (d) छत्रशाल दशक

UP TGT 2011

Ans. (d) 'छत्रशाल दशक' महाकवि भूषण की रचना है 'रेणुका' रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना है। 'चिदम्बरा' (1958) सुमित्रानन्दन पन्त का काव्य संग्रह है। इस पर इन्हें ज्ञानपीठ (1968) पुरस्कार मिला है। 'दीपशिखा' (1942) महादेवी वर्मा का काव्य संग्रह है।

248. रीतिकालीन कवियों की काव्य भाषा क्या थी?

(a) अवधी (b) खड़ी बोली
(c) ब्रज भाषा (d) बुन्देली

UP TGT 2011

Ans. (c) रीतिकालीन कवियों की काव्यभाषा 'ब्रजभाषा' थी। 'खड़ी बोली' आधुनिक काल की तथा 'अवधी' भक्तिकाल के रामभक्ति काव्यधारा की काव्यभाषा थी।

249. रीतिकाल के उस कवि का नाम बताइये जिसने वीर रस में कविता लिखी है?

(a) पद्माकर (b) भूषण
(c) बिहारी (d) घनानन्द

UP TGT 2011

Ans. (b)'भूषण' एकमात्र कवि हैं जिन्होंने रीतिकाल में वीर रस में कविता लिखी है। पद्माकर, बिहारी, घनानंद ने शृंगार रस में कविता लिखी है।

250. 'बिहारी सतसई' किस भाषा का काव्य ग्रन्थ है?

(a) ब्रज भाषा (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) भोजपुरी

UP TGT 2011

Ans. (a) 'बिहारी सतसई' ब्रजभाषा का काव्य ग्रन्थ है। बिहारी 'रीतिकाल' के रीतिसिद्ध कवि हैं। अवधी भाषा में रामचरितमानस तथा साकेत, प्रियप्रवास व कामायनी खड़ी बोली के प्रमुख महाकाव्य हैं।

251. 'सुजान' शब्द का प्रयोग किस कवि की कविता में सर्वाधिक हुआ है?

(a) बिहारी (b) भूषण
(c) घनानन्द (d) ठाकुर

UP TGT 2011

Ans. (c)'सुजान' शब्द का प्रयोग घनानंद की कविता में सर्वाधिक हुआ है। घनानन्द 'सुजान' नामक गणिका से प्रेम करते थे। घनानन्द रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि हैं तथा सुजानहित प्रबंध वियोगबेलि, इश्कलता, सुजानसागर आदि इनकी कृतियाँ हैं।

252. इनमें से कौन सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?

(a) घनानन्द (b) आलम
(c) बोधा (d) केशवदास

UP TGT 2011

Ans. (d) केशवदास रीतिमुक्त कवि नहीं हैं, ये रीतिबद्ध कवियों की श्रेणी में आते हैं। रीतिबद्ध के अन्य कवि इस प्रकार हैं- चिन्तामणि, कुलपति मिश्र, देव, मतिराम, भिखारीदास। प्रमुख रीतिमुक्त कवि घनानन्द, आलम, बोधा तथा ठाकुर द्विजदेव हैं।

253. 'शिवराजभूषण' ग्रंथ में किसका विवेचन मिलता है?

(a) रस (b) ध्वनि
(c) अलंकार (d) औचित्य

UP TGT 2013

Ans. (c) भूषण ने अलंकार विवेचन सम्बन्धी ग्रंथ 'शिवराजभूषण' में 105 अलंकार का विवेचन किया है। इनके अन्य ग्रंथ - शिवा बावनी तथा छत्रसाल दशक है जो कि प्रशस्ति परक ग्रंथ है। भूषण वीर रस के कवि हैं। आचार्य शुक्ल जी ने इनके अन्य तीन ग्रंथों का उल्लेख किया है। भूषण उल्लास, दूषण उल्लास तथा भूषण हजारा। चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने इन्हें 'कविभूषण' की उपाधि दी थी। कहते हैं कि महाराजा छत्रसाल ने इनकी पालकी पर अपना कंधा लगाया था।

254. निम्न में कौन सी रचना एवं रचनाकार का युग्म सही नहीं है?

(a) काव्यनिर्णय - भिखारीदास
(b) रसरहस्य - कुलपति मिश्र
(c) रसविलास - चिंतामणि
(d) भावविलास - केशवदास

UP TGT 2013

Ans. (d) 'भाव विलास- केशवदास' रचना एवं रचनाकार का युग्म सही नहीं है। 'भाव विलास' के रचनाकार कवि देव (देवदत्त) हैं। यह इनकी प्रथम रचना है। इस ग्रंथ को इन्होंने औरंगजेब के बड़े पुत्र आजम को सुनाया था, जो हिन्दी कविता के प्रेमी थे। इनके कुल 72 ग्रंथ बताये जाते हैं जिनमें कुछ इस प्रकार हैं – भवानी विलास, कुशल विलास, रस विलास, जाति विलास, अष्टयाम, देवशतक, देवचरित, शब्द या काव्य रसायन, सुजान विनोद, सुख सागर तरंग, प्रेमतरंग, राग रत्नाकर, देवमाया प्रपंच, प्रेम चन्द्रिका आदि हैं। शेष अन्य युग्म रचना एवं रचनाकार की दृष्टि सही है।

255. निम्न में से किस कवि ने 'सतसई' की रचना नहीं की है?

(a) मतिराम (b) सेनापति
(c) बिहारी (d) वृंद

UP TGT 2013

Ans. (b) कवि सेनापति ने 'सतसई' की रचना नहीं की है। सेनापति द्वारा रचित दो ग्रंथ हैं – (a) कवित्त रत्नाकर, (b) काव्य कल्पद्रुम। जबकि मतिराम, बिहारी तथा वृंद ने 'सतसई' नामक ग्रंथ की रचना की है।

256. रीतिकालीन साहित्य पर किस काव्यशास्त्रीय परम्परा का गहरा असर है?

(a) हिंदी (b) संस्कृत
(c) मराठी (d) ब्रज

Jharkhand TGT 2017

Ans. (b) रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा का गहरा असर है। संस्कृत साहित्य शास्त्र के पाँच सम्प्रदायों (रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति व ध्वनि) में से अलंकार, रस व ध्वनि के लक्षण व उदाहरण ज्यादा देखने को मिलते हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा को हिन्दी में लाने का श्रेय आचार्य केशव को दिया जाता है।

257. रीतिकाल में कवित्त, सवैये के साथ और क्या लिखे गए थे?

(a) चौपाई (b) रुबाई
(c) दोहे (d) पद

Jharkhand TGT 2017

Ans. (c) रीतिकाल में कवित्त, सवैये के साथ 'दोहे' लिखे गए थे। पूरा रीतिकाल (स. 1700-1900) तीन भागों- रीतिबद्ध, रीतिमुक्त एवं रीतिसिद्ध में विभक्त हैं। 'रूबाई' एक प्रकार का फारसी छंद है, जिसमें चार चरण होते हैं तीसरे चरण को छोड़कर सभी में काफिया (तुक) मिलाया जाता है।

258. इनमें से किस कवि ने प्रबंधात्मक वीर काव्य की भी रचना की है?

(a) ग्वाल कवि (b) रामसहाय दास
(c) पद्माकर भट्ट (d) सम्मन

UGC NET II[nd] Paper June. 2016

Ans. (c) रीतिकाल में प्रबंधात्मक वीरकाव्य की रचना पद्माकर भट्ट ने किया है।

पद्माकर भट्ट के काव्य ग्रंथ- हिम्मत बहादुर विरुदावली (प्रबन्ध काव्य), पद्माभरण, जगद् विनोद, प्रबोध पचासा, गंगालहरी, प्रताप सिंह विरुदावली (प्रबन्ध काव्य), कलिपच्चीसी, रामरसायन, अलीजाह प्रकाश।

ग्वाल कवि के काव्य ग्रंथ-
यमुनालहरी, भक्त भावन, रसिकानंद, रसरंग, कृष्ण जू को नखशिख, दूषण दर्पण, राधा माधव मिलन, राधाष्टक, कवि हृदय विनोद, कवि दर्पण, नेह निर्वाह, बंसी बीसा, कुब्जाष्टक, षड्ऋतु वर्णन, अलंकार भ्रम भंजन, रसरूप, दृगशतक।

रामसहाय छंद निरूपण कवि के काव्य ग्रंथ-
वृत्त-तरंगिणी (1816 ई.), शृंगार सतसई (1648), वाणी भूषण, रामसतसई तथा ककहरा।

'सम्मन' (नीति काव्यकार) कवि के काव्य ग्रंथ-
स्फुट दोहा तथा पिंगल काव्यभूषण

259. 'प्रबोधपचासा' ग्रंथ के रचयिता कौन हैं?
(a) रामानन्द (b) कबीर
(c) मतिराम (d) पद्माकर

UP TGT 2013

Ans. (d) 'प्रबोध पचासा' ग्रंथ के रचयिता 'पद्माकर' हैं। पद्माकर रीति काल के अंतिम प्रसिद्ध कवि हैं तथा इनके काव्य में 'श्रृंगार', 'भक्ति' और 'वीर रस' की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रताप सिंह विरुदावली, पद्माभरण, जगद् विनोद, गंगा लहरी, कलिपच्चीसी, राम रसायन, अलीजाह प्रकाश आदि।

260. इनमें से किस कवि ने सतसई की रचना नहीं की है?
(a) रसनिधि (b) वृन्द
(c) भूपति (d) बेनी 'प्रवीन'

UGC NET IInd Paper June. 2016

Ans. (d) बेनी 'प्रवीन' ने सतसई की रचना नहीं की है। **बेनी प्रवीन के काव्यग्रंथ-**शृंगार भूषण, नवरस तरंग, (1817 ई.) नानाराव प्रकाश।

वृन्द के काव्य ग्रंथ- बारहमासा (1668 ई.), भाव पंचाशिका (1686 ई.), नयन पचीसी (1686 ई.), पवन पचीसी (1691 ई.), शृंगार शिक्षा (1691 ई.), यमक सतसई (1706 ई.), वृन्द विनोद सतसई।

रसनिधि (पृथ्वी सिंह) के काव्य ग्रंथ- रतनहजारा, विष्णुपद कीर्तन, कवित्त, बारहमासा, रसनिधि सागर, हिंडोला, अरिल्ल, रसनिधि सतसई।

भूपति के काव्य ग्रंथ-भूपति सतसई, कण्ठाभूषण, तथा रसरत्नाकर।

261. जन्मकाल के अनुसार निम्नलिखित कवियों का सही अनुक्रम है :
(a) बिहारी, देव, भिखारीदास, पद्माकर
(b) देव, बिहारी, पद्माकर, भिखारीदास
(c) भिखारीदास, देव, बिहारी, पद्माकर
(d) भिखारीदास, बिहारी, देव, पद्माकर

UGC NET IInd Paper June. 2016

Ans. (a)

कवि	जीवनकाल
बिहारी	1595- 1663 ई.
देव	1673- 1767 ई.
भिखारीदास	18वीं शताब्दी (1750 ई. के आसपास)
पद्माकर	1753 - 1833 ई.

262. 'अंग दर्पण' किस कवि की रचना है :
(a) रसलीन (b) मुबारक
(c) बेनी प्रवीन (d) रामसिंह

UGC NET IIIrd Paper June. 2016

Ans. (a) 'अंग दर्पण' (1737 ई.) तथा रस प्रबोध (1741 ई.), रसलीन की काव्य कृतियाँ हैं। शृंगार भूषण, नवरस तरंग (1817 ई.), नानाराव प्रकाश आदि बेनी 'प्रवीन' की काव्य कृतियाँ हैं।
जुगल विलास, रस शिरोमणि, अलंकार दर्पण तथा रस निवास आदि राम सिंह की काव्य कृतियाँ हैं। अलकशतक और तिलशतक आदि मुबारक (सैयद मुबारक अली; बिलग्रामी) के काव्य ग्रंथ हैं।

263. 'पानिप अपार घन आनँद उकति ओछी
जतन जुगति जोन्ह कौन पै नपति है।'
उक्त काव्यांश में कवि क्या कहना चाहता है?
(a) नायिका का सौंदर्य वर्णन असंभव नहीं है
(b) नायिका के सौंदर्य से अच्छी कवि की उक्ति है
(c) नायिका के सौंदर्य की तुलना में मेरी उक्ति निकृष्ट है।
(d) नायिका का सौंदर्य और कवि की उक्ति दोनों अच्छे हैं।

UGC NET IIIrd Paper June. 2016

Ans. (c) 'पानिप अपार घन आनँद उकति ओछी'
जतन जुगति जोन्ह कौन पै नपति है।'
उक्त काव्यांश में कवि घनानन्द कहना चाहते है कि नायिका के सौन्दर्य की तुलना में मेरी उक्ति (कहावत) निकृष्ट (निम्न कोटि) की है। कवि नायिका के अपूर्व सौन्दर्य का वर्णन करता है।

264. जन्मकाल के आधार पर निम्नलिखित रचनाकारों का सही अनुक्रम है :
(a) भूषण, चिंतामणि, केशवदास, सेनापति
(b) सेनापति, भूषण, केशवदास, चिंतामणि
(c) केशवदास, सेनापति, चिंतामण, भूषण
(d) सेनापति, केशवदास, भूषण, चिंतामणि
Ans. (c)

UGC NET IIIrd Paper June. 2016

Ans. (c)

रचनाकार	जीवनकाल
केशवदास	1555–1617 ई.
सेनापति	1589–1688 ई.
चिंतामणि	1609–1685 ई.
भूषण	1613–1715 ई.

265. रचना-काल के अनुसार निम्नलिखित कवियों का सही अनुक्रम है :
(a) भिखारीदास, चिंतामणि, देव, महाराज जसवंत सिंह
(b) चिंतामणि, देव, भिखारीदास, महाराज जसवंत सिंह
(c) महाराज जसवंत सिंह, चिंतामणि, देव, भिखारीदास
(d) चिंतामणि, महाराज जसवंत सिंह, देव, भिखारीदास

UGC NET IInd Paper Jun. 2017

Ans. (d) रचनाकाल के अनुसार निम्नलिखित रीतिकालीन कवियों का सही अनुक्रम–

कवि	जीवनकाल
चिन्तामणि	- 1609 ई. - 1685 ई.
महाराज जसवंत सिंह	- 1626 ई. - 1688 ई.
देव	- 1673 ई. - 1767 ई.
भिखारीदास	- 1728 ई. - 1750 ई. (रचनाकाल)

266. निम्नलिखित काव्य कृतियों में से कौन-सी कृति 'प्रबंधकाव्य' नहीं है?

(a) चंडीचरित (b) रामचरित
(c) सुजानचरित (d) सुजानहितप्रबंध

UGC NET III[rd] Paper Jun. 2017

Ans. (d)

काव्य ग्रंथ	काव्यकार	विधा
चंडी चरित	गोविन्द सिंह	प्रबन्धकाव्य
सुजान चरित	सूदन	प्रबन्धकाव्य
रामचरित	सूरति मिश्र	प्रबन्धकाव्य
सुजान हित प्रबंध	घनानंद	काव्य ग्रंथ

267. 'गीति संग्रह' के रचनाकार हैं :

(a) सुरति मिश्र (b) रसनिधि
(c) रसिक गोविन्द (d) श्रीपति

UGC NET III[rd] Paper Jun. 2017

[illegible] **(b)** 'गीति संग्रह' के रचनाकार रसनिधि हैं। रसनिधि की अन्य [illegible]एँ– रतनहजारा, विष्णुपद कीर्तन, कवित्त, बारहमासा, रसनिधि [illegible]र, हिंडोला अरिल्ल आदि।

रसिक गोविन्द की रचनाएँ– रसिक गोविन्दानन्दघन, पिंगल, रसिक गोविन्द, युगल रस माधुरी, समय प्रबन्ध, लछिमन चन्द्रिका, अष्टदेश भाषा।

सूरति मिश्र की रचनाएँ- अलंकारमाला, रसरत्न माला, रससरस, रसग्राहक चन्द्रिका, नखशिख, काव्य सिद्धान्त, रस रत्नाकर, भक्ति विनोद, शृंगार सागर।

श्रीपति की रचनाएँ- काव्य सरोज, अलंकार गंगा, कविकल्पद्रुम।

268. 'शकुंतला नाटक' किसकी रचना है?

(a) जसवंतसिंह (b) राम
(c) नेवाज (d) नागरीदास

UGC NET III[rd] Paper Jun. 2017

Ans. (c) 'शकुन्तला नाटक' नेवाज की रचना है। यह ब्रजभाषा में रचित है तथा यह 1680 ई. में लिखा गया है।

'शकुन्तला नाटक' वास्तव में नाटक न होकर काव्यग्रंथ ही हैं इसमें उत्तम छंद की रचना है तथा भावों का मार्मिक चित्रण मिलता है। मिश्रबंधुओं ने इनकी भाषा की बड़ी प्रशंसा की है। संयोग-शृंगार का इन्होंने विशेष वर्णन किया है। इनकी रचनाशैली रीति स्वच्छंद कवि ठाकुर के समान है। नेवाज ने सहज ढंग से प्रेम व्यापार का वर्णन किया है।

269. कालक्रम की दृष्टि से निम्नलिखित काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है :

(a) अंगदर्पण, विरहवारीश, व्यंग्यार्थकौमुदी, मधुरप्रिया
(b) व्यंग्यार्थकौमुदी, अंगदर्पण, मधुरप्रिया, विरहवारीश
(c) विरहवारीश, मधुरप्रिया, अंगदर्पण, व्यंग्याथकौमुदी
(d) मधुरप्रिया, अंगदर्पण, व्यंग्यार्थकौमुदी, विरहवारीश

UGC NET III[rd] Paper Jun. 2017

Ans. (a)

काव्यग्रंथ	प्रकाशन काल	रचनाकार
अंगदर्पण	1737 ई.	रसलीन
विरह वारीश	–	बोधा
व्यंग्यार्थ कौमुदी	1825 ई.	प्रतापसाहि
मधुरप्रिया	–	पजनेश

270. वृन्द-सतसई की विषय-वस्तु क्या है?

(a) नायिका-भेद (b) शृंगार
(c) नीति (d) भक्ति

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (c) 'वृन्द सतसई' रीतिकालीन कवि वृन्द द्वारा रचित नीतिपरक रचना है। जिसमें नीति के 700 दोहे हैं।

271. इन कवियों में सही कालक्रम का निर्देश कीजिए।

(a) चिंतामणि-केशवदास-मतिराम-पद्माकर
(b) मतिराम-पद्माकर-चिंतामणि-केशवदास
(c) पद्माकर-केशवदास-मतिराम-चिंतामणि
(d) केशवदास-चिंतामणि-पद्माकर-मतिराम

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (*)

कवि	जीवनकाल
केशवदास	1555-1617 ई.
चिंतामणि	1609-1685 ई.
मतिराम	1617-1701 ई.
पद्माकर	1753-1833 ई.

नोट – कोई भी अनुक्रम सही नहीं है।

272. निम्नलिखित ग्रंथों को आलोचकों के साथ सुमेलित कीजिए।

(a) बिहारी सतसई (i) लाला भगवान दीन
(b) देव और बिहारी (ii) कृष्ण बिहारी मिश्र
(c) बिहारी (iii) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(d) बिहारी और देव (iv) पद्मसिंह शर्मा
(v) महावीर प्रसाद द्विवेदी

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iv	ii	iii	i
(b)	iii	i	ii	v
(c)	iv	ii	i	iii
(d)	v	iv	i	ii

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2004

Ans. (a)

आलोचना ग्रंथ	आलोचक
बिहारी सतसई	पद्म सिंह शर्मा
देव और बिहारी	कृष्ण बिहारी मिश्र
बिहारी	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
बिहारी और देव	लाला भगवानदीन
रसज्ञ रंजन (निबन्ध)	महावीर प्रसाद द्विवेदी

273. इनमें से कौन रीतिबद्ध नहीं है?

(a) मतिराम (b) केशवदास
(c) घनानन्द (d) चिन्तामणि

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2006
UP PGT 2011, NVS TGT 2016

Ans. (c) 'घनानन्द' रीतिबद्ध नहीं हैं, बल्कि रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। **रीति काल के रीतिबद्ध काव्य धारा के कवि-** केशवदास (1555-1617), सेनापति, जसवंत सिंह (1626-1688), मतिराम (1617-1701), देव (1673-1767), भिखारीदास, पद्माकर (1653-1833), **रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि -** शेखआलम, घनानन्द (1689-1739), बोधा, ठाकुर (1766-1833), द्विजदेव (1820-1869), **रीतिकाल के रीतिसिद्ध काव्य धारा के कवि -** बिहारी लाल (1595-1663)

274. कवियों और कृतियों का सुमेलन कीजिए।

(a) केशवदास — (i) ललित ललाम
(b) मतिराम — (ii) रसिक प्रिया
(c) भूषण — (iii) भाव विलास
(d) देव — (iv) आर्यासप्तशती
(v) शिवाबावनी

कोड-

	A	B	C	D
(a)	v	iii	ii	i
(b)	ii	i	v	iii
(c)	iv	v	i	ii
(d)	ii	iv	iii	i

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2006

Ans. (b)

काव्य ग्रन्थ	कवि
ललितललाम	मतिराम
रसिक प्रिया	केशवदास
भाव विलास	देव
शिवा बावनी	भूषण
आर्या सप्तशती	गोवर्धनाचार्य

275. इन काव्य पंक्तियों को उनके कवियों के साथ सुमेलित कीजिए।

(a) अति सूधौं सनेह को मारगु है — (i) पदमाकर
(b) साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि — (ii) भिखारी दास
(c) गुलगुली गिल में गलीचा है गुनीजन है — (iii) भूषण
(d) आगे के कवि रीझिहै तो कविताई न तो राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानौ है — (iv) बोधा
(v) घनानन्द

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iv	i	iii	v
(b)	v	iii	iv	i
(c)	ii	v	i	iii
(d)	v	iii	i	ii

UGC NET II[nd] Paper June. 2007

Ans. (d)

काव्य पंक्ति	पंक्तिकार
अति सूधौं सनेह को मारगु है	घनानन्द
साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि	भूषण
गुलगुली गिल में गलीचा है गुनीजन है	पद्माकर
आगे के कवि ....बहानौ है	भिखारीदास

अति खीन मृनाल के तारहु ते नहिं ऊपर पाँव दै आवनो है। — बोधा
यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है।।

276. इनमें से किस कवि ने लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा?

(a) देव (b) पद्माकर
(c) भूषण (d) बिहारी

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2007

Ans. (d) कवि बिहारी ने लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा है। रस,अलंकार, नायिका भेद, इत्यादि इसके ध्यान में तो हैं परन्तु काव्य में इन्होंने इसका प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं किया है। रीतिसिद्ध काव्य धारा के प्रमुख कवि- बिहारी हैं। काव्य के लक्षण दोहा, सवैया, कवित्त इत्यादि छन्दों या रस, अलंकार आदि सिद्धान्तों के रूप में कवि आचार्यों द्वारा निरूपण ही लक्षण ग्रन्थ होता है। इनकी रचना लक्षण और उदाहरण युक्त होती है। इन्हें रीतिबद्ध या आचार्य कवि भी कहा जाता है। रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि-देव, पद्माकर, भूषण इत्यादि हैं।

277. निम्नलिखित में से कौन आचार्य कवि नहीं हैं?

(a) केशवदास (b) भिखारीदास
(c) चिन्तामणि (d) ब्रजवासीदास

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2008

Ans. (d) ब्रजवासीदास रीतिकाल के अन्य कवियों की श्रेणी में 'प्रबन्धकाव्यकार' के रूप में आते हैं। ब्रजविलास (1770ई.) इनकी प्रबन्ध रचना है। इसमें 'सूरसागर' के कथाक्रम में कृष्ण के जीवन का चित्रण किया गया है। केशवदास (1555-1617) भिखारीदास तथा चिन्तामणि (1609-1685) रीतिकाल के आचार्य कवियों में गिने जाते हैं।

278. रीतिमुक्त कवि नहीं है

(a) घनानन्द (b) बोधा
(c) जसवन्त सिंह (d) ठाकुर

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2009

Ans. (c) जसवन्त सिंह रीतिमुक्त कवि नहीं हैं। ये रीतिबद्ध कवि हैं। **रीतिबद्ध काव्य धारा के कवि-**जसवन्त सिंह (1626-1688), चिन्तामणि (1609-1685), देव (1673-1767), पद्माकर (1753-1833) मतिराम (1717), भूषण (1613-1715) आदि कवि हैं।
रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि-घनानन्द (1689-1739), ठाकुर (1766-1833), द्विजदेव (1820-1869), शेख आलम तथा बोधा आदि कवि हैं।
रीतिसिद्ध काव्य धारा के कवि - बिहारी लाल (1595-1663)

279. अमिय हलाहल मदभरे श्वेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत एक बार।
-किसकी पंक्तियाँ हैं ?

(a) बिहारी (b) रसलीन
(c) केशवदास (d) घनानन्द

UGC NET II[nd] Paper June. 2010, UP PGT 2002, UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (b)

पंक्ति	पंक्तिकार
अमिय हलाहल मदभरे श्वेत स्याम रतनार। जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत एक बार।	रसलीन

सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात। मनहु नील मणि-शैल पर आतप पर्यो प्रभात।।	बिहारी
अति सुधौ सनेह को मारगु हैं, जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं।	घनानंद
जदपि सुजाति सुलक्षनी, सुबरन सरस सुवृत्त भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त।।	केसवदास

280. इनमें से कौन सी रचना केशवदास की नहीं है?

(a) रामचन्द्रिका (b) कविप्रिया
(c) ललित ललाम (d) रसिकप्रिया

UGC NET IInd Paper Dec. 2010

Ans. (c) 'ललितललाम' केशवदास की नहीं, बल्कि मतिराम का रचना है।

केशवदास की प्रमुख रचनाएँ- रसिक प्रिया (1591 ई.) रामचन्द्रिका (1601 ई.), कविप्रिया (1601 ई.), रतन बावनी (1607 ई.), वीर सिंह देव चरित (1607 ई.), विज्ञान गीता (1610 ई.), जहाँगीर जस चन्द्रिका (1612 ई.), नखशिख, छंदमाल है। जबकि फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्यसार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका तथा वृत्त कौमुदी आदि मतिराम की काव्य ग्रंथ हैं।

281. निम्नलिखित में से कौन सी रचना चिन्तामणि की है?

(a) अलंकार प्रकाश (b) रसराज
(c) कवि कुलकल्पतरू (d) काव्य निर्णय

UGC NET IInd Paper Dec. 2011

[illegible] (c)

[illegible]व्य रचना	रचनाकार
कविकुल कल्पतरु	चिंतामणि
रसराज	मतिराम
अलंकार प्रकाश	भूषण 'मुरलीधर'
काव्य निर्णय	भिखारीदास

282. देव कवि की रचना है :

(a) काव्यनिर्णय (b) रसराज
(c) शृंगार निर्णय (d) भाव विलास

UGC NET IIIrd Paper June. 2012

Ans. (d)

रचना	रचनाकाल	रचनाकार
भाव विलास	1689 ई.	देवकवि (देव)
काव्य निर्णय	1746 ई.	भिखारीदास
रसराज	1633-43 ई.	मतिराम
शृंगार निर्णय	1750 ई.	भिखारीदास

283. निम्नलिखित में से कौन सा मतिराम का ग्रंथ नहीं है?

(a) रसराज (b) रसविलास
(c) ललित ललाम (d) छंदसार

UGC NET IIIrd Paper June. 2012

Ans. (b) 'रसविलास' ग्रन्थ मतिराम की नहीं है, बल्कि चिन्तामणि व देव की रचना है। रसविलास, छन्द विचार पिंगल, शृंगार मंजरी कविकुलकल्पतरू, कृष्ण चरित, काव्य विवेक, काव्यप्रकाश, कवित्त विचार आदि चिन्तामणि (1609 ई.-1685 ई.) की रचनाएँ हैं। फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज (1633-43 ई.), ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी आदि रचनाएँ मतिराम (1617 ई.-1701 ई.) की है।

284. निम्नलिखित में से कौन रीतिमुक्त कवि नहीं है?

(a) बोधा (b) ठाकुर
(c) पद्माकर (d) आलम

UGC NET IIIrd Paper June. 2012

Ans. (c) 'पद्माकर' रीतिमुक्त कवि नहीं हैं। बोधा, ठाकुर (1766 ई.-1833 ई.), घनानन्द (1689 ई.-1739 ई.) द्विजदेव (1820 ई.-1869 ई.), शेख आलम, आदि रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। केशवदास, सेनापति, जसवंत सिंह (1626 ई.-1688 ई.), मतिराम, (1617 ई.-1701 ई.), देव (1673 ई.-1767 ई.) भिखारीदास, पद्माकर (1753 ई.-1833 ई.) आदि रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं। जबकि बिहारी (1595 ई.-1663 ई.) रीतिकाल के रीतिसिद्ध काव्यधारा के कवि हैं।

285. निम्नलिखित कवियों के साथ उनकी कृतियों को सुमेलित कीजिए :

(A) चिंतामणि **(i) छत्रसाल दशक**
(B) मतिराम **(ii) काव्य मंजरी**
(C) भूषण **(iii) वृत्त कौमुदी**
(D) बोधा **(iv) विरह वारीश**
(v) कवि कुलकल्पतरू

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	iv	v
(b)	v	iii	i	iv
(c)	iv	iii	i	ii
(d)	ii	i	v	iv

UGC NET IIIrd Paper June. 2012

Ans. (b)

रचना	रचनाकार
कवि कुलकल्पतरू	चिन्तामणि
वृत्त कौमुदी	मतिराम
छत्रसाल दशक	भूषण
विरह वारीश	बोधा
काव्य मंजरी	पदुमनदास

286. निम्नलिखित कवियों का सही क्रम क्या है?

(a) पद्माकर - बिहारी - चिन्तामणि - केशवदास
(b) बिहारी - पद्माकर - केशवदास - चिन्तामणि
(c) चिन्तामणि - केशवदास - बिहारी - पद्माकर
(d) केशवदास - चिन्तामणि - बिहारी - पद्माकर

UGC NET IInd Paper Dec. 2012

Ans. (d) कवियों का जीवनकाल का सही अनुक्रम- केशवदास (1555 ई.-1617 ई.) चिन्तामणि (1609 ई.-1685 ई.) बिहारी (1595 ई.-1663 ई.) तथा पद्माकर (1753 ई.-1833 ई.) है।

नोट-रचनाकाल के अनुसार चिन्तामणि, बिहारी से पहले आते हैं।

287. प्रताप साहि की रचना नहीं है

(a) काव्य विलास (b) व्यंग्यार्थ कौमुदी
(c) नवरस तरंग (d) शृंगार मंजरी

UGC NET IIIrd Paper Dec. 2012

Ans. (c) 'नवरस तरंग' प्रताप साहि की रचना नहीं है, बल्कि बेनी 'प्रवीन' की रचना है। बेनी प्रवीन की अन्य रचनाएँ हैं- शृंगार भूषण, नानाराव प्रकाश। काव्य विलास (1809ई.), व्यंग्यार्थ कौमुदी (1825ई.), जयसिंह प्रकाश, शृंगार मंजरी, शृंगार शिरोमणि, अलंकार चिन्तामणि, काव्य विनोद, जुगल नखशिख इत्यादि प्रताप साहि की रचनायें हैं।

288. 'छत्रप्रकाश' प्रबंध काव्य के रचनाकार हैं
(a) सूदन (b) लालकवि
(c) भूषण (d) पद्माकर
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (b)

रचना	कवि
छत्रप्रकाश (प्रबन्धकाव्य)	लाल कवि
विष्णु विलास (मुक्तककाव्य)	
सुजान चरित (प्रबन्धकाव्य)	सूदन
जगद् विनोद (लक्षणग्रन्थ)	पद्माकर
छत्रसाल दशक (प्रबन्धकाव्य)	भूषण

289. निम्नलिखित में से कौन नीतिकार कवि नहीं है?
(a) रहीमदास (b) गिरधर कविराय
(c) दीनदयाल गिरि (d) गिरिधर दास
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (d) रहीमदास, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि, बैताल, सम्मन तथा रामसहाय दास-रीतिकाल के प्रसिद्ध नीतिकाव्यकार हैं। गिरिधरदास, रीतिकाल के अलंकार निरूपण रीतिबद्ध कवियों में एक हैं। भारती भूषण (1833 ई.) इनकी प्रसिद्ध रचना है।

290. इनमें किसका समय सबसे बाद में है?
(a) केशवदास (b) रहीमदास
(c) घनानंद (d) पद्माकर
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2012

Ans. (d) जन्म के अनुसार कवियों का कालक्रम-
रहीमदास (1553 ई.-1626 ई.), केशवदास (1555 ई.-1617 ई.)
घनानन्द (1689 ई.-1739 ई.), पद्माकर (1753 ई.-1833ई.)

291. इन कृतियों का काल के आधार पर सही अनुक्रम कौन सा है?
(a) रसिकप्रिया-शृंगार मंजरी-षड्ऋतु वर्णन-रस रहस्य
(b) शृंगार मंजरी-षड्ऋतु वर्णन-रसिकप्रिया-रस रहस्य
(c) रस रहस्य-षड्ऋतु वर्णन- रसिकप्रिया-शृंगार मंजरी
(d) षड्ऋतु वर्णन-रस रहस्य-रसिकप्रिया-शृंगार मंजरी
UGC NET II[nd] Paper Dec. 2013

Ans. (a) कृतियों का प्रकाशन के अनुसार काल इस प्रकार है।

कृति	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
रसिक प्रिया	1591 ई.	केशवदास
शृंगार मंजरी	1643 ई.	चिंतामणि
षड्ऋतु वर्णन	1650-70ई.	ग्वालकवि
रस रहस्य	1670 ई.	कुलपति मिश्र

292. निम्नलिखित कृतियों को उनकी कवि आचार्यों के साथ सुमेलित कीजिए

सूची-I	सूची-II
(A) रस रहस्य	(i) भिखारीदास
(B) रससारांश	(ii) कुलपति मिश्र
(C) कविकुल कल्पतरु	(iii) मतिराम
(D) ललित ललाम	(iv) चिंतामणि
	(v) पद्माकर

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	i	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	v	iv	iii	ii
(d)	iv	ii	iii	i

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2013

Ans. (b)

रचनाकार	रचना	वर्ष
1. कुलपति मिश्र	रस रहस्य	1670 ई.
2. भिखारी दास	रस सारांश	1742 ई.
3. चिंतामणि	कविकुल कल्पतरु	1650 ई.
4. मतिराम	ललित ललाम	1661-64 ई. के बीच
5. पद्माकर	पद्माभरण	1810 ई. के लगभग

293. 'कविकुल कल्पतरू' के रचनाकार हैं
(a) देव (b) केशवदास
(c) चिंतामणि (d) भिखारीदास
UGC NET III[rd] Paper June. 2014

Ans. (c)

कवि/लेखक	रचना
चिंतामणि	कविकुलकल्पतरू, रसविलास, काव्य विवेक, शृंगार मंजरी
देव	भावविलास (1689 ई.), भवानीविलास, प्रेमचंद्रिका, सुजानविनोद, प्रेमतरंग काव्यरसायन
केशवदास	रसिकप्रिया (1591 ई.), रामचन्द्रिका (1601 ई.), कविप्रिया (1601 ई.), विज्ञान गीता (1610 ई.), छन्द माल
भिखारी दास	शृंगार निर्णय, शतरंज शतिका

294. रीति मुक्त शृंगारी कवि नहीं हैं–
(a) सेनापति (b) द्विजदेव
(c) आलम (d) ठाकुर
UGC NET III[rd] Paper June. 2014

Ans. (a) सेनापति रीतिमुक्त शृंगारी कवि नहीं हैं, बल्कि रीतिकाल के प्रसिद्ध रीतिबद्ध काव्यकार हैं। द्विजदेव, ठाकुर, आलम, बोधा, घनानन्द रीतिकाल के रीतिमुक्त शृंगारिक कवि हैं।

295. नीति कवि 'दीनदयाल गिरि' की रचना नहीं है-
(a) अनुरागबाग (b) वैराग्य दिनेश
(c) विश्वनाथ नवरत्न (d) छत्र प्रकाश
UGC NET III[rd] Paper June. 2014

Ans. (d) रीतिकाल के प्रसिद्ध नीतिकाव्यकार दीनदयालगिरि की प्रमुख रचना इस प्रकार है- अन्योक्तिकल्पद्रुम, अनुरागबाग, वैराग्य दिनेश, विश्वनाथ नवरत्न, दृष्टांततरंगिणी। जबकि छत्रप्रकाश, विष्णु विलास लालकवि की रचना है।

296. 'विज्ञान गीता' किस आचार्य कवि की कृति है?
(a) केशवदास (b) भिखारीदास
(c) पद्माकर (d) सेनापति
UGC NET III[rd] Paper Dec. 2014
UP TGT 2013

Ans. (a) 'विज्ञान गीता' आचार्य केशवदास की कृति हैं। यह प्रबोध चन्द्रोदय के आधार पर रचित अन्योपदेशिक काव्य है।

रचना	रचनाकार
कविप्रिया (1601 ई.), रसिकप्रिया (1591 ई.), विज्ञान गीता (1610 ई.)	केशवदास
रस सारांश (1742 ई.), काव्य निर्णय (1746 ई.), शृंगार निर्णय (1750 ई.), शतरंज शतिका	भिखारीदास
पद्माभरण, जगत विनोद, प्रबोध पचासा, गंगा लहरी	पद्माकर
कवित्तरत्नाकर, काव्यकल्पद्रुम	सेनापति

297. निम्नलिखित कवियों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेलित कीजिए

सूची-I	सूची-II
(A) आलम	(i) सुजानहित प्रबंध
(B) घनानंद	(ii) शृंगारलतिका सौरभ
(C) ठाकुर	(iii) माधवानल कामकंदला
(D) द्विजदेव	(iv) ठाकुर ठसक
	(v) इश्कनामा

कोड-

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	v	i	iii
(c)	iii	i	iv	ii
(d)	iv	iii	v	i

UGC NET II[nd] Paper June. 2015

Ans. (c)

कवि	रचना	विशेष
आलम	माधवानल-कामकंदला	ये जाति के ब्राह्मण थे किन्तु शेख नामक रंगरेजिन से विवाह कर मुसलमान हो गये, 'प्रेम का पीर या इश्क का दर्द' इनके एक एक वाक्य में भरा पड़ा है।
घनानन्द	सुजानहित-प्रबंध	घनानन्द दिल्ली के सुल्तान मुहम्मदशाह के मीर मुंशी थे। नादिरशाही सैनिकों द्वारा इनकी हत्या कर दी गयी।
ठाकुर	ठाकुर- ठशक	इनका जन्म ओरछा, बुन्देलखण्ड में कायस्थ परिवार में हुआ था। ये जैतपुर के राजा परीक्षित के आश्रयदाता थे।
बोधा	इश्कनामा	इनका वास्तविक नाम (बुद्धिसेन) था, 'इश्कनामा' प्रेम पर लिखे गये मुक्तकों का संग्रह है।
द्विजदेव	श्रृंगार- लतिका-सौरभ	इनका पूरा नाम 'मान सिंह' था, ये अयोध्या के नरेश थे।

298. रीतकाल के किस कवि ने अपनी कविताओं में ऋतुओं और त्योहारों के साथ जीवन को खूबसूरती के साथ मिलाया है?

(a) बिहारी (b) घनानंद
(c) देव (d) पद्माकर

UGC NET III[rd] Paper June. 2015

Ans. (d) पद्माकर ने अपनी कविताओं में ऋतुओं और त्योहारों के साथ जीवन को खूबसूरती के साथ मिलाया है। जैसे-
फागु की भीर अभीरिन में गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय लला फिर आयो खेलन होरी।।
नोट-शुक्ल जी कहते हैं "ऐसा सर्वप्रिय कवि इस काल के भीतर बिहारी को छोड़कर दूसरा नहीं हुआ।"

299. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना देव की नहीं है?

(a) कविकुलकल्पतरू (b) भावविलास
(c) भवानी विलास (d) अष्टयाम

UGC NET III[rd] Paper June. 2015

Ans. (a)'कविकुलकल्पतरु' रचना देव की नहीं है, बल्कि चिन्तामणि की है। प्रसिद्ध रीतिकाल के कवि देव की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-भाव विलास, भवानी विलास, अष्टयाम, रागरत्नाकर, कुशल विलास, जाति विलास, सुजान विनोद, प्रेमतरंग इत्यादि।

300. निम्नलिखित रचनाकारों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेलित कीजिए-

सूची-I	सूची-II
(A) भूषण	(i) रस रत्नाकर
(B) घनानंद	(ii) रसराज
(C) सूरति मिश्र	(iii) इश्कलता
(D) मतिराम	(iv) रस सारांश
	(v) अलंकार प्रकाश

कोड-

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	i	ii
(b)	iii	iv	ii	i
(c)	i	iv	iii	ii
(d)	ii	i	iv	iii

UGC NET III[rd] Paper June. 2015

Ans. (*) दिये गये विकल्पों में रचनाकार व रचनाओं का क्रम त्रुटपूर्ण है। जिसका उपयुक्त सुमेलित इस प्रकार होगा–

रचनाकार	रचना
भिखारीदास	रस सारांश
घनानन्द	इश्कलता
सूरति मिश्र	रस रत्नाकर
मतिराम	रसराज
भूषण	अलंकार प्रकाश

301. 'ललित ललाम' किसका ग्रंथ है?

(a) जसवंत सिंह (b) भूषण
(c) पद्माकर (d) मतिराम

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2015

Ans. (d)

काव्य ग्रन्थ	सन्	कवि
ललित ललाम (अलंकार निरूपण)	1664 ई.	मतिराम
प्रबोध चन्द्रोदय		जसवंत सिंह
शिवराज भूषण	1673 ई.	भूषण
पद्माभरण		पद्माकर

स्रोत-हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

302. निम्नलिखित रचनाकारों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) चिंतामणि	(i) अंगदर्पण
(B) मतिराम	(ii) शिवा बावनी
(C) भूषण	(iii) रस रहस्य
(D) रसलीन	(iv) रस राज
	(v) काव्य प्रकाश

कोड :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(iv)	(v)	(iii)	(ii)
(d)	(v)	(iv)	(ii)	(i)

UGC NET II[nd] Paper Dec. 2015

Ans. (d)

काव्य ग्रन्थ	रचनाकार
अंगदर्पण	रसलीन
शिवा बावनी	भूषण
रस रहस्य	कुलपति मिश्र
रसराज	मतिराम
काव्य प्रकाश	चिन्तामणि

नोट- रसलीन का मूल नाम गुलाब नबी था।

303. भिखारीदास ने 'काव्य निर्णय' में किसका विवेचन किया है?

(a) सर्वांग-विवेचन (b) छंद-विवेचन
(c) अलंकार-विवेचन (d) काव्य-भेद

UGC NET III^rd Paper Dec. 2015

Ans. (a) रीतिकालीन कवि भिखारीदास के ग्रंथ 'काव्य निर्णय' में काव्य के भेदों का वर्णन अर्थात सर्वांग-विवेचन किया है।
भिखारीदास के अन्य ग्रंथ निम्न हैं- नामकोश (1737 ई.) रस सारांश (1742 ई.), छंदार्णव पिंगल (1742ई), काव्य निर्णय (1746 ई.), शृंगार निर्णय (1750ई.), विष्णुपुराण भाषा, शतरंज शतिका, अमरकोश इत्यादि है।

304. निम्नलिखित ग्रंथों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
(A) हिततरंगिणी	(i) रहीम
(B) सुदामाचरित्र	(ii) केशवदास
(C) माधवानलकामकंदला	(iii) आलम
(D) विज्ञानगीता	(iv) नरोत्तमदास
	(v) कृपाराम

कोड-

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	ii	iii	iv	v	(b)	i	ii	iii	iv
(c)	v	iv	iii	ii	(d)	iv	v	ii	i

UGC NET III^rd Paper Dec. 2015

Ans. (c)

ग्रंथ	ग्रंथकार
हिततरंगिणी	कृपाराम
सुदामाचरित्र (खण्डकाव्य)	नरोत्तमदास
माधवानलकामकंदला	आलम
विज्ञान गीता (1610 ई.)	केशवदास
मदनाष्टक	रहीमदास

305. 'सुजान चरित' के रचयिता हैं –

(a) घनानंद (b) बोधा
(c) सूदन (d) मतिराम

UP PGT 2000

Ans. (c) 'सुजान चरित' रीति बद्ध काव्य धारा के कवि 'सूदन' की प्रबंध काव्य रचना है। इस काव्य की रचना सूदन ने अपने आश्रयदाता राजा बदन सिंह (भरतपुर) के पुत्र सुजान सिंह को लक्ष्य करके की है।

306. 'रीतिकाल' को 'कला काल' किसने कहा–

(a) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल
(c) मिश्र बन्धु
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

UP PGT 2000

Ans. (b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' द्वारा रीतिकाल को 'कला काल', मिश्र बन्धुओं द्वारा 'अलंकृत काल', विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा 'शृंगार काल' तथा रामचन्द्र शुक्ल द्वारा 'रीतिकाल' की संज्ञा दी गयी है।

307. भूषण दो राजाओं के दरबारी कवि थे। इनमें से पहले थे शिवाजी, दूसरे थे –

(a) महाराण प्रताप (b) राणा सांगा
(c) छत्रसाल (d) शम्भाजी

UP PGT 2002

Ans. (c) भूषण, शिवाजी और छत्रसाल के दरबारी कवि रहे हैं। इनका वास्तविक नाम 'घनश्याम' था। कहते हैं कि महाराजा छत्रसाल बुन्देला स्वयं इनकी पालकी में कन्धा लगाये थे। रीतिकाल में भी ये वीर रस की कविता करते हैं। भूषण को हिन्दी साहित्य का प्रथम राष्ट्रीय कवि माना जाता है।

308. इनमें से किस कवि की प्रेमिका का नाम 'सुजान' था?

(a) रसखान (b) बिहारी
(c) घनानंद (d) आलम

UP PGT 2002

Ans. (c) घनानन्द की प्रेमिका का नाम सुजान था। वे रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्य धारा के प्रमुख कवि थे। घनानन्द द्वारा पाँच ग्रन्थों की रचना की गई– (a) सुजान सागर, (b) कोकसार, (c) विरहलीला, (d) रस केलिवल्ली, (5) कृपाकंद।

309. "शतरंजशतिका" कृति के रचनाकार हैं–

(a) भिखारीदास (b) देव
(c) रसनिधि (d) चिन्तामणि

UP PGT 2003

Ans. (a) रीतिकालीन कवि भिखारीदास द्वारा रचित ग्रंथ शतरंजशतिका, नामकोश, रस सारांश, छंदार्णव पिंगल, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, विष्णु पुराण भाषा तथा अमरकोश आदि हैं। देव की रचनाएँ– भाव विलास, भवानी विलास, कुशल विलास, अष्टयाम, राग रत्नाकर, जाति विलास, रस विलास, सुजान विनोद, प्रेम तरंग, देवचरित, प्रेमचंद्रिका, काव्य रसायन, देवमाया प्रपंच तथा देवशतक आदि हैं। जबकि चिंतामणि की रचनाएँ निम्नवत् हैं – रस विलास, छंद विचार पिंगल, शृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरु, कृष्णचरित, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार तथा रामायण आदि हैं।
नोट- सुख सागर तरंग को नायिका भेद का विश्वकोश माना डॉ. नगेन्द्र।

310. भूषण का वास्तविक नाम था–

(a) घनश्याम (b) रासबिहारी
(c) कृष्णदास (d) चन्द्र भूषण

UP PGT 2003

Ans. (a) रीतिकालीन प्रमुख कवि भूषण का वास्तविक नाम घनश्याम था। वीर रस परक राजप्रशस्तियों की रचना करने वाले रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र घनश्याम को चित्रकूट के राजा रुद्रशाह सोलंकी ने 'भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। भूषण के प्रमुख रीतिग्रंथ निम्नवत् हैं- शिवराज भूषण, शिवा बावनी तथा छत्रसाल दशक। 'अलंकार प्रकाश' तथा 'छन्दोहृदय प्रकाश' नामक मुक्तक काव्य ग्रंथों की रचना मुरलीधर 'भूषण' ने की है। विद्वानों का एक अन्य वर्ग 'अलंकार प्रकाश' और 'छन्दोहृदय के रचयिता मुरलीधर 'भूषण' नामक कवि को तथा इन्हें (भूषण) एक ही मानता है किन्तु इस मान्यता की पुष्टि के लिए अभी ठोस प्रमाणों की आवश्यकता है।

311. **रीति काल को 'श्रृंगार काल' कहा है–**
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(b) आचार्य विश्वनाथ मिश्र ने
(c) मिश्रबन्धु ने
(d) रमाशंकर शुक्ल'रसाल' ने

UP PGT 2003, UP PGT 2005

Ans. (b) रीतिकाल को 'श्रृंगार काल' की संज्ञा आचार्य विश्वनाथ मिश्र ने दी है। मिश्र बन्धुओं ने रीतिकाल को 'अलंकृत काल' की संज्ञा दी है। जबकि रमाशंकर शुक्ल ने रीतिकाल को 'कलाकाल' की संज्ञा दी है।

312. **'जहाँगीर जस चन्द्रिका' के रचनाकार हैं :**
(a) रहीम (b) आचार्य केशवदास
(c) रसखान (d) मलिक मुहम्मद जायसी

UP PGT 2004

Ans. (b) 'जहाँगीर जस चन्द्रिका' के रचनाकार आचार्य केशवदास जी हैं। आचार्य केशवदास ओरछा नरेश महाराज रामसिंह के भाई इन्द्रजीत के राजकवि थे। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ 'रामचन्द्रिका', 'कविप्रिया', 'रसिक प्रिया', 'वीर सिंह देवचरित' आदि हैं।

313. **'रीतिकाल' को 'अलंकृत काल' कहा है :**
(a) मिश्र-बन्धु ने (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने (d) डॉ. रामकुमार वर्मा ने

UP PGT 2004

Ans. (a) मिश्र-बन्धुओं द्वारा रीतिकाल को 'अलंकृत काल' कहा [illegible]या है। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को 'श्रृंगारकाल' कहा [illegible]

[illegible]14. **रीतिकाल का वह कौन-सा कवि है जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया?**
(a) रहीम (b) मतिराम
(c) बिहारी (d) देव

UP PGT 2005

Ans. (c) कविवर बिहारी रीतिकालीन कविता के रीतिसिद्ध शाखा के एकमात्र कवि हैं, जो अपनी एकमात्र कृति 'बिहारी सतसई' से हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर हो गए। लगभग 713 दोहों की रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य के एक हजार वर्षों के इतिहास में लिखी गई सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। मुक्तक काव्य ग्रंथ 'सतसई' के बारे कहा गया है–

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर॥

अद्वितीय प्रतिभा के कारण बिहारी की सतसई उनके कलात्मक तथा भावात्मक ज्ञान का सुन्दर सामंजस्य प्रस्तुत करती है। कला की दृष्टि से 'बिहारी सतसई' का भाव पक्ष जितना मार्मिक और सबल है उतना ही उनका कला पक्ष भी सबल है।

315. **बिहारी कवि हैं–**
(a) रीति सिद्ध (b) रीति बद्ध
(c) रीति मुक्त (d) इनमें से कोई नहीं

UP PGT 2009, 2011
MP Assistant Prof. Hindi 2017

Ans. (a) रीतिकालीन काव्यधारा तीन धाराओं में बह रही थी - रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त। बिहारी 'रीतिसिद्ध परम्परा' के कवि हैं। इस श्रेणी के कवि अपनी रचना करते समय शास्त्रीय लक्षण नहीं प्रकट करते हैं किन्तु रचना के समय उसका ध्यान देते हैं। जिसका कुशल प्रयोग 'बिहारी सतसई' में देखा जा सकता है। रीतिबद्ध कवि लाक्षणिक ग्रंथ लिखकर शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह करते हैं तथा अपने ग्रंथों में नायिकाभेद, अलंकार भेद के लक्षण बताकर उसका उदाहरण देते हैं जबकि रीतिमुक्त कवि स्वच्छंद काव्य धारा की रचना करते हैं न तो वे शास्त्रीयता को ध्यान में रखते हैं न ही उसके मापदंडों को अपनी रचना में अपनाते हैं। ये प्रेम पीर के कवि कहे जाते हैं। इस कोटि में आलम, घनानन्द, बोधा, ठाकुर आते हैं।

316. **'भाषा बोलि न जानहिं जिनके कुल के दास'–यह कथन किस कवि का है –**
(a) तुलसीदास (b) केशवदास
(c) विद्यापति (d) जायसी

UP PGT 2009

Ans. (b) केशवदास संस्कृत के विद्वान थे। उनके यहाँ शुक सारिकादि संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। ऐसी उक्ति उनके विषय में प्रचलित थी। किन्तु केशवदास तुलसीदास से भी बढ़कर रचना प्रस्तुत करने के लिए 'रामचंद्रिका' का सृजन किया जिसको 'रामचरितमानस' जैसी प्रसिद्धि तो नहीं मिल पायी किन्तु वह छंदों की प्रयोगशाला अवश्य बन गयी और केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाने लगा। उपरोक्त उक्ति इस प्रकार है –
"भाषा बोलि न जानहिं जिनके कुल के दास।
भाषा कवि भो मंदमति तेहि कुलकेशवदास।।"

317. **अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।–पंक्ति के लेखक हैं**
(a) मतिराम (b) देव
(c) घनानंद (d) बिहारी।

UP PGT 2010

Ans. (c)

पंक्ति		**लेखक**
"अति सूधौं सनेह को मारगु हैं, जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं"	–	घनानंद
कुंदन को रंग फीकौ लगै झलकें सब अंगन चारु गुराई।	–	मतिराम
अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन। अधम व्यंजना रसबिरस, उलटी कहत नवीन।।	–	देव
तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग। अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।।	–	बिहारी

318. **'सुजान विनोद' के रचनाकार हैं–**
(a) घनानंद (b) देव
(c) पद्माकर (d) मतिराम।

UP PGT 2010

Ans. (b) 'सुजान विनोद' के रचनाकार कवि देव हैं। देव द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 72 बतायी जाती है किन्तु वर्तमान में इनके 15 ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं जो निम्नलिखित हैं – भाव विलास, भवानी विलास, अष्टयाम, प्रेमतरंग, कुशल विलास, जाति विलास, काव्य रसायन, सुख सागर तरंग, राग रत्नाकर, देवशतक, देवमाया प्रपंच आदि। घनानंद द्वारा रचित ग्रन्थ हैं–सुजानहितप्रबंध, कृपाकंद वियोगबेलि, पदावली, यमुनायश आदि। पद्माकर द्वारा रचित ग्रन्थ है–पद्माभरण, जगदविनोद, प्रबोध पचासा, गंगालहरी, कलिपच्चीसी, हिम्मत बहादुर विरुदावली आदि। फूलमंजरी, साहित्यसार, रसराज, लक्षण शृंगार, सतसई, वृत्त कौमुदी आदि की रचना मतिराम द्वारा की गई है।

319. चिन्तामणि द्वारा रचित 'प्रबन्ध काव्य' है–
(a) कृष्ण चरित (b) काव्य प्रकाश
(c) शृंगार मंजरी (d) रसविलास

UP PGT 2010

Ans. (a) चिन्तामणि ने रामायण, रामाश्वमेध तथा कृष्णचरित आदि प्रबन्ध काव्य की रचना की है। चिन्तामणि द्वारा रचित कुल ग्रन्थों की संख्या 9 बताई जाती है जो कि निम्नलिखित है – रस विलास, रामायण, कृष्णचरित, काव्यविवेक, काव्यप्रकाश, कवित्त विचार, शृंगार मंजरी, कविकुलकल्पतरु।

320. 'दृग उरझत टूटत कुटुम्ब, जुरत चतुर चित प्रीति' यह कथन किसका है?
(a) बिहारी (b) तुलसी
(c) जायसी (d) कबीर

UP PGT 2011

Ans. (a)

पंक्ति	कवि
दृग उरझत टूटत कुटुम्ब, जुरत चतुर चित प्रीति।	बिहारी
कवि विआस रस कँवला पूरी। दूरिहि निअर निअर भा दूरी।	जायसी
खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली।	तुलसीदास
हरि जननी मैं बालक तेरा।	कबीर

321. इनमें से कौन सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?
(a) घनानन्द (b) आलम
(c) बोधा (d) बिहारी

UP PGT 2011

Ans. (d) बिहारी रीतिमुक्त नहीं हैं, बल्कि रीतिकाल के एकमात्र रीतिसिद्ध काव्यधारा के कवि हैं। घनानन्द, आलम, बोधा आदि तीनों रीतिकाल के प्रमुख रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं।

322. बिहारी की रचना का क्या नाम है?
(a) बिहारी रत्नाकर (b) बिहारी सतसई
(c) सतसैया (d) बिहारी बोधिनी

UP PGT 2011

Ans. (b) रीतिकाल के रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि बिहारी लाल के एकमात्र कृति 'बिहारी सतसई' (ब्रजभाषा में) है। इसमें 719 दोहे हैं। बिहारीलाल महाराजा जयसिंह के आश्रय में थे तथा इनके गुरु का नाम नरहरिदास था एवं ये निम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे।

323. ''सिवा को बखानौं कि बखानौं छत्रसाल को'' में सिवा का अर्थ क्या है?
(a) शिवजी (b) शिवाजी
(c) महादेव (d) बालाजी

UP PGT 2013

Ans. (b) उक्त पंक्ति में सिवा का अर्थ 'शिवाजी' है। यह पंक्ति रीति कालीन कवि भूषण की है। भूषण महाराज शिवाजी तथा महाराज छत्रसाल के आश्रित कवि थे। कहते हैं कि महाराज छत्रसाल ने इनकी पालकी पर अपना कंधा लगाया था जिस पर इन्होंने कहा था–'सिवा को बखानौं कि बखानौं छत्रसाल को।'

324. ''सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर'' में नावक का क्या अर्थ है?
(a) नायक (b) बहेलिया
(c) नाविक (d) नाव का

UP PGT 2013

Ans. (*) 'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर' में नावक का अर्थ दिए गये विकल्पों में कोई भी एक उत्तर सही नहीं है। अतः आयोग ने इसका उत्तर (F) फुलमार्क दिया है।
⇒ नावक का अर्थ छोटा तीर, मधुमक्खी का डंक होता है।
स्रोत- (हिन्दी शब्दकोश डा. हरदेव बाहरी)

325. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए :

सूची-I (लक्षण ग्रन्थ)	सूची-II (आचार्य)
A. रसिक प्रिया	1 चिंतामणि
B. काव्य प्रकाश	2. मतिराम
C. ललित ललाम	3. कुलपति मिश्र
D. रस रहस्य	4. केशवदास

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	3	4	1
(b)	4	1	2	3
(c)	3	4	1	2
(d)	1	2	3	4

K.V. PGT. 2015

Ans. (b) निम्नलिखित सूचियों का सही सुमेलन इस प्रकार होगा–

सूची-I लक्षण ग्रंथ	सूची-II आचार्य
रसिक प्रिया	केशवदास
काव्य प्रकाश	चिंतामणि
ललित ललाम	मतिराम
रस रहस्य	कुलपति मिश्र

326. रीतिकाल की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति
(a) नायिका भेद और शृंगार रस विवेचन
(b) अलंकार विवेचन
(c) छन्द विवेचन
(d) शब्द शक्ति और काव्य गुण-दोष विवेचन

K.V. PGT. 2015

Ans. (a) रीतिकाल की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति नायिका भेद और शृंगार रस विवेचन रहा है।

327. भूषण के ग्रन्थों में अलंकार निरूपक है
(a) शिवा बावनी (b) शिवराज भूषण
(c) छत्रसाल दशक (d) दूषण उल्लास

K.V. PGT. 2015

Ans. (b) शिवराज भूषण, कवि भूषण की प्रसिद्ध रचना है। रीतिकाल का कवि होने के कारण भूषण ने अपने ग्रंथ 'शिवराज भूषण' को अलंकार के ग्रंथ के रूप में बनाया। दोहों में अलंकारों की परिभाषा दी गयी है तथा कवित्त एवं सवैय्या छंदों में उदाहरण दिए गये हैं, जिनमें शिवाजी के कार्यकलापों का वर्णन किया गया है।

328. मतिराम की भाषा है
(a) बोलचाल की ब्रजभाषा (b) साहित्यिक ब्रजभाषा
(c) साहित्यिक अवधी (d) साहित्यिक राजस्थानी

K.V. PGT. 2015

Ans. (b) मतिराम की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है। शुक्ल जी ने लिखा है, मतिराम की सी रस स्निग्ध और प्रसाद पूर्ण भाषा रीति का अनुसरण करने वालों में बहुत कम मिलती है। मतिराम चिन्तामणि त्रिपाठी और भूषण के सहोदर भाई थे। मतिराम द्वारा रचितग्रंथ है– फूलमंजरी, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार आदि।

329. वियोग शृंगार का प्रधान मुक्तक कवि

(a) घनानन्द (b) रसलीन
(c) पद्माकर (d) आलम

K.V. PGT. 2015

Ans. (a) वियोग शृंगार का प्रधान मुक्तक कवि घनानंद हैं। घनानंद का जन्म 1689 ई. में बुलन्दशहर में हुआ था। ये निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनके आश्रय दाता मुहम्मदशाह 'रंगीला' थे। इनकी प्रेयसी का नाम 'सुजान' था। इनके द्वारा रचित ग्रंथ है– सुजान सार, इश्कलता, विरहलीला, वियोगबेलि, कोकसार, कृपाकंद, रसिकेलि वल्ली, यमुनायश आदि।

330. 'कवित्त रत्नाकर' किस भाषा में रचित है?

(a) ब्रजभाषा (b) अवधी भाषा
(c) खड़ी बोली (d) राजस्थानी भाषा

GIC. PGT 2012

Ans. (a) 'कवित्त रत्नाकर' सेनापति द्वारा 'ब्रजभाषा' में रचित है। इसमें पांच तरंग और 394 छंद में रामकथा का वर्णन है। सेनापति का जन्म सन् 1589 ई. के आस-पास माना जाता है। इनके गुरु का नाम हीरामणि दीक्षित था। इनके द्वारा रचित एक अन्य ग्रंथ 'काव्य कल्पद्रुम' है जो एक रीति ग्रंथ माना जाता है। सेनापति ब्रजभाषा के कवि हैं और उनका प्रिय अलंकार 'श्लेष' है।

331. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि रीतिबद्ध परम्परा में है?

(a) बिहारी लाल (b) घनानन्द
(c) मतिराम (d) आलम

GIC. PGT 2012

Ans. (c) 'मतिराम' रीतिबद्ध परंपरा के कवि है। रीतिबद्ध परंपरा के अन्य कवि हैं- चिन्तामणि, भूषण, जसवंत सिंह, सुखदेव मिश्र, तोषनिधि, कुलपति मिश्र, देव आदि। जबकि बिहारी लाल रीतिसिद्ध कवि तथा घनानंद, बोधा, ठाकुर और आलम, रीति मुक्त कवि है।

332. ''ऋतुवर्णन तो इनके ऐसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है।''– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के लिए है?

(a) बिहारी (b) घनान्दन
(c) सेनापति (d) पद्माकर

GIC. PGT 2015

Ans. (c) 'ऋतु वर्णन तो इनके जैसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है'। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन सेनापति के लिए है। सेनापति ब्रजभाषा के रामभक्त कवि हैं। इनका सर्वाधिक प्रिय अलंकार 'श्लेष' है। इनके रचित ग्रन्थ हैं- कवित्तरत्नाकर, काव्य कल्पद्रुम।

333. रीतिकाल के निम्नलिखित कवियों को उनकी रचनाओं के साथ सुमेल कीजिए :

सूची–I (कवि का नाम)	सूची–II (रचना का नाम)
(A) चिन्तामणि	(i) रस सारांश
(B) रसलीन	(ii) 'रसराज'
(C) भिखारीदास	(iii) 'रसविलास'
(D) मतिराम	(iv) 'रस-प्रबोध

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iii	iv	i	ii

GIC. PGT 2015

Ans. (d) निम्नलिखित रीतिकालीन कवियों की उनकी रचनाओं के साथ सुमेल इस प्रकार होगा-

(कवि का नाम)		(रचना का नाम)
चिन्तामणि	-	रसविलास
रसलीन	-	रसप्रबोध
भिखारीदास	-	रस सारांश
मतिराम	-	रसराज

334. लक्षण ग्रन्थ 'कविकुल कल्पतरु' के रचयिता हैं :

(a) आचार्य केशवदास (b) आचार्य चिन्तामणि
(c) आचार्य श्रीपति मिश्र (d) आचार्य भिखारीदास

GIC. PGT 2015

Ans. (b) लक्षण ग्रंथ 'कविकुल कल्पतरु' के रचयिता आचार्य चिन्तामणि हैं। चिन्तामणि द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं- रस विलास, छन्द विचार पिंगल, शृंगार मंजरी, कृष्णचरित, काव्य विवेक, काव्यप्रकाश, कवित्त विचार, रामायण।

335.'सगुण अलंकारन सहित दोष रहित जो होय।
शब्द अरथ ताको कवित बिबुध कहत सब कोय।।'
-काव्य-विषयक यह परिभाषा इनमें से किस आचार्य कवि की है?

(a) चिन्तामणि (b) केशवदास
(c) भिखारीदास (d) मतिराम

GIC. PGT 2015

Ans. (a) उपर्युक्त काव्य विषयक यह परिभाषा आचार्य कवि चिन्तामणि की है। जबकि केशवदास
कोमल शब्द निबंत सुवृत। अलंकार मोहन चित्त।
काव्य सुपद्धति सोभा महे। इनके बाहुपाश कवि गहे।

336. हिन्दी की 'रसरीति' परंपरा का प्रस्थान ग्रंथ है

(a) रसिकप्रिया (केशवदास)
(b) हिततरंगिणी (कृपाराम)
(c) रस पीयूष निधि (सोमनाथ)
(d) रस रत्नाकर (सुरति मिश्र)

GIC. PGT 2009

Ans. (a) हिन्दी की 'रसरीति' परंपरा का प्रस्थान ग्रंथ आचार्य केशव द्वारा रचित 'रसिक प्रिया' (1591ई.) को माना जाता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. नगेन्द्र और गणपति चन्द्र गुप्त आदि विद्वानों ने केशवदास को हिन्दी में रीतिकाव्य का प्रवर्तक माना है। जबकि कुछ विद्वान कालक्रम की दृष्टि से कृपाराम कृत 'हिततरंगिणी' को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अखण्ड परंपरा चलाने के दृष्टि से आचार्य चिंतामणि को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है।

337. 'माधवानल कामकंदला' किसकी रचना है?

(a) बोधा (b) ठाकुर
(c) गंग (d) आलम

GIC. PGT 2009
Ashram Paddhati PGT. 2012

Ans. (d) आलमकेलि, माधवानलकामकंदला, सुदामा चरित तथा स्याम सनेही आलम की रचना है। 'विरहवारीश' तथा 'इश्कनामा' बोधा की रचनाएँ हैं। ठाकुर ठसक तथा ठाकुर शतक, ठाकुर की काव्य कृतियाँ हैं। गंग पदावली, गंग पच्चीसी तथा गंग रत्नावली (गंगा प्रसाद) की रचनाएँ हैं ये अकबर के दरबारी कवि थे।

338. 'भूलि कहत नव रस सुकवि सकल मूल सिंगार।' यह उक्ति किस आचार्य की है?

(a) देव (b) चिन्तामणि त्रिपाठी
(c) सोमनाथ (d) कुलपति मिश्र

DIET PGT. 2014

Ans. (a) उपर्युक्त दी गयी पंक्ति आचार्य देव की है। देव का मूल नाम देवदत्त था। देव आचार्य और कवि दोनों रूपों में प्रसिद्ध है। देव हितहरिवंश के अनन्य सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- भावविलास, अष्टयाम, देवचरित, रस विलास, प्रेमचन्द्रिका, सुजान विनोद आदि।

339. निम्नलिखित विकल्पों में से रीतिकालीन कवि कौन से हैं?

(a) नन्ददास, सूरदास, परमानन्ददास, छीतस्वामी
(b) बिहारी, मतिराम, घनानन्द, भूषण
(c) मैथिलीशरण, दिनकर, श्रीधर पाठक, सोहनलाल द्विवेदी
(d) जायसी, मंझन, विद्यापति, चन्दवरदाई

KVS. PGT. 2014

Ans. (b) बिहारी, मतिराम, घनानंद, भूषण आदि रीतिकालीन कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं इस प्रकार है-

रीतिकालीन कवि	**रचनाएं**
बिहारी	बिहारी सतसई
मतिराम	रसराज, ललित ललाम
घनानन्द	सुजान सागर, इश्कलता
भूषण	शिवराज भूषण

340. पद्माकर द्वारा रचित अलंकार-ग्रन्थ कौन सा है?

(a) भाषा भूषण (b) रामचन्द्राभरण
(c) काव्यालंकार (d) पद्माभरण

NVS. PGT. 2014

Ans. (d) 'पद्माभरण' पद्माकर द्वारा रचित अलंकार ग्रंथ है। जयपुर नरेश प्रतापसिंह ने पद्माकर को 'कविराज शिरोमणि' की उपाधि दी थी। पद्माकर की प्रमुख रचनाएँ है- हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, प्रबोध पचासा, गंगालहरी, प्रतापसिंह विरुदावली, कलिपच्चीसी, अलीजाह प्रकाश, रामरसायन इत्यादि।

341. मतिराम द्वारा रचित ग्रन्थ है

(a) कृष्णायन (b) जगद्विनोद
(c) ललित ललाम (d) रस चन्द्रिका

Delhi K.V. PGT. 2015

Ans. (c) मतिराम द्वारा रचित ग्रंथ 'ललित ललाम' है। मतिराम द्वारा रचित अन्य ग्रंथ हैं– फूलमंजरी, लक्षणश्रृंगार, साहित्यसार, रसराज, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी। जबकि 'कृष्णायन' के रचनाकार द्वारका प्रसाद मिश्र तथा 'जगद्विनोद' के रचयिता पद्माकर है।

342. इनमें से किसने आदिकाल को 'जय काल' तथा रीतिकाल को 'कला काल' कहा है?

(a) डॉ. ग्रियर्सन
(b) डॉ. रामशंकर शुक्ल रसाल
(c) डॉ. इन्द्रनाथ मदान
(d) आचार्य नंददुलारे वाजपेई

K.V. PGT. 2015

Ans. (b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने आदिकाल को 'जय काल' तथा रीतिकाल को 'कलाकाल' कहा है। जबकि डॉ. ग्रियर्सन ने आदिकाल को 'चारणकाल' तथा रीतिकाल को 'रीतिकाव्य' कहा है।

343. ''पंडित और प्रबीनन कौ जोइ चित्त हरै, सो कवित्त कहावै।'' यह किस कवि का कथन है?

(a) बिहारी (b) घनानन्द
(c) ठाकुर (d) देव

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) ''पण्डित और प्रबीनन कौ जोइ चित्त हरै, सो कवित्त कहावै।।'' उक्त कथन कवि ठाकुर का है। ठाकुर के आश्रयदाता जैतपुर नरेश राजा केशरी सिंह तथा उनके पुत्र राजा परीक्षित थे। ठाकुर की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं– ठाकुर ठसक, ठाकुर शतक।

344. ''लिखन बैठि जाकी, सबी, गहि-गहि गरब गरूर। भर न कते जगत के चतुर चितेरे कूर।'' उपर्युक्त दोहे के सन्दर्भ में बताइए कि निम्नलिखित में से किस कारण से चित्रकार नायिका की छवि (पोट्रेट) को चित्रित करने में सफल नहीं हो पाते थे?

(a) चित्रकारों की आँखें चौंधिया जाती थीं।
(b) चित्र बनाकर जब मिलाया, तब तक रूप नये स्वरूप में बदल गया।
(c) घमंडी होने के कारण चित्रकार सही रूप को देख नहीं पाते थे।
(d) चित्रकार बैठ कर चित्र बनाते थे, जिसके कारण पूरे रूप का अंकन नहीं कर पाते थे।

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (b) ''लिखन बैठि जाकी, सबी, गहि-गहि गरब गरूर।
भर न कते जगत के चतुर चितेरे कूर।।''
उपर्युक्त दोहे के सन्दर्भ ने चित्रकार जब चित्र बनाकर मिलाया, तब तक रूप नये स्वरूप में बदल गया। इसी कारण से चित्रकार नायिका की छवि (पोट्रेट) को चित्रित करने में सफल नहीं हो पाते थे।

345. ''भरि रही भनक बनक ताल तालन की। तनक-तनक तामें खनक चुरीन की।''-यह किस कवि के छन्द की पंक्तियाँ हैं?

(a) रत्नाकर (b) पद्माकर
(c) देव (d) द्विजदेव

UPPSC Degree College Exam. 2008

Ans. (c) "भरि रही भनक बनक ताल तालन की।
तनक-तनक तामें खनक चुरीन की।"

उक्त छन्द की पंक्तियाँ कवि देव की है। महाकवि देव का मूल नाम देवदत्त था। देव आचार्य और कवि दोनों रूपों में प्रसिद्ध है। देव की प्रमुख रचनाएँ है- भावविलास, अष्टयाम, भवानी विलास, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देवचरित, प्रेमचन्द्रिका आदि।

346. निम्नलिखित कवियों को उनके जीवनकालानुसार आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

(a) केशव, सेनापति, देव, पद्माकर
(b) सेनापति, पद्माकर, देव, केशव
(c) देव, केशव, पद्माकर, सेनापति
(d) केशव, देव, सेनापति, पद्माकर

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (a) निम्नलिखित कवियों को उनके जीवनकालानुसार आरोही क्रम में इस प्रकार होगा–

कवि	जीवनकाल
केशव	1555 ई.–1617 ई.
सेनापति	1589 ई.
देव	1673 ई.–1767 ई.
पद्माकर	1753 ई.–1833 ई.

347. निम्नलिखित में से कौन–सा एक कवि लक्षण ग्रंथकार नहीं है?

(a) घनानन्द (b) चिंतामणि
(c) सेनापति (d) मतिराम

Higher Edu. Exam. 2015

Ans. (a) 'घनानन्द' लक्षण ग्रंथकार नहीं है। ये रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। इनका जन्म (1689 ई.) बुलन्द शहर में हुआ था। यह निर्म्बाक सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनके आश्रयदाता मुहम्मद शाह रंगीले थे। इनके द्वारा रचित काव्य कृतियाँ है– (a) सुजान सार (b) इश्कलता (c) विरहलीला (d) वियोग बेलि (5) कोकसार (6) कृपाकंद (7) रसकेलि वल्ली (8) यमुना यश।

निम्नलिखित में से रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि का नाम बताइये–

(a) बिहारी (b) केशव
(c) श्रीपति (d) घनानन्द

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (d) 'रीतिमुक्त' काव्यधारा के कवि 'घनानन्द' है। घनानन्द द्वारा रचित प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं–
(i) सुजान सार (ii) इश्कलता (iii) विरहलीला (iv) वियोगबेलि (v) कोकसार (vi) कृपाकंद (vii) रसकेलिबल्ली (viii) यमुनायश।

349. 'जगद्विनोद' की रचना किस कवि ने की है?

(a) चिन्तामणि (b) तोष
(c) पद्माकर (d) रसलीन

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (c) जगद्विनोद की रचना रीतिकालीन कवि पद्माकर ने की है। पद्माकर द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ है– (a) हिम्मत बहादुर विरुदावली (b) पद्माभरण (c) प्रबोधपचासा (d) गंगालहरी (5) राम रसायन आदि।

350. 'काव्यविवेक' के रचनाकार हैं–

(a) देव (b) मतिराम
(c) चिन्तामणि (d) केशव

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (c) 'काव्य विवेक' के रचनाकार चिन्तामणि है। इनके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ है– (a) रस-विलास (b) छन्द विचार पिंगल (c) शृंगार मंजरी (d) काव्य प्रकाश आदि।

351. 'फागु की भीर अभीरन में गहि गोविन्द लै गयी भीतर गोरी।' इसके रचनाकार हैं–

(a) बिहारी (b) केशव
(c) पद्माकर (d) भिखारी

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (c) 'फागु की भीर अभीरन में गहि गोविन्द लै गयी भीतर गोरी।' उक्त पंक्ति के रचनाकार रीतिकालीन कवि पद्माकर है। पद्माकर ने निम्नलिखित ग्रन्थ की रचना की है– (a) पद्माभरण (b) जगद्विनोद (c) प्रबोधपचासा (d) गंगा लहरी (5) रामरसायन (6) अलीजाहप्रकाश।

352. घनानन्द को 'साक्षात रसमूर्ति' किसने माना है?

(a) लाला भगवानदीन
(b) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

UPPSC Degree College Exam. 2013

Ans. (c) घनानन्द को 'साक्षात रस मूर्ति' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है। घनानन्द रीतिमुक्त धारा के कवि है। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ हैं– सुजान सागर, इश्कलता, कोकसार, रस केलि वल्ली आदि।

353. निम्नलिखित में से कौन सी रचना केशव की नहीं है?

(a) कविप्रिया (b) रसिक प्रिया
(c) रसार्णव (d) छन्दमाला

Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (c) 'रसार्णव' केशव की रचना नहीं है बल्कि यह सुखदेव मिश्र की रचना है। सुखदेव मिश्र की अन्य रचनाएँ हैं- वृत्त विचार, छंद विचार, शृंगारलता, अध्यात्म प्रकाश एवं रस रत्नाकर। शेष कविप्रिया, रसिक प्रिया एवं छंदमाल केशव की रचनाएँ हैं।

354. निम्नलिखित में से पद्माकर की रचना कौन सी है?

(a) प्रेमवाटिका (b) ललित ललाम
(c) कविप्रिया (d) जगद्विनोद

Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (d) रीतिकालीन कवि पद्माकर की रचना 'जगद्विनोद' है। पद्माकर की अन्य रचनाएँ हैं- हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, गंगालहरी, प्रबोधपचासा, कलिपच्चीसी, आदि। प्रेमवाटिका- रसखान, ललित ललाम- मतिराम व कविप्रिया- केशवदास की रचना है।

355. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रन्थ मतिराम का नहीं है?

(a) छन्दसार (b) सुखसागर
(c) रसराज (d) साहित्यसार

Uttarakhand Assi. Pro. 2017

Ans. (b) 'सुखसागर' मतिराम का ग्रंथ नहीं है बल्कि यह सदासुख लाल द्वारा लिखित खड़ीबोली गद्य का प्रारम्भिक ग्रंथ है। मतिराम द्वारा रचित ग्रंथ इस प्रकार है– फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्यसार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी आदि है।

356. डॉ. पीतांबरदत्त बड़थ्वाल के अनुसार 'रामचंद्रिका' है:
(a) असाधारण महाकाव्य
(b) फुटकर कविताओं का संग्रह
(c) छंदों का अजायबघर
(d) अलंकार मंजूषा
UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017

Ans. (b) डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के अनुसार 'रामचन्द्रिका' फुटकर कविताओं का संकलन है। जबकि डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने रामचन्द्रिका को 'छन्दों का अजायबघर' कहा है।

357. रीतिमुक्त कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है:
(a) स्वानुभूति और स्वच्छंदता (b) अलंकृति
(c) विरोधवैचित्र्य (d) विनरहातिरेक
UGC NET III[rd] Paper Nov. 2017
UGC NET III[rd] Paper June 2015

Ans. (a) रीतिमुक्त कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है– स्वानुभूति और स्वच्छंदता। रीतिमुक्त कविताओं की अन्य प्रवृत्तियां निम्न हैं– अनुभूति पक्ष प्रधान, स्थूल एवं मांसल सौन्दर्य की उपेक्षा, शास्त्र परम्परा की उपेक्षा, सहज सरल ब्रजभाषा का प्रयोग। रीतिमुक्त काव्य धारा के प्रमुख कवि हैं–घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर।

358. ''हय रथ पालकी गयंद गृह ग्राम चारू
आखर लगाय लेत लाखन के सामा हौं।''
यह उक्ति किस कवि की है?
(a) मतिराम (b) देव
(c) कुलपति मिश्र (d) पद्माकर
UGC NET II[nd] Paper Nov. 2017

Ans. (d) हय रथ .... सामा हौं।
यह उक्ति पद्माकर की है।

उक्ति		कवि
हय रथ पालकी गयंद गृह ग्राम चारू आखर लगाय लेत लाखन के सामा हौं।	–	पद्माकर
कुंदन को रंग फीकौ लगै झलकै सब अगन चारू गुराई	–	मतिराम
बड़े-बड़े नैनन सों आँसू-भरि भरि ढरि।	–	देव
एसिन कुंज बनी छबिपुंज, रहै अलि गुंजत यों सुख लीजै।	–	कुलपति मिश्र

359. निम्नलिखित में से रीतिमुक्त काव्य की विशेषताओं के संदर्भ में कौन-सा वाक्य गलत है?
(a) रीतिमुक्त काव्य व्यक्ति प्रधान है।
(b) रीतिमुक्त कवियों की प्रेम संबंधी धारणा रीतिबद्ध कवियों से भिन्न है।
(c) रीतिमुक्त काव्य पर फारसी का प्रभाव नहीं हैं
(d) रीतिमुक्त कवियों का प्रेम वर्णन व्यथा प्रधान है।
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (c) दी गयी विशेषताओं के संदर्भ में गलत वाक्य है- 'रीतिमुक्त काव्य पर फारसी का प्रभाव नहीं है।' अन्य वाक्य रीतिमुक्त की विशेषताओं के संदर्भ में सही है।

360. मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक स्वरूप को समृद्ध करने में किसकी भूमिका नहीं रही?
(a) भूषण (b) घनानंद
(c) बिहारी (d) नूर मोहम्मद
Jharkhand PGT Hindi, 2018

Ans : (d) – नूर मुहम्मद अवधी भाषा के कवि हैं इनकी प्रमुख कृति 'इन्द्रावती' और 'अनुराग बाँसुरी' अवधी भाषा में है। अतः मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक स्वरूप को समृद्ध करने में इनकी भूमिका नहीं है।

361. ऐतिहासिक दृष्टि से निम्नलिखित रीतिकालीन कवियों का सही अनुक्रम क्या है?
(a) मतिराम, बिहारी, पद्माकर, घनानन्द
(b) बिहारी, घनानन्द, पद्माकर, मतिराम
(c) बिहारी, मतिराम, घनानन्द, पद्माकर
(d) घनानन्द, मतिराम, बिहारी, पद्माकर
KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (c) : ऐतिहासिक दृष्टि से कवियों का सही क्रम निम्न हैं-

कवि		समय-सीमा
बिहारी	-	1595 ई.-1663 ई.
मतिराम	-	1617 ई.-1701 ई.
घनानन्द	-	1689 ई.-1739 ई.
पद्माकर	-	1753 ई.-1833 ई.

362. ''रीतिकाल के सर्वांग निरूपक कवि वे हैं जिन्होंने काव्य के समस्त अंगों का विवेचन अपने ग्रंथों में किया है।'' अतः निम्नलिखित में से रीतिकाल का कौन-सा ऐसा कवि नहीं है जिसकी गणना सर्वांग निरूपक कवियों में की जाती है?
(a) कुलपति मिश्र (b) देव
(c) मतिराम (d) चिन्तामणि
KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (c) : मतिराम ऐसे कवि हैं जिनकी गणना सर्वांग-निरूपक में नहीं की जाती है जबकि कुलपति मिश्र, देव, तथा चिन्तामणि सर्वांग निरूपण के कवि हैं।

363. जिन दिन देखे वै कुसुम गई सो बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में अपत कँटीली डार।
यह प्रसिद्ध दोहा किस कवि का है?
(a) रसलीन (b) ग्वाल कवि
(c) बिहारी (d) भिखारीदास
KVS PGT Hindi, 2016

Ans. (c) : जिस दिन देखे वै कुसुम गई सो बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में अपत कँटीली डार।।
यह प्रसिद्ध दोहा बिहारी का है। बिहारी की एक मात्र रचना दोहा छन्द में 'बिहारी सतसई' है।

364. 'कविता उनकी शृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे ही रह जाती है।' बिहारी की कविता के सन्दर्भ में यह कथन किस आलोचक का है?
(a) रामविलास शर्मा (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) नामवर सिंह
KVS PGT Hindi, 2017

Ans. (c) : कविवर बिहारी की कविता के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि- ''कविता उनकी शृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे ही रह जाती है।'' शेष अन्य आलोचक असंगत हैं।

365. **इनमें से कौन-सी रचना चिन्तामणि की नहीं है?**
(a) साहित्य दर्पण (b) काव्य विवेक
(c) कवि कुल कल्पतरु (d) काव्य प्रकाश
KVS PGT Hindi, 2017

Ans. (a) : 'साहित्य दर्पण' चिन्तामणि की रचना नहीं है बल्कि आचार्य विश्वनाथ की है। जबकि काव्य विवेक, कवि कुल कल्पतरु तथा काव्य प्रकाश चिन्तामणि त्रिपाठी की रचना है।

366. **केशवदास की रचना इनमें से कौन-सी है?**
(a) माधवानल कामकंदला (b) भूषण विचार
(c) मदनाष्टक (d) जहांगीर जस चंद्रिका
KVS PGT Hindi, 2017

Ans. (d) :

रचना	रचनाकार
जहाँगीर जस चंद्रिका	- केशवदास
माधवानल कामकन्दला	- आलम
मदनाष्टक	- रहीम

367. **"प्रेम की पीर" ही को लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। आलोचक रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन रीतिकाल के किस कवि के सन्दर्भ में है?**
(a) घनानन्द (b) मतिराम
(c) केशवदास (d) रसनिधि
KVS PGT Hindi, 2017

Ans. (a) : रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि घनानन्द के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है-
"प्रेम की पीर ही को लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ।"

368. **राजनीतिक रूप से रीतिकाल मुगलों के शासन के वैभव के:**
(a) चरमोत्कर्ष का युग है
(b) उत्थान का युग है
(c) विस्तार का युग है
(d) चरमोत्कर्ष के बाद उत्तरोत्तर ह्रास और पतन का युग है

Ans : (d) राजनीतिक रूप से रीतिकाल मुगलों के शासन के वैभव के चरमोत्कर्ष के बाद उत्तरोत्तर ह्रास और पतन का युग है। मुगलों के शासनकाल का प्रारम्भ बाबर द्वारा 1526 ई. में हुआ अन्तिम सशक्त शासक औरंगजेब (1658 ई. - 1707 ई.) था। इसी समय में रीतिकाल (सं. 1700 - 1900 वि.) 1643 ई. से 1843 ई. तक माना गया है। अतः समय और राजनीतिक रूप दोनों आधारों पर रीतिकाल मुगलों के उत्तरोत्तर ह्रास और पतन का युग है।

369. **कवि ठाकुर ने किस राजा के कटु वचन कहने पर म्यान से तलवार निकाल ली और कहा:**
सेवक सिपाही हम उन राजपूतन के,
दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरके।
नीत देनवारे हैं मही के महीपालन को,
हिए के विरुद्ध हैं, सनेही साचे उर के।
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के,
जालिम दमाद हैं अदानियाँ ससुर के।
चोजिन के चोजी महा, मौजिन के महाराज
हम कविराज हैं, पै चाकर चतुर के।
(a) अनूप गिरि उर्फ हिम्मत बहादुर
(b) जगत सिंह
(c) राजा पारीक्षित
(d) महाराज उदितनारायण सिंह

Ans : (a) कवि ठाकुर ने राजा 'अनूप गिरि उर्फ हिम्मत बहादुर' के कटु वचन कहने पर म्यान से तलवार निकाल लिये और कहे- "सेवक सिपाही हम उन राजपूतन के दान जुद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरके।
जबकि अन्य नाम जगत सिंह, राजा पारीक्षित तथा महाराज उदितनारायण सिंह असंगत हैं।

370. **किंसुक-पुंज से फूलि रहे सु लगी उर दी जु वियोग तिहारे।**
मातो फिरै, न घिरै अबलानि पै, जान मनोज यों डारत मारे।
ह्वै अभिलाषनि पात निपात कढ़े हिय-सूल उसांसनि डारे।
है पतझार बसंत दुहूँ घनआनंद एकहि बार हमारे।।
इन पंक्तियों में भावाभिव्यंजना के कौन-कौन रूप व्यक्त हुए हैं?
(a) उक्ति वैचित्र्य (b) उक्ति चमत्कार
(c) उक्ति विपर्यय (d) उक्ति सदृश्यता
कोड:
(a) (a), (b) और (d) सही (b) (a), (b) और (c) सही
(c) (b), (c) और (d) सही (d) (c) और (d) सही

Ans : (b) रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्य धारा के प्रमुख कवि 'घनानन्द' की प्रस्तुत उपर्युक्त पंक्तियों में उक्ति वैचित्र्य, उक्ति चमत्कार तथा उक्ति विपर्यय की भावाभिव्यंजना व्यक्त हुई है। जबकि उक्ति सादृश्यता की भावाभिव्यंजना नहीं हुई है।

371. **जन्मकाल के आधार पर निम्नलिखित रीतिग्रंथकारों का सही अनुक्रम है:**
(a) सूरति मिश्र, देव, भूषण, जसवंत सिंह
(b) भूषण, जसवंत सिंह, देव, सूरति मिश्र
(c) भूषण, देव, सूरति मिश्र, जसवंत सिंह
(d) देव, सूरति मिश्र, भूषण, जसवंत सिंह

Ans : (b) जन्मकाल के आधार पर रीतिग्रंथकारों का सही अनुक्रम-

रीतिग्रंथकार	जन्मकाल
भूषण	1613 ई.
जसवन्त सिंह	1626 ई.
देव	1673 ई.
सूरति मिश्र	1709 ई.

372. **निम्नलिखित रचनाओं को उनके प्रतिपाद्य के आधार पर सुमेलित कीजिए :**

सूची-I	सूची-II
(A) शिवराज भूषण	(i) सर्वांग निरूपण
(B) छत्र प्रकाश	(ii) रीतिस्वच्छंदवृत्ति
(C) बिरहवारीश	(iii) जीवन चरित
(D) काव्य निर्णय	(iv) अलंकार निरूपण
	(v) रस निरूपण

कोड :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(v)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(ii)	(iii)	(v)	(iv)

Ans : (b)

कृति	विषयवस्तु	कृतिकार
शिवराज भूषण	अलंकार निरूपण	भूषण
छत्रप्रकाश	जीवन चरित	लालकवि
विरह वारीश	रीति स्वच्छन्द वृत्ति	बोधा
काव्य निर्णय	सर्वांग निरूपण	भिखारीदास

373. निम्नलिखित रस प्रतिपादक कृतियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) रस सागर	(i) मतिराम
(B) रस चंद्रोदय	(ii) कवीन्द्र
(C) रसराज	(iii) सोमनाथ
(D) रसपीयूष निधि	(iv) भिखारीदास
	(v) श्रीपति

कोड:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(v)	(iv)
(c)	(v)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (c)

कृति	कृतिकार
रस सागर	श्रीपति
रस चंद्रोदय	कवीन्द्र
रसराज	मतिराम
रसपीयूष निधि	सोमनाथ

374. द्विजदेव किस परम्परा के कवि हैं ?

(a) रीतिबद्ध (b) रीतिमुक्त
(c) रीतिसिद्ध (d) भक्ति परम्परा

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (b) : द्विजदेव रीतिमुक्त परम्परा के कवि हैं। इस रीतिमुक्त काव्य धारा में घनानन्द, बोधा तथा आलम का नाम आता है। जबकि रीतिसिद्ध में बिहारी और रीतिबद्ध में चिन्तामणि, केशव, मतिराम देव आदि आते हैं।

375. 'रसिकप्रिया' किसकी रचना है?

(a) पद्माकर (b) देव
(c) केशवदास (d) भूषण

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : 'रसिक प्रिया' केशवदास की रचना है। यह रस निरूपण ग्रंथ है। केशव की अन्य रचनाएं (1) कविप्रिया (2) रामचन्द्रिका (3) रतनबावनी आदि जब कि 'प्रबोध पचासा' पद्माकर की तथा 'भवानी विलास' कवि देव की एवं 'शिवा बावनी' कवि भूषण की रचना है।

376. कौन-सी काव्य कृति घनानंद की नहीं है?

(a) विरह लीला (b) शृंगार शिक्षा
(c) सुजान सागर (d) 'रसकेलिवल्ली

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (b) : 'शृंगार शिक्षा' घनानन्द की काव्य कृति नहीं है जबकि विरहलीला, सुजानसागर, रसकेलिवल्ली घनानन्द की रचनाएं हैं।

377. सुजानहित, कृपाकन्द, वियोग बेलि किस कवि की रचनांए हैं?

(a) भूषण (b) भिखारीदास
(c) घनानन्द (d) आलम

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : 'सुजान हित, कृपाकन्द, तथा वियोग बेली' काव्य कृतियों के रचनाकार रीतिमुक्त कवि घनानन्द हैं।

378. राजा जयसिंह के दरबारी कवि कौन थे?

(a) भूषण (b) बिहारी
(c) मतिराम (d) सेनापति

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (b) : राजा जय सिंह कि दरबारी कवि बिहारी थे। शेष कवि भूषण, मतिराम तथा सेनापति अन्य राजाओं के दरबारी कवि थे।

379. ग्वाल कवि किस काल के कवि हैं?

(a) आदिकाल (b) भक्तिकाल
(c) रीतिकाल (d) आधुनिक काल

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : ग्वाल कवि रीतिकाल के कवि हैं। जिनकी प्रसिद्ध रचना रसरंग है। अन्य रचनाएं हैं- (1) यमुना लहरी (2) भक्त भावन (3) रसिकानन्द (4) कवि दर्पण (5) रस रूप (6) दृगशतक आदि।

380. आलम, घनानन्द, बोधा, ठाकुर किस काव्य धारा के कवि हैं?

(a) रीतिबद्ध (b) रीतिसिद्ध
(c) रीतिमुक्त (d) रीतिप्रिय

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (c) : आलम, बोधा, घनानन्द, ठाकुर रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। इसी काव्य धारा में द्विजदेव भी आते हैं। ध्यातव्य है कि रीतिकाल के तीन भाग - 1. रीतिबद्ध, 2. रीतिमुक्त 3. रीतिसिद्ध माने जाते हैं। जिनमें रीतिबद्ध प्रमुख कवि हैं- चिन्तामणि, मतिराम, देव, केशवदास, कुलपति, मिश्र आदि। रीतिसिद्ध प्रमुख कवि हैं- बिहारी, सेनापति, वृन्द इत्यादि।

381. ''ऐसो जो मैं जानतो कि जै हैं तू विषय के संग। ऐ रे मन मोरे, हाथ-पाँय तेरे तोरतो।'' किसका कथन है?

(a) देव (b) भूषण
(c) मतिराम (d) चिन्तामणि

MP Asst. Prof. Hindi, 2017

Ans. (a) : कवि देव का कथन है-
ऐसो जो मैं जानतो कि जै हैं तू विषय के संग।
ऐ रे मन मोरे, हाथ-पाँय तेरे तोरतो।।